शंकर

अनुवादक
हसकुमार तिवारी

राजकमल प्रकाशन

प्रथम संस्करण, १९६५

प्रकाशक
राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड
दिल्ली ६

मूल्य : ६.००

मुद्रक
नवीन प्रेस दिल्ली ६

उत्सर्ग

मेरे अग्रज
श्री शिवशंकर मुखोपाध्याय के
करकमलो म

So might we talk of the old familiar faces
How some they have died and some they have left me
And some are taken from me all are departed;
All all are gone the old familiar faces

—Charles Lamb

बचपन म जिन्होने मेरा अक्षरारम्भ कराया था उन्ही की बात याद आ रही है। देवी सरस्वती के दफ्तर म अगर पुरानी लेखा-बहियो को ठीक ठीक बचाये रखने का इन्तजाम हो, तो वहाँ के लेजर म आज भी मेरे नाम के सामने यह जरूर लिखा होगा—इन्ट्रोड्यूस्ड बाई योगेन्द्रनाथ मन्ना।

बूढे आदमी थे अपनी तबीयत से हमेशा पान चबाते रहते थे। उम्र के लिहाज से बदन की चमड़ी मे तनाव नही रह गया था लेकिन उनके शरीर के रंग से समता बनाये रखने के लिए ही जैसे सिर के बाल आज भी काले थे। घर के बाकी लोग उन्हे मुन्शीजी कहते थे मेरे पिताजी (वे वकील थे) कहते थे आगेन। वे रहते हमारे ही घर थे, और लाल कपड़े की जिल्दवाली बही म हर दम जाने क्या-क्या लिखते रहते। उनके मोती जैसे हरूफ देखकर मैं सोचता रहता था—ऐसे हरूफ मैं कब लिख सकूँगा?

और सबकी तरह पहले मैं भी उन्हें 'मुंशीजी' ही कहा करता था। बाद मे एक दिन माँ ने कहा "अब से इनको 'मास्टरजी' कहना, और प्रणाम किया करना।"

मास्टरजी घबराकर उठ खड़े हुए "यह हरगिज नहीं हो सकता। ब्राह्मण का लड़का मेरे पाँव क्यो छुएगा?"

माँ ने कहा, "क्यों नहीं छुएगा? आप इसका अक्षरारम्भ करा रहे

है ! उसके गुरुदेव हुए । पुराना जमाना होता तो इसे आपके घर जाकर आपकी सेवा करके विद्या सीखनी पड़ती ।

मसीबत म पड़कर मास्टरजी ने कहा था आप क्या कह रही हैं ऐसा कहीं होता है !

इसके बाद माँ और मास्टरजी न फिर यह प्रसग नहीं उठाया । मुझ लेकिन यह प्रस्ताव बेजा नहीं लगा । महीने म एक शनिवार को मास्टरजी अपने घर जाया करते थे—बाली उत्तरपाड़ा के पास रघुनाथपुर या जाने कहाँ ! सोमवार को जब लौटकर आते तो साथ की थली म भरा होता था कद्दू का साग भतुआ पपीता और लगभग हर बार एक कथा जरूर होता । इस कथा फल मे सरदी-बुखार का तो क्या सम्बन्ध है सो ईश्वर ही जानें लेकिन घर के लोगो के डर से मास्टरजी को मेरे लिए कथा छिपाकर लाना पड़ता । अपने मन की आँखो से मैं प्राय रघुनाथपुर में एक निषिद्ध वृक्ष म लटकते हुए सबसे लुभाने फल देखा करता । सो बेखटके खुशी खुशी मैंने गुरुगृह म रहने का प्रस्ताव पेश किया ।

मास्टरजी बोले यह कसे हो सकता है ? या एक बार घूम आना मेरे साथ बशर्ते पिताजी नाराज न हो ।

इसके बाद ही अ-आ क-ख शुरू हो गया था और लगभग उसके साथ ही पहाड़े की पढाई । इस पढ़ाई के साथ ही मेरे दु सहम जीवन के पहले परिच्छेद की सूचना मुझ मिली । पहाड़े के अंको से मेरे जीवन व्यापी शत्रुत्व की शुरुआत जरा अप्रत्याशित ढग से हुई थी । अभी इतना ही बताऊँगा हमारे मौजूदा लखा जोखा क लिए अभी इतने ही की जरूरत है ।

मास्टरजी ने मुझे उँगली पर गिनना सिखाया था । पूछते चार म चार जोड़न से कितना होता है ? कहो तो ?

गणित म मेरी दीदी उस समय मुझस बहुत आगे थी । उसने कहा 'हाय राम तू अभी जोड़ ही सीख रहा है ? मेरा तो जोड़ घटाव गुणा

भाग चारा सत्म हो चुका।

मेरे न्माग म शायद उसी वक्त कोई गोलमाल शुरू हो गया था। जोडना बन्द करके मैं चुपचाप बठ गया। मास्टरजी बडे भले आदमी थ मारपीट नही करते। बोल हिसाब छोडकर खेलने की बात सोचन लगे हो ? क्या बात है ?

मैंने कहा जी नही। मैं यह जानना चाहता हूँ कि पहल जोड ही क्या होता है घटाव गुणा या भाग क्यो नही करते ?

आज सोचता हूँ मास्टरजी साधारण बुद्धि के आदमी नही थे। उन्होने कहा था गुणा भाग असल म और कुछ नही जोड घटाव का ही एक बडा प्रकार है। असल जो है वह है जोड और घटाव। रसोइ म जस सब कुछ या तो भुना हुआ होता है, या उबला हुआ वैसे गणित शास्त्र वसे ही सिफ जोड और घटाव है।

मैं 'नाम' जरा समय स पहल पका हुआ था। मास्टरजी को भला पाकर जस सवार हो गया कधे पर। पूछा पहल जोड या पहले घटाव ?

मास्टरजी बेचारे फजीहत म पड गए थ। बोले शरारत छोडकर पहले यह हिसाब बना लो जो बनाने को कहा है।

जब उन्होने देखा कि मुझम हुक्म मानने का कोई लक्षण नही दिखाइ द रहा है तो बोल, 'ऐसा करोगे तो मैं पिताजी से कह दूगा।

पिताजी स कह दन का नतीजा मेरे लिए कुछ अच्छा न होगा यह जानता था। लकिन मास्टरजी को भी डराने का तरीका मुझे मालूम था। सोचते हुए आज भी शम आती है कि अपने शिक्षा गुरु को मैंने बिलकुल साफ शब्दो म कह दिया था कि आपने कही पिताजी से कहा तो दाँव देखकर आपके बहीखाते मे दवात उलट देने स मैं बाज नही आऊँगा। मास्टरजी की लापरवाही स एक बार वहा पर दवात उलट गई थी उसक चलते पिताजी न उनकी क्या गत बनाई थी मुझे मालूम था। और स्याहीपुते उन आँकडो क पुनरुद्धार के लिए उन्ह कसा अमानुषिक श्रम तथा कष्ट उठाना पडा था यह भी अपनी आँखो देखा था।

इस धमकी का नतीजा निकला था। निरुपाय होकर उन्होंने मुझे समझाने की कोशिश की थी कि जोड़ और घटाव गुणा और भाग पर ही गणित की दुनिया है। पता नहीं क्यों पहले जोड़ सिखाया जाता है फिर घटाव।

मैंने कहा यह फुसलाने से काम नहीं चलेगा। जोड़ बड़ा है या घटाव यह बताना ही पड़ेगा।

मास्टरजी खीझकर बोले क्या पता! हमारे पुरखा ने पहले जोड़ का आविष्कार किया था या घटाव का नहीं बता सकता। लेकिन हाँ काम लोगों के दोनों ही आते हैं नहीं तो जमा-खर्च नहीं होता।

इसके बाद मौके-बेमौके मास्टरजी को कितना तंग किया नहीं कह सकता। जब भी सवाल हल करने का मन न हुआ जब भी फाँकी देने की इच्छा हुई तभी उस पुराने मसले को उठाकर उन्हें परेशान कर दिया। आज भी यह सोचकर हैरानी होती है कि वे बेचारे बूढ़े किस असीम धीरज से मुझे शान्त करने की कोशिश किया करते थे मुझे समझाने के लिए कितनी सहज मामूली उपमा ढूँढ़ निकाला करते थे। कहते *मो समझो अभी उस दिन तुमको एक भाई हुआ है। यह हुआ जोड़।* और अपने आड़न मोदी की माँ मर गई यह हुआ घटाव।

मगर मैं एक भी सुनने को तयार नहीं। नतीजा यह हुआ कि कुछ न हुआ। मैं बस यही कहता रहा कि यह बताइए, इन दोनों में बड़ा कौन है? *सो मास्टरजी के दिल से चाहने के बावजूद मैं हिसाब में कच्चा* रह गया। मेरे हमउम्र लड़के जब इत्ते बड़े बड़े गुणा भाग यहाँ तक कि ल स व और म स व करने लगे मैं उसी जोड़ घटाव में ही गोते खाता रहा। गुरु को सताने का मूल्य मुझे बाद में भी काफी चुकाना पड़ा। शुरू *की इस भूल को कभी सम्हाल नहीं पाया। मेरे पूरे छात्र-जीवन पर* इस हिसाब ने जीती-जागती विभीषिका होकर अपनी अशुभ काली छाया फैला रखी थी।

आज भी इतने दिनों के बाद बचपन की वे बातें कौंध जाती हैं।

लगता है जोड़ घटाव का यह हंगामा न रहा होता तो यह दुनिया कैसी असीम शान्ति का बसेरा होती। मानव-सभ्यता के उस आदि युग में अपने पुरखे इस जोड़ के झमेले में क्या पड़ने गए नहीं जानता। हाँ, यह जोड़ है, तभी घटाव आया है। मास्टरजी ने बताया था जन्म है इसलिए मृत्यु है। जोड़न की माँ पैदा नहीं हुई होती, तो उसे मरना नहीं पड़ता। और फिर जोड़न का भी नंगे बदन नंगे पाँव गले में उतरी लपेटे यों घूमते फिरना नहीं पड़ता। अपनी कच्ची बुद्धि से उस समय मैंने सोचा जोड़न की माँ यदि पैदा नहीं हुई होती तो बेचारे जोड़न को इतनी तकलीफ नहीं उठानी पड़ती।

उस समय क्या पता था कि इस जोड़ घटाव में जोड़न का अस्तित्व भी निहित या जुड़ा है। और भी याद आता है जब जरा बड़ा हुआ तो मास्टरजी कहते बैठ रहने से काम नहीं चलेगा। हिसाब करते ही जाना होगा—या तो जोड़ या घटाव गुणा या भाग कोई-न-कोई करना ही पड़ेगा।

आज समझता हूँ दुनिया में भी यही है। हिसाब का रोक रखने का कोई उपाय नहीं। या तो जोड़ या घटाव गुणा या भाग—करते ही जाना पड़ेगा। जो भाग्यवान हैं दुनिया में वे जोड़ते हैं अभागे घटाते हैं। जो बहुत ही सौभाग्यशाली हैं उनके लिए है गुणा और भाग्यहीनों के लिए सिर्फ भाग।

बहुत सी पुरानी बातें याद आती हैं। अपनी लेखा-बही में किसी विराट मास्टरजी के इशारे पर कभी केवल जोड़ा ही जाता है और कभी केवल घटाव पर घटाव। गुणा भी है और भाग भी। इस जोड़ घटाव, गुणा भाग के अन्त में जिन्दगी के हिसाब का फल क्या निकलेगा कौन जाने! शायद हो कि शून्य निकले लेकिन नतीजा जानकर तो हिसाब करने के लिए बैठा नहीं हूँ।

तो शुरू करूँ। इसका कौन सा जोड़ है कौन-सा घटाव बहुत बार यह भी नहीं समझ पाता। किन्तु यह दोष हिसाब का नहीं हिसाब में

समझने वाली अपनी अक्ल ही इसकी जिम्मेदार है।

जोड़ घटाव गुणा भाग सब गड़बड़ होकर एकाकार हो जाता है। छाना दा की तसवीर जैसे ही मन म तर आती है बस ही हिसाब मा जटिल थक और उलझ जाता है—जोड़ की जगह भाग और भाग का जगह गुणा कर बैठता हूँ। अतीत सुदूर अतीत और इस वर्तमान को काल के क्रम से सजाकर रख भी सकूँगा ऐसा नही लगता।

लेकिन हिसाब म उलझन होने स तो नही चलने का। छाना-दा क बारे म मुझे लिखना ही होगा। जानता हूँ इसके बाद स मनुष्य की दुनिया म मुझ सम्मान का आसन नही मिलगा। लेकिन जतन स सजोए अपने सुनाम को ज्यादा मूल्य की आशा म सन्देहजनक बक म जो रखा है उसे तो फेल होना ही है।

लेकिन शुरू स ही कहूँ। मास्टरजी क हाथ से छुटकारा पाकर एक दिन हावड़ा जिला स्कूल म दाखिल हुआ था। वहाँ कई साल बिताकर जिस स्कूल में मुझ अनिवार्य कारण से ट्रासफर लेना पड़ा उसका नाम है विवेकानन्द इन्स्टीटयूशन। हावड़ा की नेताजी सुभाष सड़क पर इस स्कूल की पुराने ढंग की तिमजिली इमारत को आपम स किसी किसी न देखा होगा।

यहाँ हम सबसे कुछ साल के सीनियर थे, लक्ष्मीकान्त मण्डल। उन्हे हम सभी छानो-दा कहकर पुकारते थे। उनको स्कूल म दूर से देखता और सोचा करता—काश मैं किसी तरह छाना-दा जसा हो पाता! छानो-दा उस समय हीरा हो रहे थे। इसलिए कि स्पोर्ट्स म कोई सानी न था उनका। ऊँची कुदान म भी अव्वल। चार सौ चालीस गज और दो-सौ बीस गज की दौड़ म भी उनसे पहला पुरस्कार कोई नहीं ले जा सकता था। चार मील चलने की होड़ म भी उस बार जिले म अव्वल आए और चान्दी का चलेन्ज कप जीता—इतना बड़ा कप कि अकेले ला नही पा रहे थ ढोकर। खेल-कूद किस देवता के अधीन है, मालूम नही।

छानो-दा पर उनके प्रसन्न होने से ईर्ष्यालु देवी सरस्वती विरूप हो बैठी। विवेकानन्द स्कूल के दर्जा सात के स्टेशन पर छानो-दा की विद्या का इंजन जो रुका सो फिर नहीं हिला।

लगातार तीन साल तक फेल। अन्तिम बार इम्तहान के समय छानो-दा कमर में कागज छिपाकर ले आए थे। अपने हेडमास्टर साहब की आँख को रडार यन्त्र ही कह लीजिए। जैसे ही उस कागज से छानो-दा लिखने गए हेडमास्टर साहब के ही द्वारा रंगे हाथों पकड़ लिये गए। पहले इम्तहान के हॉल से फिर समय पर स्कूल से ही विदा होना पड़ा उन्हें।

उसके बाद वही हुआ जो होता है। छानो-दा बरबाद हो गए। मोंडारबगान में चाय की एक गन्दी दूकान पर बैठ बीड़ी पीते रहते। वहीं भद्दी गालियाँ भी चलतीं।

यह भी सुना कि उसी उम्र में छानो-दा ने गाँजा भी शुरू कर दिया था। स्कूल जाते समय कभी-कभी चाय की दूकान पर उनसे मेरी मुलाकात हो जाया करती थी। मुझे बुलाया भी "ऐ सुन।"

हम अच्छे लड़के थे। बीड़ी पीने वाले वैसे लड़के से बात करने में शर्म से सिर झुकता था। छानो-दा बेशक बड़ी भलमनसाहत से बात करते "अपने शिक्षक लोग सब मजे में हैं न? चार मील वाली होड़ में इस बार कौन अव्वल आया?" छानो-दा जानते थे कि मैं अच्छा लड़का हूँ। इसीलिए गाली गलौज नहीं करते। फिर भी मुझे डर बना रहता कोई देख न ले कहीं? सोचेगा मैं बुरा हो गया हूँ, या जहन्नुम जाने की राह पर कदम बढ़ाया है।

इसके बाद से छानो-दा मुझे ज्यादा नहीं बुलाया करते। शायद उन्होंने मेरे मन की स्थिति को भाँप लिया हो। लेकिन एक दिन अचानक उन्होंने मुझे बुला लिया। एक गन्दा हाफपैंट पहने वे बीड़ी पी रहे थे। मुझे देखते ही बोले 'ऐ सुन।'

उस बार स्कूल की पत्रिका में मेरी एक रचना छपी थी। वे कुछ देर तक मेरी तरफ अचरज से ताकते रह गए। फिर बोले "अच्छा तू

कहानी लिखता है ?

मैंने गम्भीर होकर गरदन हिलाई। छानो-दा के अचरज की खुमार तब भी नहीं कटी। पूछा 'कहानी लिखता कैसे है ?'

जरा थाककर जवाब दिया 'बनाकर।'

छानो दा और भी हैरान हो गए दिमाग में शायद कहानी आ जाती है ? अच्छा रवि बाबू भी तो इसी तरह से लिखा करते थे ? छानो-दा ने जानना चाहा।

मैंने विज्ञ की नाई हलका हँसकर हामी भरी और ऐसा एक भाव दिखाया कि छानो-दा को समझने में तकलीफ न हुई कि मैं और रवीन्द्र नाथ दोनों ही लेखक हैं और हम दोनों दिमाग लगाकर लिखते हैं। और इसीलिए शायद छानो-दा उसी समय से मेरे बारे में बहुत अच्छी धारणा कर बैठे थे। भेंट होते ही बात करना चाहते। और कभी खुद ही होशियार कर देते हम लोगों से मत मिला-जुला कर—हम लोगों का रेकर्ड खराब है। दिन रात लिखा पढ़ा करना और दिमाग लगाकर लिखते जाना।

इसी प्रकार और भी बहुत दिन चलते। लेकिन छानो-दा कहीं गायब हो गए थे और मैंने भी खास खोज-पूछ नहीं की बल्कि उनसे छुटकारा मिल गया इससे चैन की साँस सी ली थी। इस बीच पत्रिका में मेरी और भी रचनाएं निकलीं अच्छे लड़के के नाते मेरा नाम और बढ़ा और इसी सौभाग्य के ज्वार में अवांछित छानो-दा और भी दूर हट गए।

लेकिन बहुत दिनों बाद छानो-दा की फिर मुझे जरूरत हुई। पिताजी अचानक चल बसे। मुफस्सिल की अदालत के वकील रोज रोज की अन्न-वस्त्र की लड़ाई में ही जुटे रहते अनागत भविष्य के लिए जोड़ने का अवसर नहीं पाया। मेरे लिए बड़ा दुर्दिन आया। पैसों की कमी से पढ़ना छोड़कर नौकरी के चक्कर में घूमने लगा।

मगर कहाँ नौकरी ? सुना था, पैसे हों तो कलकत्ते में बाघ का दूध

तब मिल सकता है। इसलिए पिताजी की दी हुई सोने की अँगूठी और बटन बेचकर कुछ रुपए जुटा रखे थे। मेरे एक नजदीकी रिश्तेदार ने सौ रुपये सलामी देकर एक सरकारी दफ्तर में लोअर डिवीजन के किरानी की जगह हासिल की थी। मेरे लिए ध्रुवतारा सरीखे उन सज्जन ने कहा था रुपए मौजूद रखना पता नहीं कब सुयोग आ जाए तो रुपया न रहने से जनम भर अफसोस से मरते रहोगे। रुपए तो मेरे पास थे लेकिन नौकरी कहाँ ?

अन्त में टाइप सीखना शुरू किया। जितनी जल्दी सीख सकूँ यही चेष्टा। लेकिन वहाँ भी बाधा। टाइप स्कूल का मालिक भवतारण बाबू नंगे बदन हाथ में घड़ी लिये शिकारी कुत्ते-जैसा मशीन के पहरे में मुस्तैद। सिखाने का रत्ती भर आग्रह नहीं सिर्फ इसी पर नजर कि कोई आध घंटे से ज्यादा तो नहीं टाइप कर रहा है। आध घण्टा भी धीरज धरकर नहीं बैठ सकते। पच्चीस मिनट होते ही चिल्ला उठते रेमिंगटन तीन नम्बर फाइव मिनिट्स मोर। कहीं कोई ज्यादा सीख ले इसीलिए ऐसी कड़ी निगाह।

कोई-कोई छात्र नाछोड़बन्दा था। उसे जब तक जबर्दस्ती हटा नहीं दीजिए टाइप करता जाता। भवतारण बाबू कहते यह लगन मैट्रिक के समय दिखाई होती ! स्कालरशिप लेकर आई० सी० एस० बी० सी० एस० हो सकते इस बकस बजाने वाली लाइन में आने की नौबत नहीं आती।

कुछ लोगों को मैंने इसी बीच कह रखा था टाइपिस्ट की कोई जगह कहीं हो तो खयाल रखेंगे जरा। चालीस की स्पीड हो गई है।

मेरी स्पीड की सुनकर कोई-कोई अचकचा उठे, अरे भाई अब वह रामराज्य नहीं रहा। चालीस की स्पीड में अब हब्बा मेमसाहब के सिवा किसी को नौकरी नहीं मिलती। मेरे दफ्तर की आया का छोकरा तो हँसते हँसते पचहत्तर की स्पीड में टाइप करता है। वह छोकरा पाँच बजे के बाद एक घण्टा एक्स्ट्रा टाइप करता है—सौ की स्पीड उसकी हुई समझ लो।

दो चार जने तो मुझ पर नजर पड़ते ही दूसरी तरफ से चल देते। सोचते नौकरी के लिए रोना-गाना शुरू कर देगा शायद। रास्ते पर चुप चाप खड़ा सोच रहा था पैंतालीस रुपए लगाकर एक धनदा कवच खरीद लूँ? विज्ञापन में लिखा था बेकारों की नौकरी निश्चित है। हाँ अगर जल्दी फल चाहते हो तो आणविक शक्ति वाला एक्स्ट्रा स्ट्रांग कवच है। दाम लेकिन बहुत है—एक सौ बहत्तर रुपए। इतने रुपये कहाँ से आएंगे?

ऐसे में एक दिन छानो-दा पर नजर पड़ी। सादा हाफ शर्ट खाकी हाफ पैंट काले जूते और हरे मोजे पहने चले जा रहे थे। हाथ में चमड़े का चौकोर काला बैग। मुझे देखते ही वे थम गए। पास आकर बोले नई कौन-सी कहानी लिखी?

मैंने कहा कुछ भी नहीं लिखा।

मेरे जवाब से छानो-दा लेकिन निराश नहीं हुए। बोले रवि बाबू भी तो कभी-कभी कुछ नहीं लिखते थे। चुपचाप बैठ रहते थे। कवि कलाकारों के साथ यही तो मुसीबत है। जब देवी सरस्वती की कृपा होगी उसके आसरे मुंह में अंगूठा डाले चुपचाप बैठ रहो। हम लोगों के *साथ यह बला नहीं। सब्र भूख जब लगेगी तो जैसे भी हो रुपए कमा* कर पेट भरेंगे।

कोई जवाब न देकर मुंह फेर लेना चाह रहा था कि छानो-दा के काले बैग पर नजर पड़ी। उस पर सफेद रंग से लिखा था ग्रेट इंडियन टाइपराइटर *लिमिटेड*! छानो-दा चले जा रहे थे। मैंने *हठात् आवाज* दी छानो-दा!

चौंककर वे पलटे और मेरे पास आये। उत्तेजना से मेरे तो होंठ कांपने लगे। अब तक तो फिर भी भले लोगों से नौकरी के लिए कहा है। अब बस्ती वालों का भी पकड़ना होगा! छानो-दा बोले मुझे बुलाया? कुछ कहना है?

छानो-दा आप टाइप का काम करते हैं?

हाँ मेकनिक हूँ।

दाम का सिर खाकर मैं बोला मैंने टाइप करना सीखा है। छाना-दा मानो चौंक उठे। बोले अरे तू इस लाइन में क्यों? रवि बाबू क्या टाइप करते थे?

मैं जवाब न दे सका। आँखों से आँसू बहने लगे। छाना-दा समझ गए। नौकरी न होने से मुझे भूखों मरना पड़ेगा यह भी समझ गए। पीठ पर एक थप्पड़ लगाकर बोले घबरा मत मैं तेरी नौकरी ठीक कर दूँगा। मशीन ठीक करने के लिए कितनी जगह तो जाता हूँ।

दूसरे दिन शाम को फिर हम दोनों की भेंट हुई। छाना-दा चाय की दुकान पर बैठे थोड़े की चर्चा कर रहे थे। मुझे उधर से जाते देखकर बुलाया। बोले चाय बिस्कुट ले। मुझे शर्म आई। कहा यह सब छोड़िए। आप मेरी नौकरी की कोशिश कर रहे हैं यही बहुत है।

छाना-दा ने कहा 'खा। बिना खाए कहानी लिखने का दिमाग नहीं खुलेगा। अच्छे लड़कों को दिमाग साफ रखने के लिए कितना क्या खाना चाहिए। हाँ तेरी नौकरी के लिए बहुत जगह कह रखा है। कल बढ़िया तू मेरे साथ अपना पार्टी के पास साथ ही ले चलूँगा।

दूसरे दिन सवेरे मेरी नई जिन्दगी शुरू हुई। ६५ नम्बर काठार-बगान लेन में एक अंधेरे कमरे में वे रहते थे। उनके कार्ड पर नजर पड़ी—

ग्रेट इंडियन टाइपराइटर लिमिटेड
फैक्टरी एंड हेड ऑफिस
६५ काठारबगान लेन हावड़ा।
सिटी ऑफिस
१६७ स्वालो लेन
फोन

मेरा ढंग देखकर छाना-दा हँस पड़े। अपना बंग दिखाकर बोले ऑफिस का नाम-धाम देखकर घबरा मत जाना। असल में अपना यह बंग ही अपनी फैक्टरी है। यही मेरा सिटी ऑफिस है और यही हेड

आफिस है। काड न रहने से पार्टी भड़क जाती है। सोचती है बोगस है।

बस और ट्राम से चलकर जब हम कलकत्ता के ऑफिसों वाले इलाके में पहुँचे तो लगभग ग्यारह बज रहे थे। लेकिन ग्रेट इंडियन टाइपराइटर कम्पनी कहाँ? पुराने टाइपराइटर की एक छोटी-सी दूकान जरूर दिखाई दे रही थी लेकिन उसका कोई नाम नहीं लिखा था। दूकान के आगे रास्ते पर कुछक बेंच बिछी थीं। उन पर कुछ लोग बैठे थे। उन सबके हाथ में छानो-दा जैसा चमड़े का एक बैग।

छानो-दा को देखते ही सब शोर-सा कर उठे। सभी दुबले-दुबले-से। अधिकतर के पहनावे में हाफ पैंट। दो एक जन अधमैली धोती और स्यूकर के रंग उड़े जूते पहने थे। रेमिंगटन रिबन की डिबिया से बीड़ी निकालकर सुलगाते-सुलगाते एक ने कहा आइए आइए बाबा!

छानो-दा लेकिन जल-से उठे। बोले देखो तुम लोगों को सावधान किए देता हूँ जबान से अगर बुरा कुछ निकला तो एक ही घूसे में चेहरे का भूगोल बदल दूँगा। उन्होंने लोगों से मेरा परिचय कराया यह मेरे छोटे भाई जैसा है। तुम लोगों की तरह गया बीता नहीं। बहुत ही अच्छा लड़का। इसकी लिखी कविता कहानी पत्रिका में छपती है।

अब की सच ही उन भलमानसों ने अवाक होकर मेरी ओर ताका। बोले तो खड़े क्यों हैं? बैठिए।

जिस भले आदमी ने पहले बात शुरू की थी वे बोले आप दूसरा कुछ न सोचें सर आपके भैया से बाबा का रिश्ता जोड़ा है। यह बुरी आदत बड़ी पुरानी है। एकाध बार गलती हो सकती है।

जो भले आदमी दूकान में खड़े थे उनके बदन पर तेल चिकटी गंजी। आँख की ऐनक की एक कमानी नदारद—धागे से बंधी। काँच की अल्मारी में नाना आकार प्रकार के यंत्रादि। छानो-दा ने कहा पाँचू-दा अरे भई क्या तुम पर खिला रहे हो दो न एक एसबेस्टमेंट हिल। पार्टी हाथ से निकल न जाए।

पान चबाते हुए पाँचू दा ने कहा चौदह नंबर रेमिंगटन न? कम्पनी

का माल लो मगवा देता हूँ।

बेंच पर के एक सज्जन ने दबे गले से छौंक डाली अरे रहने भी दो अपना मतीपना। कम्पनी का माल बचकर हजरत घरवाली का गहना कपड़ा खरीदेंगे! कम्पनी के माल स हम मशीन की मरम्मत करनी पड़े तो खूब खामा कमा के।

अन्दाजे स समझ गया यहाँ सकण्ड हैंड माल का स्टाक है। मिटमिट करते हमते हुए पाँचू-दा बोले सर, जहाँ से भी हो, एक दे दूँगा। लेकिन रुपए पूरे दस लगेंगे।'

'इसीलिए तो तुम्हारी बीवी भाग गई। घरवालों से भी काबली वाले-जसा व्यवहार? सवा रुपए का माल और दस रुपए म फटकारना चाहते हो!

उनकी बात चलती रही। मैं बेंच पर चुपचाप बठा रहा। एक ने कहा दुनिया के जितने टाइप मकेनिक हैं सबको यहाँ आना पड़ता है। हम सब प्राइवेट प्रक्टिस करते हैं—रेमिंगटन या अण्डरउड पर माहवारी तनखाह की नौकरी नहीं।

पाँचू-दा स पाट स खरीदकर छानो भी बेंच पर आ बठे। इस राज्य में छानो दा का प्रताप गजब था। हर मेकनिक उनसे डरता। इस बीच कोई सत्रह मेकनिक बेंच पर आ बठे थे। छानो दा ने कहा देखो मेरे इस छोटे भाई को एक नौकरी चाहिए। टाइप सीख रहा है। सिर्फ सात दिन का समय देता हूँ। जहाँ भी हो इस बीच म इसे काम दिलाना होगा। नहीं हुआ तो सिर फोड दूंगा, समझ लो।

मल कपड़े-कुरते पहने उन लोगों में स कोई नाराज़ लेकिन नहीं हुआ। एक ने कहा जो कम्बख्त हम लोगों से मशीन की मरम्मत कराते हैं वे आदमी हैं! खटमल हैं खटमल! नौकरी भी होगी तो खून चूस लेगा।

छानो दा बिगड़ उठे। कहा 'राजकिसन, बतगड़ फिर बनाना। अभी बुरी ही सही एक नौकरी जुटा। मेरा भाई आखिर तुम लोगों की तरह हासपेज तो नहीं है। पेट म समथिंग है।

आफिस है। काम न रहने से पार्टी भड़क जाती है। सोचती है बोगस है।

बस और ट्राम से चलकर जब हम कलकत्ता के ऑफिसों वाले इलाके में पहुँचे तो लगभग ग्यारह बज रहे थे। लेकिन ग्रेट इण्डियन टाइपराइटर कम्पनी कहाँ? पुराने टाइपराइटर की एक छोटी-सी दूकान जरूर दिखाई दे रही थी लेकिन उसका कोई नाम नहीं लिखा था। दूकान के आगे रास्ते पर कुछेक बेंच बिछी थी। उन पर कुछ लोग बैठे थे। उन सबके हाथ में छानो का जैसा चमड़े का एक बैग।

छानो-दा को देखते ही सब शोर-सा कर उठे। सभी दुबल-दुबले-से। बहुता के पहनावे में हाफ पैंट। दो एक जने अधमैली धोती और 'यूकट' के रंग उड़े कुर्ते पहने थे। रेमिंगटन रिबन की डिबिया से बीड़ी निकालकर सुलगाते-सुलगाते एक ने कहा आइए आइए बाबा!

छानो-दा लेकिन जल-से उठे। बोले देखो तुम लोगों को सावधान किए देता हूँ जबान से अगर बुरा कुछ निकला तो एक ही घूँसे में चेहरे का भूगोल बदल दूँगा। उन्होंने लोगों से मेरा परिचय कराया यह मेरे छोटे भाई जैसा है। तुम लोगों की तरह गया-बीता नहीं। बहुत ही अच्छा लड़का। इसकी लिखी कविता कहानी पत्रिका में छपती है।

अब की सच ही उन भलमानसों ने अवाक् होकर मेरी ओर ताका। बोले तो खड़े क्या हैं? बैठिए।

जिस भले आदमी ने पहले बात शुरू की थी वे बोले आप दूसरा कुछ न सोचें सर आपके भैया से बाबा का रिश्ता जोड़ा है। यह बुरी आदत बड़ी पुरानी है। एकाध बार गलती हो सकती है।

जो भले आदमी दूकान में खड़े थे उनके बदन पर तेल चिकटी गंजी। आँख की ऐनक की एक कमानी नदारद—धागे से बँधी। काँच की अल्मारी में नाना आकार प्रकार के यन्त्रादि। छानो-दा ने कहा पाँचू-दा अरे भई क्या तुम पर खिला रहे हो दो न एक एसाइनमेंट दिला। पार्टी हाथ से निकल न जाए।

पान चबाते हुए पाँचू दा ने कहा चौदह नम्बर रेमिंगटन न? कम्पनी

का माल ले भगवा लेना है।

बेंच पर के एक सज्जन ने दबे गले से छोंक डाली, 'अरे रहने भी दो अपना सतीपना। कम्पनी का माल बेचकर हजरत घरवाली का गहना कपड़ा खरीदेंगे! कम्पनी के माल से हम मशीन की मरम्मत करनी पड़े तो खूब खाया कमा के।'

अन्दाज से समझ गया यहाँ सेकेण्ड हैंड माल का स्टाक है। मिटमिट करते हुए पाँचू-दा बोले खैर, जहाँ से भी हो एक दे दूंगा। लेकिन रुपए पूरे दस लगेंगे।

इसीलिए तो तुम्हारी बीबी भाग गई। घरवालों से भी काबुली वाले-जैसा व्यवहार? सवा रुपए का माल और दस रुपए में फटकारना चाहते हो!

उनकी बात चलती रही। मैं बेंच पर चुपचाप बैठा रहा। एक ने कहा, दुनिया में जितने टाइप मेकनिक हैं सबको यहाँ आना पड़ता है। हम सब प्राइवेट प्रक्टिस करते हैं—रेमिंगटन या अण्डरवुड पर माहवारी तनखाह की नौकरी नहीं।

पाँचू-दा से पाट से खरीदकर छानो-दा बेंच पर आ बैठे। इस राज्य में छानो-दा का प्रताप गजब का। हर मेकनिक उनसे डरता। इस बीच कोई सत्रह मेकनिक बेंच पर आ बैठे थे। छानो-दा ने कहा 'देखो मेरे इस छोटे भाई को एक नौकरी चाहिए। टाइप सीख रहा है। सात सात दिन का समय देता हूँ। जहाँ भी हो इस बीच में इसे काम दिलाना होगा। नहीं हुआ तो सिर फोड़ दूंगा समझ लो।'

मैले कपड़े-कुरते पहने उन लोगों में से कोई नाराज लेकिन नहीं हुआ। एक ने कहा आ कम्बख्त हम लोगों से मशीन की मरम्मत कराते हैं वे आदमी हैं! खटमल हैं खटमल! नौकरी भी होगी, तो खून चूस लेगा।'

छानो-दा बिगड़ उठे। कहा 'राजकिसन बतंगड़ फिर बनाना। अभी बुरी ही सही एक नौकरी जुटा। मेरा भाई आखिर तुम लोगों की तरह छलपेज तो नहीं है। पेट में सर्माफिग है।

मुझे साथ लेकर छानो-दा निकल पड़े। एक दफ्तर में आयलिंग और सफाई का काम था। मुझे बगल बिठाकर छानो-दा ने काम शुरू किया। मैं देखने लगा। उसी सिलसिले में उन्होंने मेरी नौकरी की कोशिश की। लेकिन जिसका नसीब ही पत्थर से दबा हो उसका कोई क्या करे!

काम खत्म करके दो रुपए जेब में डालते हुए छानो-दा ने मशीन के मालिक से कहा 'मशीन को एक बार ओवर हॉल करवा लीजिए और दस साल हँसते-खेलते चली जाएगी।

मालिक ने पूछा कंडीशन कैसी है?

'कंडीशन! अजी यह चीज बुनियादी है। पुराना चावल उबालने में बढ़ता है। जो मॉडल आजकल के हैं वे सब ठीक आज की औरतों जैसे हैं। देखने में ही बनी-ठनी लेकिन कौड़ी काम की नहीं। ब्रेकडाउन लगा ही रहता है।

मालिक लेकिन मीठी बातों से भीगे नहीं। बोले अच्छा एक महीना देख लूँ।

एक बज रहा था। छानो-दा मुझे लेकर सीधे एक मिठाई की दूकान में गये। कोई बारह आने का खिला दिया मुझे। मैंने आनाकानी की थी, किन्तु उनकी बस यही एक बात अच्छे लड़कों को खाना चाहिए तब तो दिमाग खुलेगा! तभी तो कविता कहानी लिख सकोगे।

धीरे धीरे टाइपराइटर की अजीब दुनिया से मैं परिचित हो उठा था। अण्डरउड की टग कास्टिंग स्मिथ कारोना में नहीं लगेगी लेकिन स्मिथ का टाइपबार कुशन इम्पीरियल मशीन में मजे में फिट हो जाएगा यह मैंने भी सीख लिया। लेकिन नौकरी का कोई ठिकाना नहीं।

सब निराश लौटे। बोले किसी भी तरह से कौल नहीं बैठता।

छानो-दा यह सुनकर बेहद नाराज हो जाते। कहते यह प्याजी गुल रहने दो। और तीन दिन का समय देता हूँ। अगर इस अरसे में नौकरी इसकी नहीं लगी तो हममें से हर किसी को रोज एक आना जुर्माना

भरना पड़ेगा। जब टैक्स की रकम निकलेगी तब कहीं तुम लोगों की टसक टूटेगी।

इतना कहकर छाना-ग न कुछ भरी गाली बकने जा रहे थे किन्तु मेरी मौजूदगी का ख्याल होते ही जब्त कर गए। मैंने उनसे कहा था 'आखिर कब तक मेरे लिए पते बिगाड़ते रहेंगे आप ?

मैं कहाँ बिगाड़ रहा हूँ ! तू कमा रहा है। मेरे साथ-साथ दफ्तरों में जाता है, मेरी मदद करता है—इसकी क्या कोई कीमत ही नहीं ?

मदद तो मैं खूब कर रहा हूँ। छाना-ग पार्टी को बताते यह मेरा असिस्टेंट है। मशीन की जाँच करते-करते कहते—टेक डाउन। मैं झट बग से रबर की मुहर लगा पैड निकालता और एस्टिमेट तैयार करता—एक करेज स्टूप ८ रुपये एक डग कार्निंग ४० रुपये सर्विस ५ रुपये। कुल ५३ रुपये।

मशीन वाला लम्बे हिसाब से चौंकता इतने रुपये !

मैं कहता जी नहीं सर, यह हमारा मुकम्मल चार्ज है। लेकिन आप हमारे रेगुलर कस्टमर हैं आपके लिए दस रुपये की छूट।

छानो-ग कागज पर लम्बी सही मारते—एल० मण्डल मनेजिंग डाइरेक्टर। कहते, सर, चूँकि हम लोग बग लिये घूमते फिरते हैं इसी लिए। एक बार कम्पनी में मशीन भेज देखिए। मरम्मत की तो दूर सिर्फ देखने की ही पचास रुपये सलामी।"

कस्टमर ने कहा, 'कहाँ कम्पनी का काम और कहाँ आपका ?

कम्पनी के मिस्त्री क हाथ क्या सोने से मढ़े हैं सर ? मेरे हाँ जैसा कोई अभागा करेगा मरम्मत। लेकिन हस्ताक्षर करेगा कोई कोट-टाई वाला सफेद साहब। आखिर उनकी तनखा के रुपये कहाँ से आएँगे आप हा लोगों की कमर से न ?

कस्टमर कुछ पसीजा, यह देखकर छाना-ग ने फिर कहा, 'आखिर कम्पनी का भी काम देखा है सर। मरम्मत होकर जिस दिन मशीन वापस आई फिर उसी दिन ठप हो गई। आपको यकीन न आए तो

पता दे सकता हूँ। अब वह कम्पनी का आखिरी सलाम करके मुझे काम देती है। ऐसी वसी नही सर मेम साहब टाइपिस्ट।

खरीदार न कहा अच्छा!

छानो-दा न कहा मेरे काम से मेमसाहब बहद खुश हैं। कहती है मिस्टर मण्डल तुम्हारा टच माना पेन्टर टच है। की-बोर्ड के टच की कीमत को व जानती हैं। पतली-पतली उगलियाँ हथौडी पीटने जसा टाइप करना उनस नही बनता।

खरीदार ने कहा अच्छा!

छाना दा ने अर्ज की आखिर कोई मशीन को ठीक से मरम्मत क्या कराता है? चिटठी अच्छी छपेगी इसलिए नही। इसलिए कि प्रोडक्शन बढ जाएगा। एक आदमी दा टाइपिस्ट का काम करेगा।

अब छाना-दा ने अपना प्रसग उठाया तो एस्टिमेट को देख लेंगे जरा?

नही। रख जाइए बाद म खबर दूगा।

एसे कितने तो एस्टिमेट बनते है मगर आडर कितने आते हैं? दूकान के पाँचू बाबू कहते इस राजगार का यही हाल है। मेकनिक ता फिर भी गनीमत है कि आयलिंग क्लिनिंग करते हुए डालते हैं। मैं तो पाट स की बिसात बिछाए मक्खियाँ हकाता हूँ।

वास्तव म अजीब है यह दुनिया। हसी-मजाक गाली-गलौज म दिन ता कटता है लकिन शाम तक सोडा-पानी क भी पसे नसीब होग या नही काई नही जानता। और किसी दिन सेकेण्ड हैंड मशीन की दलाली म बीस रुपय आ गए। दूसर साथियो को कानो कान इसकी खबर भर हो। घेर लेंगे—अरे ऐ रिसी उस बुड्ढी मशीन को दो सौ मे कसे बेच लिया? उसे नव-यौवन गोली खिलाई थी?

ऋषि बाबू ने सिर हिलाया 'अजी सजाने की अकल हो तो हर बुड्ढी को छोकरी बनाके चलाया जा सकता है। किसी तरह से बाहर बाहर चकाचक कर दो। बेवकूफ खरीदार उसी से खुश अन्दर के लिए

ये कभी जरा भी दिमाग नहीं खपाने।

एक ने फोड़न डाला बुड्ढी जब ऐंठ बैठेगी तो समझेगा।

ऋषि बाबू ने कहा इसमें क्या तुम्हारा और क्या मेरा ! बुढ़ाहट होगी तो मरम्मत कर दूंगा। फिर से बिल।

सब-के सब दुनियादार। चिंता का अन्त नहीं। एक ने कहा मसान-समय आ गया।

छानो-दा को गिरस्ती न थी लेकिन अभाव था। फिर भी कभी जबान नहीं खोलते। ऊपर से गरदन पर सवार हो गया हूँ मैं। क्या करूं कोई उपाय नहीं। दुनिया में इतने लोगों से हाज हुए छानो-दा मुझको क्यों प्यार करते हैं नहीं समझ पाता। मेरे स्वभाव के नाते नहीं मेरी गरीबी के लिए भी नहीं। मैं लिखता हूँ इसलिए। कब तो स्कूल की पत्रिका में एक रचना छपी थी। छानो-दा ने उसे पढ़ा भी नहीं, शायद देखा भर था। उसी से अपने को उजाड़कर मुझ पर स्नेह बरसा दिया। और उसी का लाभ उठाकर मैं लगातार स्वालो लेन की दूकान पर बैठा उनके मत्थे खा-पी रहा हूँ।

एक दिन वे मुझ पाँचू बाबू की दूकान पर बिठाकर निकल पड़े। उनके चले जाने के बाद पाँचू बाबू गरदन खुजाते हुए हँसने लगे।

एक ने कहा छानू बाबू कहाँ गये ?

पाँचू बाबू बोले 'समझ ही सकते हो आज सात तारीख है।

ऋषि बाबू बोले तकदीर ! नहीं तो सला को ऐसी पार्टी कहाँ जुटती ?

पाँचू बाबू ने कहा तुम लोगों का नसीब खोटा है तुम लोग टाइपिस्ट बाबुओं की मशीन बनाते-बनाते ही मर जाओगे।

क्या कहा दादा ! कार्नेगी सी खड़ी-खड़ी दाढ़ी और मैली कमीज पहने टाइपिस्ट बाबू बैठे हैं। मगर छानो को नसीब से कैसी मेम साहब मिल गई है ! एक ने कहा।

पाँचू बाबू को ज्यादा उत्सुकता थी। पूछा देखा है मेम साहब को ?"

देखा नहीं है मतलब ? कसम ठीक जैसे पोलसन में मक्खन की बनी हो। और ऊपर से किसी ने मानो पाव भर गुलाबजल छिड़क दिया है। उस बार जब छानो का पेट की बीमारी हुई थी मैं ही तो गया था मशीन बनाने। कसम मशीन क्या बनाऊँ फुर फुर सुगन्ध आने लगी गुलाब की। कहाँ देखने से जी जुड़ा जाता है।

एक ने कहा इसीलिए तो उस बार तुमने पूरे डेढ़ घण्टे तक मशीन बनाई थी।

झूठ मत कहो कसम घण्टे भर था पूरा एक घण्टा। लेकिन हाँ आने का जी नहीं चाहता था। और मैं जब तक मशीन बनाता रहा ममसाहब बगल की कुर्सी पर बैठी देखती रही। अचानक देखता क्या हूँ गरदन हिलाती हुई गुनगुनाकर गा रही है। उसके बाद कमम छोकरी ने हाथ के नाखून काटे बग स आइना निकालकर कंघी की होठों पर सिन्दूर लगाया।

शादी-वादी कर ली है क्या ?

कौन जाने भया! लेकिन भसी-सी लगी। मझसे पूछा तब क्या आए ? क्यूँ मर इज मिस्टर मण्डल ? साथा मह दूँ तुम्हारे मिस्टर मण्डल का पेट गड़बड़ हो गया है—ही इज लिविंग। फिर सोचा मर्त क्या जरूरत पड़ी है। छानो नायक नाराज होगा। सो कह दिया उसे बुखार आया है।

'*वाह साली अक्लमन्दी दिखाई!* एक दूसरे ने कहा।

ऋषि बाबू बोले ओह यह सुनकर ममसाहब का जो तकलीफ हुई दो-तीन बार च्च च्च की। उसके बाद कहा आ आइ एम वरी सॉरी।

पाँचू बाबू ने कहा क्या बाबा तुझे उतनी स्योरी होने की क्या पड़ी है ? तेरी मशीन साफ-सूफ की पैसे लिये और चला आया। मकानिक को मूलहा चक्की की खबर का तुझे क्या करना ?

उन सबकी नजर अब मुझ पर पड़ी। कुछ डर-से गए। पाँचू बाबू ने मुँह घोटकर कहा हम सब जरा आपस में हिसाब किताब करते हैं—

अपने दादा से आप कह न दीजिएगा ! ऐसे हैं कि खून फसाद कर बैठेंगे।

मैंने डरते हुए कहा, नहीं कहूँगा।

हिम्मत पाकर ऋषि बाबू बोले लेकिन वही अन्तिम था। कम्बख्त छानो ने फिर कभी हम लोगों को नहीं भेजा। लेकिन मन अभी भी कसा सा कुरकुर कर उठता है।

पाँचू बाबू ने कहा 'अच्छा !'

ऋषि बाबू ने कहा मैंने ऐसा भी पापाजल दिया भई बिल में पैसे तुम ले लेना मैं सिर्फ काम कर आऊँ। कसम उस पर भी तयार नहीं।'

अब ऊपर से एक रुपये का लालच दिखाओ उससे अगर काम बने।

कसम जो चीज है मुझे उसमें भी आपत्ति नहीं। तुम्हारी अंग्रेजी तस्वीरों की स्टार कहाँ लगती है !

और भी बातें होती "पायन" लेकिन एक ने होशियार कर दिया कि छानो-दा आ रहे हैं। सुनना था कि सब फिउज हो गए। इशारे से पाँचू बाबू ने मुझे मौन रहने के वचन की याद दिला दी।

छानो-दा आकर बेंच पर बैठ गए। दूसरे मकैनिक भी धीरे धीरे वहाँ इकट्ठे हुए। छानो दा ने कहा, 'तो साला तुम लोगों ने मेरे भाई की नौकरी के लिए कुछ नहीं किया। कई दिन निष्फल गए। आज जुर्माना दाखिल करो। नेपा हरेक से एक-एक आना वसूलो।

हुक्म होने की देर नेपा ने जुर्माना वसूलना शुरू कर दिया। और सबने बिना किसी ना-नू के नेपा को एक-एक आना देना शुरू कर दिये। छानो-दा ने चार आने दिये। तो कुल कितना हुआ ?

नेपा ने कहा एक रुपया चार आना।

गुड !" छानो-दा ने कहा।

घर लौटते हुए हावड़ा स्टेशन पर छानो-दा ने पैसे मुझे दिये। मुझे बड़ी शर्म हो रही थी लेकिन उन्होंने जबर्दस्त डाँट बता दी।

टाइप-टोले में लगभग रोज ही जाना-माना शुरू कर दिया। मुझे पाँचू बाबू के पास बिठाकर छानो दा फिर चले गए।

उस दिन तीसरे पहर ज्यादा लोग नहीं थे। पाँचू बाबू टाइप झाड़ने वाले ब्रश की उलटी पीठ से पीठ खुजला रहे थे। पार्टी के यहाँ से लौट कर अब ऋषि बाबू दुकान पर हाजिर हुए।

कपाल पर का पसीना पोंछते-पोंछते बोले 'पाँचू-दा कुछ रुपए चाहिए। बीवी के पेट में जो आया है लगता है नष्ट हो जाएगा। दो दिन तो होम्योपैथी गोली दी कोई लाभ नहीं हुआ।

नष्ट होना ही ठीक है। मरकर बच जाएगा। पाँचू-दा बोले।

वह तो समझा लेकिन अभी तो मुक्ति मिलनी चाहिए। डाक्टर न बुलाया जाए तो गाय-बछरू दोनों जाएगा। कुछ रुपए

पाँचू-दा की आँखें अब चचल हो उठीं। बोले सवेरे क्या पाठ पढ़ाया था ? फँसा कुछ बंसी में ?

ऋषि बाबू उनके बिलकुल करीब जाकर फुसफुसाकर बोले बिना फँसाए चारा था ? मगर वाजिब दाम देना।

पाँचू बाबू का चेहरा खिल उठा। दोनों में क्या-क्या बातें हुई। ऋषि बाबू ने कागज में मोड़ी हुई कोई चीज कमीज की जेब से निकालकर पाँचू बाबू को दी। पाँचू बाबू ने पाँच का एक नोट देकर कहा पक्का जौहरी।

पाँचू बाबू ने अब मुझ पर नजर डाली। बोले 'छानो तो घनघोर गुण्डा है उससे कुछ कहने की हिम्मत नहीं होती। रोज एक आना जुर्माना अदा करता है। जुर्माने के सवा रुपए रोज तुम्हें दिया करेगा जब तक तुम्हारी नौकरी नहीं लग जाती। वे जरा रुके। उसके बाद नफरत से मुँह फेरकर बोले 'तुम मर्द हो कि औरत ?

मैं चौंक उठा। वे डाँट बैठे 'दूसरे से भीख लेने में शर्म नहीं आती ? इतनी जगह तो जाते हो टाइप का एस्टिमेट देने कुछ हाथ साफ नहीं कर सकते ? मर्द हो ! दो फिर रोलर की कीमत क्या होती है जानते हो ?

उस दिन की सोचकर आज भी मुझे लगता है पाँचू बाबू का सन्देह ठीक ही था। उन्होंने ठीक ही मुझे पहचाना था। आज भी जब कोई मेरी तारीफ करता है, तो पहले तो अच्छी ही लगती है, मीठी लगती है। लेकिन उसके बाद ही डर-सा लगने लगता है। कहीं कोई पहचान ले मुझे। अगर मेरे और छानो-दा के अन्तिम अध्याय को कोई जाहिर कर दे।

अपनी निगाह के सामने देखता हूँ मैली कमीज पहने रास्ते पर की बेंच पर चुपचाप बैठा हूँ। जरा देर में छानो-दा लौटे। सबसे एक आना जुमाना वसूला। उसके बाद लौटते समय आठ में से जाकर पैसे मुझे दिये। मुझे तो मारे घृणा के मिट्टी में मिल जाने का जी होने लगा। छानो-दा ने कहा छि तू कहानी लिखता है न! जा घर जा। सवेरे रेडी रहना। चन्दन नगर चलना है एक मशीन देखने।'

दूसरे दिन हावड़ा से गाड़ी पर सवार हुआ। छानो-दा हर पल मेरे सामने छोटे-से हुए रहते। इसलिए कि मैं अच्छा लड़का हूँ न, मेरी जबान से भूलकर भी कभी बुरी बात नहीं निकलती। मैं तो कभी परीक्षा भवन में चोरी करते हुए पकड़ा नहीं गया। भूलकर भी मैंने कभी किसी की कापी की तरफ ताका तक नहीं। चोरी नहीं की चोरी करने में किसी की मदद नहीं की।

छानो-दा ने कहा 'दूकान में उन असभ्य लोगों के साथ बैठे रहने में तुझे तकलीफ होती है, है न?

नहीं।" मैंने जवाब दिया।

चन्दन नगर में हम एक बहुत बड़े मकान के सामने पहुँचे। मकान मालिक नामी मारवाड़ी था। टाइप राइटर उन्हीं के यहाँ था।

सेठजी उस समय गंजी पहने हनुमानजी की तस्वीर के सामने बार बार जमीन से सिर छुला रहे थे। सेठजी की स्त्री ने हमें बिठाया। नौकर टाइप राइटर को हमारे सामने मेज पर रख गया। सेठजी ने आकर बताया 'यह मशीन बड़ी सगुनिया है। टूटे लोहे की दूकान से आज उन्होंने यह महल गाड़ी कारखाना सब-कुछ किया—इन सबका स्रोत

किताबत इसी मशीन से हुआ।

सयाने शिकारी की तरह छानो-दा ने भी मशीन को जरा इधर उधर देखकर कहा, साक्षात् लक्ष्मी है। थोड़ी सी मरम्मत हो जाए तो बिलकुल नई-जैसी काम करेगी। लक्ष्मी माई और भगवती माई की तरह सेवा से मशीन भी संतुष्ट होती है।

बैग खोलकर औजार निकाले। बड़े जतन से छानो-दा ने धीरे धीरे खोलकर करेजे को मेज पर रखा। अनुभवी आँखों से वह उस बूढ़ी मशीन की जवानी का रहस्य ढूंढने लगे। मैं भी ध्यान से देखता रहा। छानो दा ने मशीन पर आँखें टिकाए रखकर ही कहा ... टर डाउन। पैड निकालकर कार्बन लगाया और लिखने लगा ... मन करेज स्प्रिंग ... दन एसकेपमेंट ह्वील

मारवाड़ी ने कहा ... बुढ़िया को बिलकुल छोकरी बना देना होगा।

वार्निश लगे हाथों को मलते झाड़न से पोंछते-पोंछते छानो-दा हिसाब लगाने लगे और मैं एक कागज लगाकर मशीन के टाइप का नमूना लेने लगा। छानो-दा ने कहा ... सेठजी तीस रुपए लगेंगे।

"तीस रुपए! ... सेठजी ने अपनी जिन्दगी में ऐसी अचरज की बात नहीं सुनी। इतना तो शायद मोटर की मरम्मत में भी नहीं लगता। सेठजी के सारे बँधे दाँत झकझका उठे। उनका विचार था ... दो-चार रुपए देने से गुड रेमिंग्टन कम्पनी ही मशीन को ठीक कर देगी।

गुस्सा और अपमान से मेरा ब्रह्मतालु तक जल उठा। छानो दा का चेहरा भी सुर्ख हो उठा। हम दोनों का रेल-किराया ही तीन रुपये होगा।

छानो-दा ने कहा ... आखिर इतनी दूर से आया तो ऑयल ही कर दूँ। दो रुपए दे दीजिएगा।

महज जरा-सा तेल का दो रुपया! सेठजी उछल उठे। व्यापार के नाम पर क्या हम डकैत बन गए हैं! छानो-दा फिर भी सेठजी को समझाने की कोशिश कर रहे थे कि इससे कम में कोई भी ऑयल

नहीं करता। मगर उस सूखे नारियल का फोड़ना आसान न था। मैं तो बेहद नाराज हो गया। ठहरो नाहक ही हमसे यों काम करा लेने का मजा चखाता हूँ। वे दोनों बात कर रहे थे और इधर मैं मन में ठानकर टाइप राइटर पर झुक गया। मेरे हाथ काँप रहे थे तो भी महज दो मिनट लगे थे। अब एक मिनट की भी देर न करके मैंने छाना-दा से कहा ऐसे काम की हमें जरूरत नहीं। चलिए लौट चलें।

छाना-दा जैसे जिद्दी और बिगड़ैल आदमी मेरे कहते ही मारवाड़ी का पिंड छोड़कर चले आएँगे यह मैं सोच भी नहीं सका था। और समय होता तो वे सिर-फुटौवल कर बैठते। लेकिन मकान का रुखकर हम चले आए। मेरे दोनों पैर काँप रहे थे। हाथ भी जैसे वश में न हों। मानो हाथ ही अपने नहीं, किसी और के हों। किसी अदेखी मूठ से मानो हाथों को हिलाने की भी शक्ति जाती रही।

रास्ते पर उतरते हो छाना-दा ने मेरे हाथों को कसकर दबा लिया और फिर मेरी तरफ इस तरह से ताका नहीं, नहीं उस दृष्टि का वर्णन करने की शक्ति मुझमें नहीं। उस दृष्टि में क्या था यह मैं खुद नहीं जानता। लेकिन इतना मैं समझ गया कि मैं उन्हें फाँकी नहीं दे सका। पकड़ाई पड़ गया। गाज भी गिरी होती उन पर तो भी वे इतने चकित न होते। सिर्फ किसी प्रकार इतना कहा तूने यह क्या किया ?

हाथ-पाँव ही नहीं, अब मेरा सारा शरीर ही अवश हो आया। ऐसा लगा राह पर लुढ़क पड़ूँगा मैं। मन कहा 'सिर्फ दो पिंड रोज़ निकाल लिए हैं।

छाना-दा को मानो अभी भी विश्वास नहीं हो रहा था। बोले तू कविता लिखता है न !

हे ईश्वर ! यह क्या किया ? गुस्से में सठिया या सब कुछ सिखाने की ऐसी दुर्मति मुझे क्या हुई ? धरती क्यों फट जाती ! मेरी छाती की धड़कन एकाएक थम क्यों नहीं जाती कि सारे संकोच से छुटकारा मिल जाए ! छाना-दा अपने गोरे जैसे चेहरे पर शायद थप्पड़ लगाए। लेकिन नहीं तो।

कुछ भी तो नहीं लिया। उनका भी चेहरा बिलकुल सफेद हो उठा। शायद हो कि भाभी की तस्वीर एक पल के लिए उनकी आँखों के आईने में उतर आई हो।

मेरे कानों में उन्होंने कहा कि वे जान गए हैं। इतना कहकर मुझे खींचते हुए स्टेशन की तरफ लपके।

सच ही वे जान गए थे। दो दरबान हम लोगों के पीछे दौड़े आ रहे थे। मेरी चेतना उस क्षण के लिए फ्यूज कर गई। कुछ भी याद नहीं कर पा रहा हूँ। सिर्फ इतना ही याद है कि औचक ही छानो दा ने चुराए फिड रोलर मुझसे छीन लिए। मैंने आनाकानी की थी। लेकिन वे बोले 'हम लोग दागी माल हैं। हमारा कुछ नहीं होगा।' और उन रोलरों को अपनी जेब के हवाले करते हुए कहा था 'ऐसा न हुआ तो तेरा तो रेकर्ड खराब हो जाएगा।'

उसके बाद क्या हुआ मैं किसी भी प्रकार याद नहीं कर पाता। दरबानों ने हम दोनों का टेंटुआ दबा दिया था। मेरी पीठ पर भी दो-एक मुक्के पड़े थे। छानो-दा की नाक से लहू का फव्वारा फूट पड़ा था। इस पर भी उन्होंने कहा 'उसे छोड़ दीजिए, उसका कोई कसूर नहीं। मैंने चोरी की है।'

सचमुच ही उन लोगों ने मुझे छोड़ दिया और छानो-दा को थाने भेज दिया। मेरे पास धेला भी न था। बिना टिकट के ही गाड़ी पर सवार हो गया और घर लौटकर सारी रात रोता रहा। रोते रोते कब नींद आ गई और सपना देखा कि पुलिस ने मेरी कमर में रस्सी लगाई है। कल से घूँसे लगा रही है। हजारों आदमियों की भीड़ जमा हो गई है। सब चीख रहे हैं— चोर! चोर! और छानो-दा कहते चले जा रहे हैं— उसे छोड़ दीजिए। उसका कोई कसूर नहीं। चोरी मैंने की है!

मुझे नहीं मालूम था कि सुबह की किरण धरती के लोगों के लिए इतना सकोच इतनी लज्जा लेकर आती है। ऐसा लगा कि मैं बिलकुल नंगा होकर भीड़ भरे चौराहे पर खड़ा हूँ। सब मुझको देख रहे हैं। फिर

चौंका। इस बार भी सपना देख रहा था।

किसी को मालूम नहीं हुआ। मेरे जीवन के उस अधर क्षण की खबर किसी पर जाहिर न हुई। अखबार म छपा 'टाइप राइटर मे हिस्सो की चोरी के जुम म तीन महीने की सजा। हाकिम न अपने फसले मे ऐसे घिनौने अपराध के खिलाफ जो तीखी राय जाहिर की थी, उसका विवरण भी विस्तार स निकला।

और कोई होता तो पागल हो जाता शायद। शायद आत्महत्या कर लेता। लकिन मरे-जसे कापुरुष गधे के लिए कुछ भी करना सम्भव न हुआ। सिर्फ चन्दन नगर का दृश्य कभी-कभी जब आँखों मे झूल जाता तो बेवस-सा हो जाता।

जाने कितनी राता का छिपकर रोया और सोचता रहा यह दाग मैं छिपाऊगा कसे? कसे फिर लोगों को अपना यह मुह दिखाऊँगा! लकिन देखा, नम मेरी सचमुच ही ढक गई है। कोई नहीं पहचान सका मुझ।

तीन महीने के बाद छानो-दा जल स लौट। मुझे खबर मिली। लकिन उनसे भेंट करने की हिम्मत नहीं पड़ी। कोंडारबगान के रास्ते से चलना ही छोड दिया। उनके आमने-सामने खड़े होने का साहस ही नहीं होता।

लकिन यह कौन जानता था कि मेरे लिए छानो-दा का यह हाल होगा? उनका सब-कुछ गया। पाँचू बाबू न छानो मण्डल को फिर बेंच पर बठने नहीं दिया। जेल की सजा पाये हुए टाइप राइटर चोर से अब मशीन कौन बनवाए?

उसके बाद? उसके बाद शुरू हो गया अध पतन का इतिहास। मेरी कालव्याधि का अपन ऊपर उठाकर उन्होंने अपने सवनाश को बुलाया। मुझे पता चला छानो-दा पॉकिटमार बन गए। मरे कलेजे म कसी तो कचोट हुई। लेकिन मुलाकात करने का साहस नहीं हुआ। उसके बाद व चार हो गए और फिर डकत।

और मेरी अपनी बात ? वह तो धीरे-धीरे सब कुछ निवेदन करूँगा। मेरे जीवन के हिसाब का जोड़ घटाव गुणा भाग कुछ भी जानना बाकी नहीं रहेगा। आप लोग अभी भी शायद मुझे नहीं पहचानते लेकिन इसके बाद पूरी तरह पहचान लेंगे।

बीच की भी बहुत-बहुत बातें हैं सभी कुछ कहूँगा इसीलिए तो आज लिखने बैठा हूँ। इससे पहले इस कहानी को खतम कर लूँ। अनेक अग्नि परीक्षाओं के बाद संसार के देवता ने एक दिन क्षमा-सुन्दर आँखों से मुझ पर कृपा की वर्षा की। सफलता की सीढ़ियों से मैं ऊपर उठने लगा। पाठकों की दुनिया में मैं एक नामी मर्मी साहित्यिक के रूप में गिना जाने लगा। मेरा रेकार्ड शरत् के आकाश की तरह निर्मल था। दुनिया में कहीं भी यहाँ तक कि लन्दन नगर की पुलिस की बही में भी मेरे बारे में कुछ भी लिखा नहीं था।

दिल्ली विश्वविद्यालय की ओर से मुझे एक साहित्यिक पुरस्कार देने की घोषणा होने के बाद ही यह घटना घटी। उस रोज एक प्रसिद्ध मासिक पत्र के विशेष प्रतिनिधि मुझसे मिलने आ रहे थे। उन्होंने यह भी कह रखा था कि मेरी कुछ तस्वीरें लेंगे।

थोड़ा-सा समय अभी था। सो मुहल्ले के एक सेलून में हाजिर हुआ। सेलून के मालिक गणपति बाबू ने खातिर से जल्दी जल्दी मेरे लिए कुर्सी बढ़ाई। बोले आप इस गए-बीते मुहल्ले में आज भी रह गए हैं यही सौभाग्य है। यहाँ रहते हुए भी रात दिन कितनी मेहनत आप करते हैं। ताजिन्दगी पढ़ने-लिखने में ही डूबे रह गए इसके सिवाय और किसी बात का तो खयाल किया नहीं।

इतने में बाहर से एक विकट चीत्कार सुनाई दिया बोलो हरि हरि बोल ! कुछ रुपए कीमत की बाँस की एक खाट पर चटाई में लिपटी एक लाश जा रही थी। ढोने वाले और एक बार जोर से चिल्ला उठे बोलो हरि हरि बोल !'

साबुन-सना ब्रश मेरे गाल पर रगड़ते हुए गणपति बाबू ने कहा तो

यह गुंडा गुजर गया। एक जमाने से बीमार था। उमर भी क्या हुई थी। लेकिन कहावत है न सर, जैसी करनी वैसी भरनी। अच्छी राह पर रहा होता तो जानें और कितने दिन जिन्दा रहता। पाँच जन नाम लेते, दस जने लाश के पीछे-पीछे जाते। लेकिन छानो मण्डल जैसा हाल से तो पटाक् से लिपटकर बेईमान पाकेटमारों के कन्धे पर बाँसतल्ला घाट ही जाना होगा!

मेरा दिमाग घूमना शुरू हो गया। गणपति बाबू ने शायद मेरे इस परिवर्तन को भाँप लिया। बोले—इस कम्बख्त छानो की खबर से ही आपका चेहरा नीला पड़ गया? हा हा करके हँसे। हँसकर कहा—यही होता है कलाकार का हृदय। आप लोग हर किसी को प्यार किए बिना नहीं रह सकते। सुना है रवि बाबू भी ऐसे ही थे—गरीबों का कष्ट बिल्कुल नहीं सह सकते थे। लेकिन सर इस कम्बख्त छानो के गुजर जाने से मुहल्ले की इज्जत बच गई। नहीं तो इसका नाम ही गुण्डा महल्ला हो गया था। आप-जैसे लेखक यहाँ रहते हैं, इसे कोई यकीन ही नहीं करना चाहता। मगर वाकई गुण्डा था सर। एक तरफ का फेफड़ा चलनी हो गया था तो भी चोरी करता फिरता था। पुलिस के हाथों कितना पिटा, मगर कोई परवाह नहीं। यही उस रोज रवि बाबू के जन्मदिन पर (तारीख मुझे कतई याद नहीं रहती, पच्चीस वैशाख तो) महाकाली विद्यालय की एक लड़की के गले से हार छीन ले भागा। जरा देखिए सही कैसा अमानुष था। बेचारी लड़की रवि बाबू का गाना गाने जा रही थी उसे भी न छोड़ा। दाभागवगान की बदनामी की सोचकर शर्म से गरदन झुक जाती है।

कुशल हाथ से उस्तरा चलाते हुए गणपति बाबू ने कहा—कोई दोष बाकी न था। सिर्फ चोरी डकैती ही? मगर आप जैसे आदमी के सामने मैं यह सब जबान पर नहीं ला सकता।

मेरा बदन कैसा तो बेबस हो पड़ा था। कुछ भी नहीं पूछा मैंने। लेकिन पूछने की अपेक्षा बिना किए ही गणपति बाबू बोले—अन्तिम बार

सा चोरी करके घोलाडागा म आकर पडा था। उसके पहले दो दिन सोनागाछी और हडकट्टा गली म भी था। मगर पुलिस की निगाह म धूल झोंकना क्या इतना सहज है ! उन लोगा ने उस घर का घेर लिया और छानो को निकाला। कितना कहूँ मरी दूकान तक पर अक्सर धावा—दाढ़ी बना दो! बाल बना दो! ऊपर से हुकुम सिर दबाओ स्नो लगाओ बाल में ल्यावमजूस लगाओ ! एक घण्टा बेगारी कराके तब जाता। गुण्डा मुहल्ले में दूकान कर बैठा हूँ करू क्या ? और कही होता तो खिसा देता।

मरे चेहरे पर और एक बार साबुन लगाते हुए गणपति बाबू ने कहा "धरम की कल हवा म हिलती है मर। बीमारी और पुलिस ने एक साथ घर दबाया।

बातें करते हुए भी उनका हाथ चल ही रहा था। डिटॉल लगाते लगाते बोले आपने तो विवेकानन्द स्कूल स पास किया है—है न ?

मैंने कहा हाँ।

इसी को कहते है कुदरत का कमाल ! छानो भी उसी स्कूल म पढ़ता था। एक ही पेड म आम और आमड़ा फला।

और भी कहा जी मुहल्ले की बदनामी। हर रोज रात म छानो की माज-पूछ के लिए पुलिस आती। उसे रात को घर स निकलने का हुकुम नही था। और फिर हर हफ्ते थाने म हाजिरी देनी पड़ती थी।

' मजा देखिए इधर पूछ-ताछ कर पुलिस गई और उधर वह निकल कर चोरी पर आया।

उसके बाद हो गई टी० बी । मगर तब भी रस की न पूछिए ! गसपोस्टों को ठकठकाते हुए सिपाही आता। आवाज लगाता अब छिनुआ घर में है ?

छानो दम साधे चुपचाप पड़ा रहता। इस पर सिपाही नाराज होकर कहता अरे साले छिनुआ क्या कर रहा है ?

छानो इस पर जवाब देता अजी यही तो हूँ। तुम्हारी बहन के साथ सोया हूँ।

गणपति बाबू ने कहा जरा हिमाकत देखिए उसकी पुलिस के साथ मजाक ! उसकी महन से रिश्ता जोड़ लिया। अवश्य आखिरी दिना रस सूख गया था। इतना-इतना लहू उबलता था। कितने निरीह लोगा का तबाह किया !

उस समय सिपाही पुकारता भी तो छानो जवाब नहीं दे सकता। आज सुबह जब कोई जवाब न मिला तो सिपाही ने सोचा हो न हो कम्बख्त चोरी करने गया है। सिपाही ही अन्दर घुसा। देखा वह मरा पड़ा था।

गणपति बाबू ने एक छोटा सा आईना मेरे सामने रखा। कहा उन नीचो की बात छोड़िए। जरा अपना चेहरा ठीक से देख लीजए।

उस प्रसिद्ध मासिक पत्र क विशेष प्रतिनिधि उस दिन मेरे पास आये थे। भेंट के बाद मेरी कुछ तस्वीरें भी ली थी। जब जाने को हुए तो मेरी दीवार पर टगी चार तसवीरों पर उनकी नजर पड गई। ये थे रवीन्द्रनाथ शरत्चन्द्र टाल्सटाय और डिकेन्स।

विशेप प्रतिनिधि ने कहा 'एक सवाल पूछना भूल गया—अपने साहित्यिक जीवन म आप किसके ऋणी हैं ? लकिन इसकी जवाब की जरूरत नहीं इन तसवीरा से ही मुझे जवाब मिल गया है।

मैंने शायद उन्हे टोकने की चेप्टा की थी। लकिन मेरे गले से आवाज ही नही निकली। दिमाग शायद चक्कर खा गया था। जब मैं अपने मे आया तो विशप प्रतिनिधि जा चुके थे।

इसके कुछ ही दिन बाद रवीन्द्र जन्मोत्सव क उपलक्ष्य में सभापतित्व करने के सिलसिल में बगाल से बाहर की एक साहित्यिक सस्था के

जो भी काम हो करके अगर डडेक सौ रुपए जमा कर पाऊ तब 'गायन' कोट का टाइपिस्ट होना मेरे लिए सम्भव हो सके।

उसी समय सलकिया रामडेग रोड के एक पानवाले ने मेरा परिचय राजपाल से करा दिया। यह पानवाला रात को चोरी चोरी गर कानूनी शराब बेचा करता था और उसी सिलसिले म राजपाल स उसकी जान पहचान हुई थी। सादी हाफ कमीज सफेद हाफ पट सफेद मोजे और सफेद चमडे के जूतों मे इस भले आदमी को देखने से सहसा लगेगा मानो कोई बडा जहाजी अफसर हो। लकिन सुना सुन्दरलाल राजपाल किसी की नौकरी नहीं करते अपना ही कारोबार है।

ग्राड ट्रक रोड पर किसी मारवाडी की महल जसी इमारत है। वही राजपालजी रहते हैं। सुना उस मारवाडी के कलकत्ता शहर म दसे और दसेक मकान हैं उसके सिवाय विराट व्यापार। राजपालजी के साथ मारवाडी महोदय क्या तो और कोई नया कारबार शुरू करेंगे।

कारबार शुरू करें न करें अपने को एक नौकरी जुट जाए तो जी जाऊँ। और राजपाल शायद यह ताड गए थे। इसीलिए बोले अभी हर महीने उन्नीस रुपये दूंगा। आगे अगर अपने काम स खुश कर सको तो यही उन्नीस बढकर कहाँ पहुँच जाएगा नहीं कह सकता। हो सकता है कुछ ही दिनों म तुम हर महीने चौबीस-पचीस रुपए कमाना शुरू कर दोगे।

राजपाल साहब की कम्पनी म टाइपिस्ट हो गया। मारवाडी के उसी विशाल मकान म आना पडता और वहीं पहले ही दिन उनके एक उटँट दक्षिणश्वर बाबू से परिचय हुआ। मुझे बिठाकर राजपाल ने आवाज दी 'दक्खिन बाबू!' और आवाज के साथ ही एक भले आदमी कमरे म दाखिल हुए।

मुझ दिखाकर हाथ की छोटी-सी छडी को घुमाते हुए राजपाल ने कहा इस नये आदमी को रख लिया है। अब से तुम्हारा काम घट गया।'

यही पहली बार दक्षिणेश्वर बाबू के चेहरे की तरफ ताका। साही के कांटे जैसी खड़ी हफ्ते भर की काला-सफेद दाढ़ी। खूब दुबला। लम्बाई में पाँच फुट से ज्यादा न होगा।

राजपाल के सामने वे जिस ढंग से खड़े थे उसी से समझ में आ गया कि वे साहब से खूब डरते हैं। उनके सामने मुझसे बात करने में भी वे डरे। मैली कमीज का आस्तीन कोहनी तक मुड़ी। हाथ की नसें फूली फूली। मेरी ओर ताककर भले आदमी बेमन-से हँसे।

राजपाल ने अपने रोबीले गले की हुंकार से जो कहा उसका मतलब था 'अरे डाकिन बाबू औरतों की तरह मुह सिए क्यों खड़े हो? बोलो। अगर आदमी पसन्द न आया हो तो यही कहो। इसे भगाकर दूसरा आदमी ला देता हूँ।

"इन्त मह क्या रहा है!" मैं तो चौंक उठा। लेकिन इससे पहले कभी नौकरी नहीं की। अपने खानदान का भी कोई कभी नौकरी के पास नहीं फटका। मन को समझाया ऑफिस में साहब लोग इसी तरह से बात करते होंगे घबराने की कोई बात नहीं। लेकिन साथ-ही-साथ यह डर हुआ कहीं डाकिन बाबू मुझे पसन्द न करें तो? अगर साफ कह दें "उहूँ यह छोकरा मुझे नहीं जँचता। तो? तो जो उन्नीस रुपए हर माह मिलते, वे भी गए।

डाकिन बाबू ने लेकिन कुछ भी न कहा। लोग बलि के बकरे को जैसे जाँच करते हैं उन्होंने उसी तरह मुझे गौर से देखा और उसके बाद सम्मति में गरदन हिलाई।

राजपाल छड़ी लिए काम में निकल गए। जाने से पहले अपनी लाल और गोल-गोल आँखें घुमाकर बोले 'डाकिन बाबू तो सारे पोस्टकार्ड आज ही लिख डालिए। राशन लाने के लिए आपको नहीं जाना होगा नया बाबू जाएगा।

राशन लाना? हाँ, वह भी करना होगा। दो राशन कार्ड थमाकर डाकिन बाबू ने कहा लेकिन सावधान! साहब को कहीं धुंधला हुआ, तो

तराजू पर तोलेंगे ।

सुनकर मैं तो अवाक । मेरा चहरा देखकर डाक्नि बाबू का शायद माया हो आई । बोले मुझ पर नाराज होने से तो कोई लाभ नही । आप उस आदमी को तो नही पहचानते ?

डरकर फुसफुसाकर पूछा क्या ?

दो दिन रह लीजिए सब समझ जाइएगा । डाक्नि बाबू न थूक घोंटा । उसके बाद और भी धीरे धीरे बोले डेंजरस आदमी है— गुडा आखिरी बात बोलने की इच्छा नही थी उनकी अनजाने ही बरबस मुँह से निकल पडी इसलिए डर से थर-थर कॉपने लगे ।

मेरे दोनों हाथ हाथों से कसकर दबाते हुए रोने रोने से होकर बोले दुहाई है कह न दीजिएगा । फिर तो मेरी बोटी-बोटी काट डालगा ।

राशन लकर लौटा । देखा डाकिम बाबू बड़े ध्यान से चिटियाँ लिखते चले जा रहे है । मैंने कहा मैं आ गया डाक्नि बाबू !

उन्होंने मेरी तरफ ताका । नाक की नोक पर से चश्मा उतारकर कहा आप भी मुझ डाक्नि बाबू ही कहेंगे ? यह कम्बख्त तो पजाबी है ठीक उच्चारण नही कर सकता है । मेरा असली नाम है दक्षिणश्वर चटर्जी ।

मैंने कहा, गलती हो गई अब स आपको दक्षिणश्वर बाबू ही कहूँगा ।

दक्षिणश्वर बाबू अब खुश हा गए । बोले भगवान् तुम्हारा भला करें । अब दो चार चिटिठ्याँ तो लिख डालो ।

लिखने बैठ गया । लकिन उन चिटिठ्यों की याद से आज भी मुझ डर लगता है । उनमें से किसी भी चिट्ठी के लिए मुझ जल मे सडना पड सकता था । गनीमत थी कि कोई मेरी लिखावट नही पहचानता था । मेरी लिखी उन चिटिठ्यां म से दो चार आज भी बडतल्ला या मोंटन स्ट्रीट के मारवाडियों के यहाँ सुरक्षित हैं या नही कौन जाने ? हा तो आज भी मेरे आफत में पड जाने की सम्भावना है ।

कुछ ही दिनों में भय के साथ यह आविष्कार किया कि ये राजपाल

जी जा-सा चीज नहीं हैं। एक कोटि के मारवाड़ी साधारण लोगों को ठगकर पैसे कमाते हैं और उन-जसों को ठगने के लिए राजपाल जसे साथ हैं। फर्राटे की अंग्रेजी बोलने वाले। बातों में काइयाँ कारबारी को भी पानी बना देने म ज्यादा देर नहीं लगती। उन्हीं में से एक को पटाकर इस राजमहल में पठे हैं। एक पसा किराया नहीं! उलटे आते-जाते दरबान सलाम बजाया करता।

लेकिन बड़ा बाजार के गद्दीवाल लोग ठगाने के लिए नहीं बठे हैं। मलकाठ में उनका सिर डालने के लिए बड़ी ऊँची अकल की जरूरत है। इसीलिए नाम से बेनामी बहुत चिट्ठियाँ लिखनी पड़ती। शायद हो कि राजपालजी की नजर ख पर पड़ी। तो पहले वे क के पास नहीं जाएँगे—काम शुरू करेंगे ङ पर। बेनामी चिट्ठी दौड़ा दी आप घ से होशियार हो जाए। फिर तरकीब से घ से जान-पहचान करके वे धीरे धीरे ग की तरफ बढ़ेंगे। उसके बाद जाने कितने प्रकार का महीन जाल बुनकर जो वे क को फसाएँगे यह एक लम्बी रहस्य-कथा की सामग्री है। अगर समय मिला तो भविष्य म वह लिखी जाएगी।

लेकिन उस कहानी से मेरा या दक्षिणेश्वर बाबू का विशेष कोई सम्बन्ध नहीं। हम लोग निमित्त मात्र हैं। उनके कहे मुताबिक हाथ स या टाइपराइटर से कुछेक चिट्ठियाँ लिख देने स ही माहवार मिल जाता। और बहुत सो दो एक बेनामी टेलीफोन। वह भी किया है।

लेकिन दक्षिणेश्वर बाबू? उन्हें काम बहुत था। दिन भर चुपचाप काम करते चले जाते और साहब की पुकार हुई नहीं कि डर से थर थर काँपने लगते।

दक्षिणश्वर बाबू राजपाल कम्पनी के एकाउटेंट थे। मगर तनख्वाह मालूम है? तीस रुपए। सुनकर पहले मैं भी अवाक हो गया था। मुझ तो कहिए अनुभव नहीं था इसलिए उन्नीस रुपए मे घुस पड़ा। यह भी कोई सन्न के लिए नहीं रहना। टाइप में हाथ जरा मँजे कि और कहीं भागूगा। लेकिन दक्षिणश्वर बाबू तो काम जानते हैं। वे क्या चिपके हैं?

दक्षिणेश्वर बाबू को मैं बिल्कुल नही समझ सकता था। उन्हें कभी हँसते नही देखा। जब देखिये गुमसुम बैठे हैं। सारी दुनिया को डर की निगाहों से देखते हैं। न केवल साहब से बल्कि मुझसे यहाँ तक कि दरबान से भी डरते हैं। मानो वे अभी ही पकड़कर पीटेंगे उन्हें जुल्म करेंगे।

और उनके साथ राजपाल के व्यवहार की न पूछिए। एक दिन नाराज होकर बोले 'उल्लू कहीं का! बकरे जैसी दाढ़ी क्या बढ़ गई है? इतना ही नहीं आगे की बातें कलम की नोक से लिखी भी नही जा सकतीं।

दक्षिणेश्वर बाबू ने लेकिन कोई प्रतिवाद नही किया। बल्कि कुत्ते की नाई उनका पाँव पकड़कर काउ-काउँ करने लगे। बोले अब की बार माफ कर दीजिए हुजूर अभी दाढ़ी बनवाकर आता हूँ।

राजपाल साहब का गुस्सा फिर भी न उतरा। दक्षिणेश्वर बाबू को एक चाँटा लगाया और फौरन तेजी से निकल गए।

मैं यह किस दुनिया मे आ पहुँचा? मेरा शरीर थर-थर काँप रहा था। लेकिन जिनके लिए मुझे इतनी फिक्र पड़ी थी देखा उन्हें कुछ भी नही हुआ। सड़क पर जाकर ईंट पर बैठकर दाढ़ी बनाई और वापस आकर अपने गाल पर हाथ फेरने लगे।

मुझसे पूछा देखो तो कैसी बनी दाढ़ी? छः पैसे ले लिये। राजपाल साहब ने जो उन्हें गालियाँ दी और चाँटा लगाया इसे वे भूल ही गए।

अपने कुरते की ओर ताककर उन्होंने कहा 'जब राशन लेने जाओगे उधर से मेरे लिए दो पैसे का साबुन तो लेते आना भया! कुरता दिखा कर कहा, तीन हफ्ते से फीचा नही गया है। पता नही कब साहब की निगाह पड़ जाएगी तो उस बार की तरह कान पकड़कर उठ-बैठ कराएँगे।

दक्षिणेश्वर बाबू को सचमुच ही मैं नही समझ पाता। जब काम करते तो कितना सुन्दर काम करते। लेकिन और समय लगता गूँगा-गूँगा हैं। जैसे किसी कठिन रोग मे बुद्धि और व्यक्तित्व बिलकुल नष्ट हो गया हो।

दक्षिणेश्वर बाबू के घर द्वार नही। साहब के ही यहाँ रात बिताते।

काम-काज खत्म करके मैं जब घर जाता व चुपचाप बैठ रहते। इतना दुःख इतने अभावों में भी मेरी अपनी एक गिरस्ती है। वहाँ अपनी विधवा माँ, अपने नाबालिग बहन भाइयों के साथ साँझ को बातचीत करके भी खुशी होती है। हम सभी मिलकर सपना देखते हैं कि अपना यह दुःख सदा नहीं रहेगा। लेकिन ये दक्षिणेश्वर बाबू ?

उन्हें तो कुछ भी नहीं है। एक जून सत्तू और एक जून दरबानों को दाम देकर रोटी-तरकारी खाते हैं। कहीं जाते-आते नहीं। पूछा है उनसे 'शाम का तो कोई काम नहीं रहता, तब क्या करते हैं आप ?

'करना क्या है क्या तिमंजिले की छत पर जाकर बैठ रहता हूँ। वहाँ स स्टेशन की गाड़ियाँ दिखाई देती हैं—डिपो की तरफ मुँह किए ताकता रहता हूँ।

'एक दिन हमारे घर चलिए।' मैंने न्योता दिया। वे राजी न हुए। कहा 'किसी के यहाँ जाने की मेरी आदत नहीं।'

घर म बातों के सिलसिले में एक दिन मैंने माँ से कहा था, बेचारे दक्षिणेश्वर बाबू का खाना देखकर बड़ी तकलीफ होती है।'

यह सुनकर माँ ने मेरे खाने के साथ सिगरेट क एक डिब्बे म थोड़ी सी सब्जी और दो चार रोटियाँ रख दी थीं। उस रोज हमारे साहब भी बाहर गये थे। दोपहर को मैंने जबदस्ती दक्षिणेश्वर बाबू को अपने साथ टिफिन पर बिठाया। हरगिज तयार नहीं हो रहे थे समझिए कि हाथ पर पकड़कर ही बिठाना पड़ा। पूछिए नहीं किस आनन्द स उस दिन उन्होंने सब्जी खाई ! खाते खाते वे रो पड़े। बोले तुम मुझे प्यार करते हो अभी तो ?'

मेरी आँखों में भी आँसू आ गए थ। आखिर उस केंचुए जैसे आदमी म भी अनुभूति है ! मैंने कहा था, हाँ दक्षिणेश्वर बाबू मैं तो कम-से-कम आपको प्यार करता हूँ।

उसी दुर्बलता के क्षण मे उस दिन उनकी कुछ बातें सुनी। पता

लगा कि वे कलकत्ता यूनिवर्सिटी के ग्रेजुएट हैं।

सुनकर मैं तो चौंक गया। वे शायद मेरे मन की बात ताड़ गए थे। कहा था यकीन नहीं आ रहा है शायद? और झट अपनी कुर्सी से उठे और बिस्तर के नीचे से एक तेल लगा गन्दा लिफाफा निकाल लाए। उसी लिफाफे म से अपना बी० ए० का सर्टिफिकेट निकालकर मेरे ऊपर फेंक दिया। कहा भागते वक्त और कुछ तो नहीं मगर इस सर्टिफिकेट को ठीक ले आया था।

भागते वक्त? मेरी उत्सुकता बढ़ गई। "कहाँ से भागे थे? इसके जवाब म वह केंचुए जैसा आदमी फन उठाकर साँप सा फुफकार उठेगा इसकी कल्पना नहीं की थी। घूँसा तानकर मेरी तरफ बढ़कर उन्होंने कहा इससे तुम्हें मतलब? बित्ते भर का अकाल पक्का छोकरा इससे तुम्हे क्या मतलब?

मैं तो ऐसा हक्का बक्का हो गया कि बोलती बन्द! बात शायद और बढ़ जाती कही एन वक्त पर राजपाल साहब बाहर से नहीं लौट आए होते। मिजाज साहब का भी बिगड़ा हुआ था। उन्हे देखते ही दक्षिणेश्वर बाबू मन लगाकर अपना काम करने लगे मानो कुछ हुआ ही नहीं।

मेरा भी वह दिन बुरा बीता। शुक्रवार राशन का दिन है यह कतई भूल गया। इससे राजपाल साहब बेहद नाराज हुए। बोले तुम लाट साहब हो गए हो याद करके राशन का रुपया माँगते नहीं बना?

मैंने घू न की पर्ची लेकर राशन लाने के लिए चल दिया। लेकिन उसी दिन ऐसी आफत आएगी यह क्या जानता था! दो थैलों म चावल और गेहूँ को ठूँसा और पाव भर चीनी का ठोंगा बाएँ हाथ मे लेकर आ रहा था। जाने कहाँ से एक साइकिल वाला आया और ऐसा धक्का दिया कि मैं तो सड़क पर जा रहा। चीनी का ठोंगा छिटककर नाले मे जा गिरा।

जिन्होंने हावड़ा के खुले हुए नालों को देखा है, वही जानते हैं कि

बहुत-सी नहरें भी उनके आगे बच्चे हैं। चाहें तो उनमें नाव चलाई जा सकती है। उस नाले से चीनी के ठागे का उद्धार हरगिज न हो सका। सोंठ-सी शक्ल लिये लौट आया।

अपनी तकदीर कि राजपालजी फिर बाहर चले गए थे। यह सुना तो दक्षिणेश्वर बाबू बोले 'हाय राम यह क्या हुआ! साहब तो जान ही मार डालेंगे तुम्हारी।

तो उपाय? चीनी तो केवल काले बाजार से ही मिल सकती थी। पाव भर की कीमत आठ आने। महीने के आखिर में पल्ले इतने पैसे कहाँ?

मैंने तो काँपना शुरू कर दिया।

मेरी वह हालत देखकर दक्षिणेश्वर बाबू ने डाँट दिया, 'डर काहे का? चोरी-बेईमानी थोड़े ही की है!

फिर क्या सोचकर उन्होंने अपने बिस्तर के नीचे से सिगरेट का एक टिन निकाला। उसमें से एक अठन्नी निकालकर बोले, जाओ इसी वक्त चीनी खरीदकर ले आओ!

मैं रो पड़ा था। कृतज्ञता से उनके हाथ जकड़ लिए थे। अपना हाथ छुड़ाकर मुंह दूसरी तरफ करके कहा था, 'तुम अभी तक निरे बच्चे हो।'

चीनी लाकर मैं चुप बैठा था। मन ही-मन नसीब को धिक्कार रहा था। सोच रहा था मैं तो मानता हूँ निरुपाय हूँ पढ़ा लिखा नहीं काम नहीं जानता। लेकिन यह बी० ए० पास आदमी तीस रुपल्लियों पर यहाँ क्यों पड़ा है? और यह भागकर आने की जो बात कही, सो कहाँ से?

दक्षिणेश्वर बाबू आकर मेरे पास बैठे। धीरे धीरे मेरे कन्धे पर अपना हाथ रखकर बोले अहा आज बेचारे का दिन बुरा बीता! मैं जानता था। जब तुम मुझे खिलाने लगे तभी समझ गया था कि आज कुछ-न कुछ होगा।

इसी तरह से चल रही थी जिन्दगी। कहने जैसा कुछ न था उसमें।

फिलहाल दक्षिणेश्वर बाबू म कुछ परिवतन देख रहा था। हर दम गुम सुम। हर दम जसे कुछ सोच रहे हो। साहब ने एक दिन उन्हे फटकारा 'उल्लू सूअर कही का!

दक्षिणश्वर बाबू एकाएक बिगड उठे। बोले 'मुझे तुम्हारी नौकरी नही करनी। मैं चला जाऊँगा।

राजपाल साहब ठठाकर हस पड़े। मटके-जसे उनके गोलमटोल चेहरे पर के गोल-गोल चेचक के दाग चकमका उठे— रुपया ? मेरा रुपया ?

दक्षिणेश्वर बाबू फिर केंचुआ हो गए। साँप पर किसी ने मानो नाइट्रिक ऐसिड छिड़क दिया। वे चुपचाप कमरे से निकल आए और अपना काम करने लगे। मैं दग होकर उन दोनों का नाटक जरूर देखता रहा लकिन कुछ पूछ न सका। दूसरे दिन जब काम पर आया तो देखता क्या हूँ कि दक्षिणेश्वर बाबू फूट-फूटकर रो रहे हैं।

सामने जाकर मेरे खड़े होते ही वे रोना ब द करके अपनी आँखें पोछने लगे। बोल पूछो मत भैया कितनी बड़ी भूल की है!

मैं बुद्धू-सा उनकी ओर ताकने लगा। वे अपने-आप ही बोले लगता है ये रुपए मैं कभी नही चुका सकूगा।

आपने साहब से रुपए कज लिय थे क्या ?

उन्होंने इस प्रश्न का उत्तर नही दिया। कहा मैंने जो किया है भया तुम कभी भी अपना वसा सवनाश न करो। दूसरे के पैसे से कभी गाड़ी के पहले दर्जे मे सवार होना।

मैं कुछ भी न समझ सका। उनक मुँह की ओर ताकता रहा। इसके बाद उनसे जो कुछ सुना सुनकर अवाक हुए बिना उपाय न था।

अपनी खडी खड़ी दाढी पर हाथ फेरते हुए दक्षिणेश्वर बाबू बोल मुझे देखकर तुम्हें पगला-पगला-सा लगता होगा। है न ? मगर भाई मैं सदा ऐसा न था। मेरी भी गिरस्ती थी बाल-बच्चे थे। मैं भी कोट पट टाई डाटे ऑफिस जाता था। उस समय पजाब म रहता था। वहाँ क दगे म सब जाता रहा। मेरी नजरों के सामने ही मेरे बेटे बेटी स्त्री

को कत्ल कर दिया। मैं किसी तरह मायरूर स्टेशन पहुँचा। पास में एक पैसा नहीं। एक दिन एक दाना नसीब नहीं।

वहीं स्टेशन पर ही तो राजपाल से मुलाकात हुई। वे भी भागे आ रहे थे। मेरी हालत देखकर इन्हें शायद दया हो आई थी। 'कहा फिक्र न करो मैं तुम्हें लिवा चलूँगा।

गाड़ी में बेहद भाड़। साहब जाने कहाँ से दो टिकट ले आए फस्ट क्लास के। फस्ट क्लास का टिकट देखकर मुझे डर हुआ। मैंने कहा, 'इतने दाम का टिकट ले लिया आपने मेरे पास तो कुछ भी नहीं है।

'राजपाल ने हँसकर कहा हर्ज क्या है, बाद में चुका देना।'

दक्षिणेश्वर बाबू ने कहा ' फिर क्या पूछना, तभी से इनके पास पड़ा हूँ। और ये पटना कलकत्ता कटक और गोहाटी में मारवाड़ियों के साथ जाल फरेब करते फिर रहे हैं।

'मैंने कहा है मैं नहीं रहूँगा। लेकिन साहब सूद समेत पहले दर्जे का किराया वापस माँगते हैं। कहते हैं मेरे रुपए गिन दो और रास्ता लो। जो मिलता है उसमें से पेट काटकर बचाता हूँ। मगर इतने रुपए कहाँ से लाऊ? पहले दर्जे की बजाय अगर तीसरे दर्जे में आया होता तो आज तक इनके रुपए गिनकर चल दिया होता।' उनकी आँखें छलछला उठी थीं मैंने समझा।

बड़ा अन्याय सा लगा मुझे। मेरे पास रुपया होता तो राजपाल की नाक पर रख देता और दक्षिणेश्वर बाबू को वहाँ से चल देने को कहता। मगर अपने पल्ले तो दो रुपए भी नहीं तो इतने!

उनसे मैंने पूछा 'साहब ने क्या बकाया लिखा लिया है?'

उन्होंने गरदन हिलाकर कहा नहीं लिखत-पढ़त में कुछ भी नहीं।

सुनते ही मेरा मुँह रोशन हो गया। कहा 'दक्षिणेश्वर दादा फिर तो कोई खौफ नहीं।

उन्होंने उत्सुकता से कहा 'तुम्हारे दिमाग में कोई सूझ आ गई क्या? मुझे पता नहीं क्या हो गया है दिमाग काम नहीं करता।'

मैंने उत्साह के साथ कहा 'दक्षिणश्वर बाबू आप छाती फुलाकर चल दीजिए। राजपाल आपका कुछ भी नहीं कर सकता।

सोचा था मेरी बात सुनकर दक्षिणश्वर बाबू उछल पड़ेंगे। लेकिन हुआ ठीक उलटा। मारे डर के वे सिहर उठे। दोनों कानों में अंगुली डालकर बोल उठे भगवान-भगवान ! भैया देखना मुझे। मेरा कोई कसूर नहीं। मैं नमकहराम नहीं हूँ। यह नादान लड़का है बिना समझे बोल गया।

उनका हाव भाव देखकर मैं डर गया। आँखें खोलकर उन्होंने गम्भीर होकर कहा जो कहा सो कहा ऐसी बात फिर कभी जबान पर न लाना।

इसके बाद सच ही मैंने उन्हें कुछ नहीं कहा। मुँह बन्द करके राजपाल के जुल्मोसितम वे सहते रहे। लोगों को ठगकर राजपाल ने काफी रुपया बटोरा। उन्हीं रुपयों से शराब पीता है मोटर पर चढ़ता है रात को घर में छोकरियों को लाकर ऐश करता है मगर दक्षिणश्वर बाबू के पास जो कुछ रुपए हैं उन्हें छोड़ने को तयार नहीं।

इतने पर भी दक्षिणश्वर बाबू उन्हें गाली-गलौज नहीं करते। कहते उन्हीं की दया से तो जान बचाकर भाग सका। मैं उन्हें नहीं ठग सकता।

मैंने पूछा रुपए चुकाने में आपको और कितने दिन लगेंगे ? वे हंस कर बोले ऐसे में तो यकीन नहीं होता कि इस जन्म में चुकेगा। सूद भी तो बढ़ रहा है।'

मुझे भी खूब गुस्सा आ गया था। कहा आपकी भी गल्ती है। आपको पहले दर्जे में आना नहीं चाहिए था। जानते तो हैं अपने लोगों के लिए वह सब नहीं है। वह है बड़े लोगों के लिए। जिनके पास इफरात रुपये हैं यही वसे गद्दीदार बेंच पर सोते हुए सफर कर सकते हैं।

ठीक ही कहते हो भाई ! लकिन इन्सान को जब कुमति होती है तो इसी तरह से होती है। यह तो मुझे उसी समय सोचना चाहिए था कि फस्ट क्लास में तो काफी रुपए लगते हैं। दक्षिणश्वर बाबू गम्भीर हो गए।

घर लौटकर भी दक्षिणश्वर बाबू की बात मैं भूल नहीं पाता था। मेरी माँ जब जतन से मेरे लिए चाय-जलपान लातीं मुझे याद आ जाता, ग्रांड ट्रंक रोड के उस विशाल मकान के एक अधेरे कमरे में वे चुपचाप बैठे हैं। कैद हैं। बस एक बार पहले दर्जे के डिब्बे में बैठकर सदा के लिए अपने को गिरवी रखे बैठे हैं। और वह किराया सूद से बढ़ता जा रहा है। पल पल बढ़ने-बढ़ते पावने के रुपए का वह बहुल उनके सारे अस्तित्व को ग्रस रहा है। मगर थोड़ी-सी तकलीफ उठाकर वे तीसरे दर्जे में आए होते तो मजे में आजाद होकर जी चाहे जहाँ घूम सकते थे।

मैंने कहा भी 'आप नाहक क्यों पड़े हैं ? किसकी मजाल है आपको रोककर रखने की ? यह गैर-कानूनी है। गुलाम वाली प्रथा अपने यहाँ से कब की उठ चुकी है।

वे सिर खुजाने लगे और तुरन्त कहा सिर के ऊपर और भी तो कोई है। वे क्या कहेंगे ? जाने किस महापाप से तो यह जीवन बर्बाद हुआ ! अब यह भी ? फिर मैं किसी का पावना गटक जाऊँ ?'

रात को लेटे-लेटे फिर सोचता रहा। दक्षिणेश्वर बाबू के लिए बरबस ही मेरी आँखों में पानी भर आया और फिर एकाएक मन में एक नई युक्ति आई।

दूसरे दिन दफ्तर गया। देखा साहब बाहर चले गए हैं। जो थोड़ा बहुत काम था निबटाकर दक्षिणेश्वर बाबू की खोज में गया। देखा वे अपनी कुर्सी पर नहीं हैं।

उनके कमरे में गया। देखा मेरी कथरी पर बैठकर वे सिगरेट के पुराने डिब्बे से रुपए गिन रहे हैं। मुझ पर नजर पड़ते ही कहा 'अभी भी बहुत रुपए घट रहे हैं भाई !

उसके बाद अचानक रो उठे। सुबह 'नायब' साहब की फटकार सुनी थी। बोले, भई तुम्हें तो बड़ी सूझ-बूझ है। किसी उपाय से मुझे छुटकारा दिला सकते हो ?

उत्तेजना से मेरी छाती उस समय जोर से धड़क रही थी। कहा,

रात एक बड़ा सीधा-सा उपाय मेरे दिमाग में आया है। यहाँ रहकर आप किराये के ये रुपए कभी नहीं चुका सकेंगे। आप बी० ए० पास हैं। अगर किसी स्कूल में मास्टरी भी मिल जाए तो इससे कहीं ज्यादा रुपए कमा सकते हैं। और तब बड़ी आसानी से राजपालजी के रुपए लौटा सकते हैं।

दक्षिणश्वर बाबू की आँखें चमक उठीं। यह इतनी सीधी-सी बात भी उन्हें नहीं सूझी थी कभी। मैंने कहा आखिर आप रुपए पचाना तो चाहते नहीं। लेकिन यहाँ रहने से कर्ज लिये लिये ही आपको मरना होगा। दूसरे जन्म में यह कर्ज और बढ़ जाएगा।

दक्षिणश्वर बाबू ज्यादा देर सोच नहीं सकते। जरा भी उत्तेजना हुई कि उनका सिर घूमने लगता है। अपना सिर थामकर बोले तुम इस वक्त जाओ। मेरे माथे के अन्दर कैसा तो कर रहा है!

मैं चला आया। चला तो आया लेकिन यह क्या जानता था कि उसके बाद ही ऐसा होगा। दूसरे दिन दफ्तर जो गया तो गजब हो चुका था। हाथ के रूल को घुमाते हुए राजपाल चोट खाए हुए बाघ की तरह चहलकदमी कर रहे थे। मुझे देखते ही मानो मेरी गरदन मरोड़ने के लिए उछल उठे। कहा ओ, तो तुम आ गए! लेकिन दूसरा शैतान कहाँ है?

कौन? डर से काँपते हुए मैंने पूछा।

अच्छा! बुद्धू बन रहे हैं! दाक्षिन बाबू कहाँ है? कम्बख्त रात से ही गायब है!

मैं यह नहीं समझ सका था कि ऐसा होगा। और यही कैसे जानता कि यह ऐसा खूँखार हो उठेगा। कहीं मुझे भी गाली-गलौज न करे।

एक तो उम्र कम फिर घर की गरीबी। यह कबूल करने में मुझे शर्म नहीं कि उस क्षण मेरी स्वाभाविक मनुष्यता जाती रही। क्या पता नौकरी चली जाए। इस महीने की तनख्वाह न दे? तो फिर खाना कैसे चलेगा? मैंने गिड़गिड़ाकर मालिक से कहा यकीन मानिए मुझे नहीं

मालूम कि कहाँ गये ?

उन्होंने मेरी तरफ कड़ी निगाहों से देखा। कहा अभी साढ़े नौ बजे हैं। फौरन चल दो। अगर एक बजे तक डाकिन बाबू को लेकर नहीं लौटे तो तुम्हारे नसीब में बुरा लिखा है।

निकला। चलते चलते हावड़ा के बस-स्टण्ड पर आया। कितने लोग निश्चिन्त-से अपने अपने काम पर जा रहे थे। और मैं ? उन सबका सौभाग्य देखकर मुझे ईर्ष्या होने लगी। दूसरे ही क्षण लगा बदन ठंडा होता जा रहा है।

आखिर मैं किस खप्पर में जा पड़ा। इससे तो खाए बिना मरना अच्छा था। मेरी माँ जानती है मैं अपने दफ्तर में काम करता हूँ। अभी तनख्वाह कम है काम सीखने पर बढ़ जाएगी। मगर मैं क्या कर रहा हूँ ? सोचा यहीं से भाग जाऊं। लेकिन राजपाल ? उन्हें मेरे घर का पता मालूम है। जिन्दा न छोड़ेंगे।

लेकिन इतने बड़े कलकत्ता शहर में मैं दक्षिणश्वर बाबू को कहाँ खोजता फिरूं ? अता-पता न हो तो भला इस शहर में किसी को ढूंढ निकाला जा सकता है ? हावड़ा पुल के किनारे खड़ा-खड़ा आँसू बहाने लगा।

कई घंटे नाहक ही चक्कर काटकर आखिर राजपाल के यहाँ लौट गया। अन्दर जाने में डर लग रहा था। उसे मुझ पर विश्वास न होगा शायद मारे-पीटें। किसी प्रकार हिम्मत बटोरकर भीतर गया। कहा नहीं मिला।

नाखुश होकर राजपाल ने जो कहा उसका मतलब यह हुआ कि मैं आदमी नहीं भेड़ा हूँ। इन्सान को अगर अकल हो तो इस कलकत्ता शहर से सब-कुछ ढूंढकर निकाला जा सकता है। लेकिन भेड़ा और बकरा छड़ी की ठोकर खाए बिना कुछ नहीं कर सकता। इसके बाद उन्होंने सिर पर हैट रखा जूते पर ब्रश किया और कहा चलो मेरे साथ। मैं देखता हूँ वह कम्बख्त कैसे नहीं मिलता है।

पहले हम हावड़ा स्टेशन गये। राजपाल ने हर प्लेटफार्म वेटिंग रूम मुसाफिरखाना पत्ता पत्ता देख लिया। उसके बाद गंगा के घाट पर। वहाँ भी छड़ी घुमाते हुए कुछ देर खड़े रहे। फिर पुल पार करके हम स्ट्रैण्ड रोड पहुँचे।

नदी के किनारे किनारे घाटों को देखते हुए आधा घंटे में हम जहाँ पहुँचे वहाँ अखंड हरिनाम चल रहा था। पिछले कई वर्षों से धर्मभीरु मारवाड़ियों ने इस अखंड हरिनाम की व्यवस्था कर रखी थी। शिफ्ट ड्यूटी पर कुछ लोग खोल झाल बजाते हुए घूम घूमकर नाच-गा रहे थे।

दफ्तर भी बना था उसका। आखिर इतने इतने लोगों की खोज-खबर रखना भी तो कम बात नहीं। विराट हंडे में खिचड़ी पक रही थी।

हरिनाम गानेवालों का एक दल पत्तल बिछाकर खाने बैठ गया था। ऊपर चील-कौवे गोल होकर मँडरा रहे थे। यहाँ दक्षिणेश्वर बाबू मिल जाएँगे कौन जान सकता था?

खानेवालों की ओर देखकर छड़ी से इशारा करते हुए राजपाल ने कहा वह रहा।

सच तो। मैंने मात होकर देखा दक्षिणेश्वर बाबू घुकमुक बैठे खिचड़ी खा रहे थे।

लपककर राजपाल ने उनकी गर्दन धर दबाई। दूसरे लोग हो-हो कर उठे। क्या हुआ? बात क्या है? शोर से वहाँ के मैनेजर बूढ़े-से राजस्थानी सज्जन दौड़े आए। राजपाल तब भी कमीज का कॉलर पकड़ कर दक्षिणेश्वर बाबू को खींचकर उठाने की कोशिश कर रहे थे।

मैनेजर ने आकर छुड़ा दिया छि बाबूजी खाते-खाते किसी को कष्ट देना महापाप है।

अप्रतिभ होकर राजपाल ने कहा यह कम्बख्त भाग आया है।

मैनेजर ने धीरे से कहा 'खैर खा लेने दीजिए। आप तब तक मेरे दफ्तर में बैठिए चलिए। दक्षिणेश्वर बाबू से कहा बेटा भोजन हो चुके तो मेरे पास आना।

दक्षिणश्वर बाबू से खाया नहीं गया। तुरन्त उठकर हाथ धोए और चल आए। गुस्से स बोले आप यहाँ क्यों आय ? मैं आपकी नौकरी नहीं करूगा।

राजपाल ने उनकी बातों पर कान नही दिया। मनेजर से पूछा यह आदमी यहाँ कब आया है ?

टूटे चश्मे को आँख पर चढ़ाते हुए बूढ़े राजस्थानी ने कहा कल रात। गरीब आदमी। देखकर बड़ी दया आई। टेम्परेरी नौकरी दे दी हरिनाम की। एक रुपया रोज दो जून खाना।

राजपाल ने कहा यह चोर है। कल मेरे यहाँ से चोरी करके भाग आया है।

मनेजर अवाक हो गए, ऐं! देखकर यह धार्मिक-सा लगा मुझ।

दक्षिणश्वर बाबू कातर होकर चिल्ला उठे बिलकुल फिजूल की बात। मैं चोर नहीं हूँ। इनके यहाँ काम नही करना है इसीलिए चला आया हूँ।

मनेजर ने दक्षिणश्वर बाबू का ही विश्वास किया। कहा मैं इन बातों म नहीं पड़ता। उसने कहा वह आपकी नौकरी छोड़कर चला आया है।

राजपाल की घरवाली भरी आँखें चक चक कर उठी। बोल पडितजी मेरा विश्वास न हो तो इससे पूछ देखिए। उन्होंने मेरी ओर दिखा दिया। सबकी नजर बचाकर कनखियों से मेरी ओर इस ढग स ताका कि अगर वह नजर सका सता तो मेरे पजरे की हड्डियाँ तक गल जातीं।

यह कौन है ? मनेजर बाबू ने पूछा।

यह भी मेरा नौकर है। राजपाल ने जवाब दिया।

मैं क्या करू ? मनेजर बाबू ने मेरी तरफ दखा। पूछा बेटे यह आदमी क्या चोरी करके भाग आया है ?

दक्षिणश्वर बाबू को भी जसे सहारा मिल गया। बोल वही कहे, मैं क्या चोरी करके आया हूँ ?

हे ईश्वर क्या करू मैं ? राजपाल की उन खूखार आँखों को मैंने फिर एक बार देखा। छाती के अन्दर मानो हथौड़ी पीटी जाने लगी। दक्षिणेश्वर बाबू भी टुकुर-टुकुर मेरी ओर ताक रहे हैं। लेकिन मेरे नाबालिग भाई-बहन मेरी विधवा माँ भी मेरी ओर ताक रहे हैं। इस महीने की तनख्वाह भी अभी नहीं मिली। क्या करू मैं ? कोशिश मैंने की थी लेकिन नहीं बना। यह किसी भी प्रकार नहीं कह सका कि दक्षिणश्वर बाबू चोर नहीं हैं। मेरी चुप्पी को उन्होंने राजपाल का समर्थन ही समझा। विश्वास कर लिया कि दक्षिणश्वर बाबू चोर हैं।

लमहे में राजपाल की सूरत बदल गई। खुशी से खिलकर मनेजर से बोले यों आप लोगों को भी पुलिस की चपेट में आना पड़ेगा। रुपए पैसे इसने कहाँ छिपा रखे हैं तलाशी होगी। लेकिन मैं वह नहीं चाहता। अपने नौकर की खता के लिए आप लोगों को झंझट में नहीं डालना चाहता। इसी को ले जाकर जो हो करूँगा।'

झंझटों से दूर भले-से बेचारे मनेजर डर गए—क्या झमेला है ! आप बल्कि इसे ले ही जाइए।

दक्षिणश्वर बाबू इतने में टूट गए। दो एक बार बिड़बिड़ करके बोले मैं चोर हूँ चोर ! उसका गट्टा थामकर राजपाल ने चलना शुरू कर दिया। लज्जा और घृणा से मैं दक्षिणश्वर बाबू की तरफ़ ताक नहीं सका।

दक्षिणश्वर बाबू को ले जाकर राजपाल ने एक कमरे में डाल दिया और बाहर से बन्द कर दिया। कहा तुम्हारी जो दवा है वह मैं लौटते ही दूंगा। सारा दिन बर्बाद कर दिया मेरा।

मुझसे कहा मैं बाहर जा रहा हूँ। लौटने में देर होगी। कोई काम है ?

कहा राशन लाना है।

मुझ पर कुछ खश हुए थे। बोले बांगाल बाबू की पोल के नीचे से राशन लेकर तुम्हें आज अब यहाँ नहीं आना है। कल साथ ले आना।

राजपाल चले गए। मैं वहीं चुपचाप बैठा रहा। भीतर के उस

कमरे को देखकर मेरी जो दशा हो रही थी उसका वर्णन करने की सामर्थ्य मुझमें नहीं है। कुछ ही देर बाद सुना दक्षिणेश्वर बाबू मेरा नाम लेकर पुकार रहे हैं— 'ठाकुर बाबू हैं ? भाई मेरे जरा खिड़की की तरफ आइए।

जाने की बड़ी इच्छा हो रही थी, लेकिन नहीं जा सका। जरा देर में फिर उनका कातर स्वर सुनाई पड़ा— 'दया करके एक बार दरवाजा खोल दीजिए न ! मैं भागूंगा नहीं। सिर्फ बाथ रूम जाऊंगा।

लेकिन मेरे लिए कोई उपाय नहीं था। मेरे पास कुंजी नहीं थी और होती भी तो शायद हिम्मत नहीं होती। मुझसे सहा नहीं जा रहा था। रात भर खाने के लिए उठा। दक्षिणेश्वर बाबू के गले का स्वर तब भी चीखता आ रहा था जरा खोल दीजिए न दरवाजा। पाखाना जाऊँगा। कौन जवाब दे ? इस सूने विशाल प्रासाद से बाहर उनका स्वर कहाँ पहुँचेगा !

दूसरे दिन साढ़े नौ बजे पहुँचा। बाहर वाला दरवान मुझे बुलाने लगा। कल रात उस पगले बाबू ने गले से धोती कसकर खुदकशी कर ली। रात ही पुलिस आकर लाश ले गई।

राजपाल साहब को कोई आँच नहीं आई। पुलिस से उन्होंने कहा था दलिए तो इसके लिए इतना किया मगर तो भी नहीं रख सका। दंगे के बाद जब उसे बचाकर लाया था तभी से उसका दिमाग ठीक नहीं था।

इतने दिनों के बाद आज भी जब उन डरावने दिनों की याद आ जाती है तो मैं चारों ओर देखने लग जाता हूँ दक्षिणेश्वर बाबू आसपास कहीं खड़े तो नहीं हैं। किसी से पचासी रुपए लेकर गाड़ी के पहले दर्जे का सफर भर लिए कभी सम्भव नहीं।

इसके बाद ही विवेकानद स्कूल। राजपाल के राज्य म ज़िन्दगी जब बर्दाश्त से बाहर होती जा रही थी ठीक ऐसे ही समय हावडा विवेकानद इस्टीट्यूशन के हेडमास्टर श्रद्धय श्री सुधांशु शेखर भट्टाचाय ने बुलवा भेजा। कभी उनसे पढा था रोज प्राथना करता रहा कि रामकृष्ण विवेकानद के पावन जीवन के आदश पर अपने जीवन का निर्माण कर सकू। यह चेष्टा, यह स्वप्न मेरा सफल नही हुआ लेकिन फिर भी यह कहूँगा कि हम लोगो का सारा छात्र जीवन एक असीम आनद म ही बीता।

ससार के अनेक छात्रो से हम विवेकानद स्कूल के छात्र भाग्यवान है। हमने किसी पहाडी स्थान के पब्लिक स्कूल म शिक्षा जरूर नही पाई ऐंठ कर अग्रेजी उच्चारण के रहस्य को भी नही हासिल किया लेकिन सुधांशु भट्टाचाय उर्फ हाँदा स पाए।

हाँदा मुझको प्यार करते थ। अर्थाभाव से पढना छोड देने क बाद के अध्याय को व ठीक से जानत न थे। सोचा था मैं बेकार ही बैठा हूँ नौकरी की कोशिश कर रहा हूँ। मुझको बुलवाकर कहा स्कूल म मास्टर की जगह है। तनखाह जो है उससे तुम्हारा अभाव तो शायद न मिटे लेकिन आनद पाओगे।

इस मामूली-सी नौकरी ने किस प्रकार मुझे नर-पशु राजपाल क चगुल स बचाया यह हाँदा न कभी नही जाना। मैंने भी कहने की हिम्मत नही की। डर लगा कही सारा कुछ जानकर उन्हें मेरा नाम लेने में भी लज्जा का अनुभव हो। समझेंगे कि रामकृष्ण विवेकानद की भावधारा पर हम मनुष्य बनाने की उनकी सारी जीवन की प्रचेष्टा बिलकुल विफल हुई। लेकिन उस समय नौकरी मेरे लिए बहुत जरूरी थी

इसलिए नितांत अनिच्छा के बावजूद मुझे बीते दिनों के बारे में चुप रहना पड़ा था।

जहाँ से पढ़े लिखे हों, उसी स्कूल में शिक्षक होने का एक विशेष आनन्द होता है। मैंने उस आनन्द का पूर्णतया उपभोग किया था। एक प्रधान कारण उसका यह था कि कन्हाईबाबू उस समय भी मास्टर थे। और उनके सान्निध्य में निरानन्द भरा कौन रह सकता है? खासकर कन्हाई-दा की बात आज याद आ रही है। कन्हाई-दा को आप लोगों में से कोई नहीं पहचानते। वे नामी नहीं हैं—स्व या छद्म नाम से भी वे परिचित नहीं। फिर भी उनका सान्निध्य मिला, इसके लिए अपने को धन्य मानता हूँ। और अवाक होकर सोचा करता हूँ, मनुष्य के इतिहास में ऐसे 'सामान्य' लोगों को क्या नहीं जगह मिलती।

अतीत की सारी घटनाओं को कालानुक्रम से सजाकर नहीं रख पा रहा हूँ। उस डरावने युग को छोड़कर यहीं कुछ दिन पहले की ओर आ जाने को जी चाहता है। सो वही करूं। विवेकानंद स्कूल के अतीत युग की कहानी को स्थगित रखकर पास के समय में चला आता हूँ।

कामकाज चुकाकर उस दिन शाम को घर लौट रहा था। रास्ते में सुना, कन्हाई-दा नहीं रहे। उसी दिन भोर में जब अपने इस प्रख्यात शहर के सभी सो रहे थे विवेकानन्द स्कूल को वासुदेव को आश्रम की ओर हम सब को झाँकी देकर पानी का कीड़ा चुपचाप फिर पानी में लौट गया।

बस से उतर कर सीधे स्कूल चला गया। जो कभी नहीं देखा था आज वही देखने को मिला। स्कूल की खिड़की दरवाजा सब बंद। और दिन इस समय बड़े रास्ते पर के ऑफिस घर में रोशनी जलती होती थी। दुमंजिले में भी कुछ कमरे में यह देखने में आता था कि कलकत्ते की इलेक्ट्रिक सप्लाई कम्पनी की कुछ बिजली खर्च हो रही है। अभी लेकिन सब अँधेरा था—जैसे जरा देर के लिए मेन स्विच फ्यूज होने से सारा मकान विपुल अँधेरे से भरे एक गमले में डूब गया है।

फिर भी आग नहीं बुझ सकी। जरा देर के लिए कन्हाई-दा को मानो

जने का हाथ और खींच ले जाते पोखर के किनार। बंधे हुए घाट की सीढ़ी पर धप् से बैठ पड़ते और फिर शुरू हो जाती गपशप।

मगर आज साँझ को गप शप कौन करेगा ? हम छोड़कर उनकी सांसे की नाव जानें किस अजाने चन्द्रगाह की ओर चल पड़ी ?

आश्रम म रहा नहीं गया। उठ खड़ा हुआ। देखा मेरे साथी पेटरसन दा ने कोई बात नहीं की मुझ बैठने तक का अनुरोध नहीं किया। और दिन होता तो सब हाँ-हाँ कर उठते— यह नहीं होगा। बस अभी ही उठने की तयारी ?' आज सब पीड़ा म निमग्न थे।

सीधे घर लौट आया और तब से यही सोचता रहा कि क्या खो दिया। कम से-कम एक दिन शनिवार की यह सन्ध्या मेर लिए कन्हाई दा की सन्ध्या हो रहे। आज न तो मन म साहित्य था न राजनीति न अपनीति। आज थे सिर्फ कन्हाईबाबू सर कन्हाई-दा कन्हाईलाल बाग।

मेरे सामने मेज पर कागज पड़ा था। हमारे मामूली से स्कूल की मामूली-सी पत्रिका में कन्हाई दा के तिरोधान का समाचार हो सकता है। हाँ, मुझ या शंकरी-दा को लिखने कह, या फिर अन्त म वे खुद ही लिखने बैठें। उनकी स्वाभाविक साधु भाषा म वे क्या लिखेंगे यह मैं अभी से बता दे सकता हूँ। लिखेंगे—

> परलोक सिधारे कन्हाईलाल बाग। हमारे इस विद्यालय और रामकृष्ण विवेकानन्द आश्रम के साथ बहुत बचपन स मृत्यु के अंतिम क्षण तक सेवा के सम्बन्ध से जुड़े थे। उनसे इन दोनों प्रतिष्ठानों का सम्बन्ध इतना निकट का और अभागी था कि हमारे लिए यह प्रश्न भी अवांतर है कि उनकी क्षतिपूर्ति हो सकती है या नहीं। कन्हाईलाल की मृत्यु के शोक की कोई सांत्वना नहीं यह हमें बस हाय हाय कर सहना पड़ेगा।
>
> मात्र ४८ वष की अवस्था म उन्होंने शरीरत्याग। उन्होंने हमारे ही विद्यालय से प्रवेशिका परीक्षा पास की थी और सन् १९३२ म यहीं शिक्षक के रूप म आए थ। प्रवेशिका परीक्षा पास करने के

बाद व मोटर इजीनियरिंग भी सीखने गए थ, पास भी किया था लेकिन जीवन-वृत्ति क चुनाव के समय उन्होंने यहाँ का शिक्षक होना ही पसन्द किया। सम्भवत इस चुनाव के अतिरिक्त उपाय नहीं था क्योंकि कासुन्डिया अचल के जिन रामकृष्ण विवेकानन्द भावानु प्राणित युवको के द्वारा रामकृष्ण विवेकानन्द आश्रम और विवेकानन्द इस्टीट्यूशन की नीव पडी थी शिशु-सदस्य के नाते कन्हाईलाल उनसे स्वाभाविकतया मिल गए थे। स्वामी विरजानन्द के मन्त्र शिष्य कन्हाईलाल अंतिम दिन तक दश ऋण और देव ऋण चुकाकर गए।

कन्हाईलाल सीधे और सहज आदमी थे। आवेग म आना उन्हे पसन्द नही था। उन्हें लगन से काम करने का अभ्यास था और निराभिमान, आडम्बरहीन व्यक्ति सदा अपने प्रतिष्ठान का सम्मान बचाकर चलते। सादगी और सरल वाकपटुता के अधिकारी कन्हाई लाल का सग साथ उनके मित्र और व्यक्ति के लिए बडा आनन्द दायक था। छात्रगण अवश्य मधुरता क साथ उनके चरित्र की दृढता का भी परिचय पाते थ।

उनकी आत्मा को सदा शाति मिले श्रीरामकृष्ण के चरणो मे यही प्रार्थना है।

लेकिन हम लोगो के पास उनका और भी परिचय है। किसी दार्श निक ने कहा है, 'दुनिया म हम कम-से-कम दो बार राजा हो सकते हैं— एक तो विवाह क दिन दूल्हा बनकर और जीवन के अन्त म, जिस दिन मौत्या राजा मृत्यु क समुद्र की ओर सफर करता है।' राजा बनने का पहला जो सुयोग था उसे तो आजीवन क्वारे रहने का व्रत लेकर कन्हाई दा ने अपनी इच्छा से छोड दिया था। आज व राजा बने। लेकिन एक दिन का सुल्तान—आज की सल्तनत, सिर्फ आज क लिए। बार-बार अपनी धुरी पर चक्कर खाते-खाते यह पुरानी धरती जब अगले साल फर आज की जगह आ जाएगी तब उन्हें याद ही कौन रखेगा?

दुनिया की पक्की बही म जो अपना नाम लिखाना चाहते हैं उन्हें बड़ी कठिन परीक्षा पास करनी पड़ती है। हिसाबी दुनिया एक बूढे सूद खोर की नाई लाल कपडे स बंधी जमा खरच की बही लिए बठी है। अपने सुख अपने दुख अपने पाप अपने पुण्य अपने ग्रहण अपने त्याग अपने सुकम अपने कुकम की पाई-पाई का हिसाब दो। वह बूढा जोड़ेगा घटाएगा गुणा करेगा फिर भाग करेगा। इस लेखा-जोखा के बाद अगर जमा के खाने म कोई बडा सा अक रहेगा तभी उस बही म नाम दज होगा।

लेकिन कमाई दो न क्या वह हिसाब दिया है या देना चाहा है? आज यदि मैं उनकी ओर स वकालत करने जाऊ तो वह सूदखोर ससार बुड्ढा हसकर लोट-पोट हो जाएगा। और सच कहूँ उस हसी को उपेक्षा से उड़ा देने की हिम्मत मुझ भी नहीं। लकिन जिस दिन उनस मेरी पहली भेंट हुई थी उस दिन मैं क्या नहा कर सकता था।

खूब याद आ रही हैं वे बातें। अभी-अभी स्कूल म दाखिल हुआ था। रोज पाँच पन्ना हाथ का लिखा न दिखाने से जो जरूर ही सजा देते थे ऐसे एक शिक्षक का क्लास था। हम कुछ छात्र उदास बठे थे। टिफिन की छुट्टी म लुका छिपी खेल के मोह को छोड़कर बड़े बड़े अक्षरों का बम्बई मेल दौडाकर भी दो पन्ने स ज्यादा नहीं भर सका। जरूरत की घड़ी में आविष्कार की सूझ आती है। उस बुरी साइत म जी म आया काश ऐसी कोई कल निकाली जा सकती जिसस आप ही-आप लिखा चला जाता! फिर लिखावट के लिए खौफ किसे रहता? स्कूल के ब्रिगड्ल मास्टर सब के सब काबू हो जाएँगे।

अपने उपजाऊ दिमाग की जड़ आप ही आप तारीफ करने जा रहा था कि बगल के एक दोस्त ने होठ बिचकाकर कहा ऐसी कल तो साहबों ने बहुत पहले ही निकाली है। यह भी कहा 'उस कल को देखने के लिए साहबों के पास भी जाने की जरूरत नहीं। जरा धीरज

घरके स्कूल के कार्यालय में जाने से ही उनके दर्शन मिल जाएँगे।'

पहले तो दोस्त की बात पर यकीन नहीं आया। लेकिन दूसरे ही दिन देखा कार्यालय में एक अजीबोगरीब मुद्रा में कागज डालकर अपने स्कूल के एक सज्जन नोट पर बिना नजर डाले ही बेखटक लिखते चले आ रहे हैं। अपनी ही आँखों का विश्वास न हुआ। कलम से लिखना और वह भी बिना देखे। कौन हैं ये ? ये मानव-सन्तान हैं या कि कोई शाप भ्रष्ट देवदूत ?

दोस्त ने कहा पहचानते नहीं ? छोटे घर में कभी नहीं देखा ? कैसे पहचानूँ ? छोटे घर में पढ़ने का सुअवसर तो मिला नहीं। मैं जयनारायण बाबू एन॰ के॰ प्राइमरी सेक्शन का घोड़ा उछलकर एकबारगी सुन्दर रोड के हाईस्कूल की घास में मुँह लगा बैठा। दोस्त ने कानों में कहा कन्हाई बाबू सर हैं।

सुनते ही चौंक उठा। साक्षात् परिचय नहीं था। लेकिन महँगाई के उस बाजार में भी बिना किसी मेहनत के कन्हाईबाबू के घण्टे पर सौ में आठ मिलते हैं, यह बहुत बार बच्चों से सुन चुका था। उनकी त्रिकोटी भी सस्ती थी—दस की तीन। मन में मैंने एक माने-तरह कन्हाईबाबू सर की तस्वीर भी आँक रखी थी। सुरक्षित जगह से एक खौफनाक बाघ को देखने की खुशी हासिल कर रहा था। अचानक सुनाई पड़ा ऐ यहाँ सुन जा। सुनते ही समझ गया आया था बाघ देखने और कम्बख्ती से उसके पिंजड़े में ही पैर डाल दिया। दोस्त लोग तो चम्पत हो गए। रोनी-सी सूरत बनाकर अन्दर जाते जाते कहा मैं देखना नहीं चाहता था सर उन्हीं लोगों ने तो मुझे देखने को कहा।

गम्भीर नाद से मशीन पर से कागज उतारते हुए कन्हाईबाबू सर ने कहा 'उहूँ तू क्या देखना चाहेगा देखना चाहता है तेरा सर।

—हँसे पास पड़ी चाय की प्याली से चुस्की ली। उसके बाद कलम में फिर एक कागज लगाया। और मैं उस समय उन सबको मन ही मन बुरा भला कह रहा था जिन जिन का मुँह नींद से जागकर सबेरे देखा था।

क्या नाम है तेरा ?

किसी तरह से अपना नाम बताकर मैं फिर यह साबित करने जा रहा था कि मैं बेकसूर हूँ। चटाचट चटाचट की आवाज हुई। डर से मैंने आँखें बन्द कर ली—हो न हो सर अपना गट्टा पका रहे हैं। लेकिन जब अपने मत्थे गट्टे की कोई अनुभूति न हुई तो मैंने आँखें खोलीं। आँखें खोलते ही अवाक रह गया। दुनिया में मुझे जो सबसे ज्यादा प्रिय था मेरा वही नाम ही मशीन पर के कागज में जगमगा रहा था। आँखों से अचरज की खमार मिटे इसके पहले ही देखा नाम के चारों तरफ फूलदार बार्डर बन गया।

उस बेशकीमत दौलत को लेकर मैं किस गर्व के साथ दोस्तों के पास लौट गया था यह आज भी याद है। यह भी याद है कि उसी क्षण से दूसरे-दूसरे खोमचाक सर मुझ कीड़े-मकोड़े-से लगने लगे। मेरे मन के आसमान में उस समय एक ही नक्षत्र की शोभा थी वह नक्षत्र थे कन्हाईबाबू। युगलबाबू सर हिमांशुबाबू सर यहाँ तक कि हेडमास्टर साहब तक कोई भला लिख सकते हैं कल से ऐसा ? बना सकते हैं ऐसा फूल ?

उसी दिन से फिर उन्हें पकड़ने की प्रतीक्षा करता रहा। एक दिन बासुदे के मोड़ पर उनसे भेंट हो गई। हाथ जोड़कर प्रणाम करके मैंने कहा, सर ऐसा ही फूलदार नाम एक और लिख देंगे ? हाथ की लिखावट वाली बही पर लगाऊँगा। मेरे प्रणाम की उन्होंने परवाह ही न की लेकिन बोले यह कौन-सा कठिन काम है ?

ऐं ! कठिन काम नहीं है ? बासुदे रोड के मोड़ पर अवाक खड़ा रह गया। मेरी आँखों के सामने से ही साबुन से फिंची हाफ कमीज और धोती पहने कन्हाईबाबू अपनी स्वाभाविक तेज चाल से ओझल हो गए।

उस रोज मानो मई महीने की उस शाम को अगर मैं लिखना जानता होता और कोई यदि मुझ से कन्हाईबाबू के बारे में लिखने को कहता तो मैं बलपूर्वक यह कह सकता हूँ कि मेरे हाथों ऐसे एक चरित्र की सृष्टि होती जिसके आगे बुद्ध रामानुज शंकराचार्य सिकन्दर अकबर नेपो

लियन सभी तुच्छ और बेकार से लगते। इनमें से कोई क्या इस तरह बिना दम कल चला सकते थे। और चला भी सकते हो तो क्या ऐसे निश्चित ढंग से एक बालक के अप्रतिभ प्रणाम की उपेक्षा करके कह सकते थे— यह कौन सा कठिन काम है ?

हाय उस समय क्या यह मालूम था कि इसके बाद भी राह-बाट में स्कूल में ट्राम बस में उनसे कितनी ही बार मुलाकात होगी जीवन के प्रभात की स्वप्न माया मेरे ही जीवन के मध्याह्न में हिसाबी संसार की चाप से चौचीर हो जाएगी। ऐसा भी एक दिन आएगा, जब मैं खुद ही कल चलाना सीखूंगा। यह जानूंगा कि टाइपिस्ट नाम से जो जाने जाते हैं, वे दुनिया में सार्थकनामा सफल कहलानेवालों में नहीं आते। जिससे और कुछ भी नहीं हो सकता, वही अन्त में टाइप सीखकर बकसा बजाना शुरू करता है। लेकिन उस समय सोच भी नहीं सका था कि एक दिन विवेकानन्द स्कूल में मास्टर होकर मैं कन्हाई-दा के स्तर पर पहुँच जाऊंगा। स्कूल के उसी कार्यालय वाले कमरे में बठकर कन्हाई-दा कहते कि 'हम हर्षोन्मिमार टाइपिस्ट हैं ठीक-ठीक बनता नहीं। शंकर, तुम टाइप करो, बहुत जल्दी होगा और बहुत अच्छा होगा।'

लेकिन आज रात उन बातों को सोचकर लाभ क्या ? जो जीवन भर हमें हंसाते रहे एक साथ हो-हल्ला करते रहे उनके लिए हाय-हाय करने से उनका परलोकगत आत्मा निश्चय सुखी नहीं होगी। बात-बात में रोने वाले लड़कों को कन्हाई दा बिलकुल नहीं पसन्द करते थे। कहते 'यह रोना धोना मेरी समझ में नहीं आता। हो हल्ला करोगे शोरगुल मचाओगे, यह-वह तोड़ोगे-फोड़ोगे बड़े या मास्टर पीटें तो सिर झुकाए पिटकर दूसरे ही क्षण उछल-कूद करने लगोगे मौका लगे तो फिर तोड़ोगे—इसे कहते हैं लड़का ! जो रिरियाते हैं भिनभिनाते हैं भई मैं तो उनको नहीं समझ सकता।'

मौका मिलने पर मैंने पूछा भी 'अच्छा आपका यह क्या साइस्ता खाँ के जमाने में चावल-सा सस्ता है ?'

अरे यही गट्टा खाया है जभी तो तेरा ब्रेन ऐसा खुला—यह क्या नहीं समझता ? वे ज्यादा आलोचना या सोच विचार की ओर ही न जाते। इसलिए कहा तुमसे बकबक करने से मेरा पेट भरेगा ?

जरा ही फेर में देखना क्या है चौथे दर्जे के लड़के में साथ के मैदान में इटा के विकेट के सामने क्रिकेट खेल रहे हैं। उनके हम उच्च आश्रम के नायकत्ता तरह पुकार रहे हैं कन्हाई आ जा ठाकुरघर में काम है।

मगर कन्हाई भी काहे का सुनने लगा। तब तक एक बॉल को बाउंडरी में मारकर लड़कों से कह रहे हैं अरे इन कलाइयों की ताकत ही और है। सारे दिन बॉल करते थक जाओगे आउट नहीं कर सकते।

नीचे दर्जे से ऊपर जाने पर जब जरा चालाक हुआ तो सबके साथ ही जाना कि कन्हाईबाबू सर दरअसल कन्हाईलाल दास है। प्राइमरी सेक्शन में पढ़ाते हैं और ऊपर के क्लास के लड़कों की शुल्क जमा करते हैं। हर महीने शुल्क जमा करने के दिन ही उनसे हमारा साक्षात् सरोकार होता। हमारे स्कूल के कार्यालय में काउंटर नहीं था। कन्हाई दा एक खिड़की के अन्दर बैठा करते और हम बाहर से खिड़की की राह शुल्क-बही उनके आगे डाल देते। ऐनक के ऐसे से वे उस पर एक नजर डालते लाल पेंसिल का निशान लगाते और उसके बाद रबर की मुहर मारकर बिल का थोड़ा सा हिस्सा फाड़कर लौटा देते।

किसी किसी का बिल हाथ में लेते ही बिगड़ उठते यह बनमुक्त आखिर आदमी नहीं ही बन सका। दर्जा चार में जैसा बन्दर था आज भी ठीक वैसा ही रह गया। परीक्षा शुल्क के खाने में पत्रिका शुल्क पत्रिका शुल्क के खाने में परीक्षा शुल्क बैठा दिया है। देखता हूँ गार्जियन को लिखना पड़ेगा।

जिसे यह बात कहता उस बेचारे का तो चेहरा फक। बिल-बही लेकर वह वापस चला तो कन्हाईदा ने हँसते-हँसते कहा देखना मन ही-मन गाली मत देना नहीं तो चाय पीते वक्त गले में अटक जाएगी। अरे मैं गार्जियन से शिकायत करने नहीं जाता।

पात म खड़े-खड़े यह सब सुनकर मैं फिक्र करके हस पड़ा। उनकी निगाह नहीं बचा सका। बोल 'ए। दाँत निपाडकर हस क्या रहे हो। हुजूर की लिखावट तो वही कौआ-बगुला की टाँग।

बहुत दिना के बाद यह सुनकर कन्हाई-दा के बचपन क एक दास्त ने कहा था कन्हाई का स्वभाव ही ऐसा है। मह से बिगड़ता है लकिन वह गुस्सा कलजे म नही पठना। यही नहीं, हर कुछ में कुछ मजा लिए बिना उसका दाना नही हजम होना। हिमाब न बना सकन पर छोटे बच्चों पर जो लाल-पीला होता है वह भी मजा ही है। तुरत उससे मजा की बात करो कुछ न कहेगा बल्कि खुश ही होगा। जिसका भी शौल शायद हो जितनी भी बनाई हुई घटना या किस्सा हो वेखटके कन्हाई के नाम पर चला दो। इस स्कूल के छात्र क नाते उसक नाम पर मजा की कितनी ही घटनाएँ चलाई गइ।

कन्हाई दा के दास्त ने कहा एक बार का जिक्र है, हमारी क्लास मे ट्रासलशन पूछा गया—महत् लाग साधारणतया महत् परिवार स आते हैं। जानें किसने पल भर भी सोच बिना पीछ स कह दिया—ग्रट मेन कम फ्रोम रिलाएबल सोस।

सभी हा हा हा हस पड़े—लकिन पता नहीं चला कि कहा आखिर किसने। मास्टर साहब ने पूछा चैत्रर साहब क भतीज ये रिलाएबल साहब हैं कौन? साहब ढूँढ नही मिल रहे थ। एसे में अगति की गति कन्हाई तो था ही। सबने हसत-हसत उसी का नाम रख दिया रिलाए बल सोस।

दोस्त जरा रुके फिर कहा मगर कन्हाई बिगड़ता जरा भी न था। खेल-कूद की बात लो। क्या फुटबॉल क्या हॉकी और क्या क्रिकेट उसे छोड़कर कोई भी टीम नही बनती लकिन गाल खान का सारा कसूर हार जाने की सारी जिम्मेदारी सवसम्मति स उसी पर थोपी जाती। वालीबॉल की एक भूल मार का नाम आज भी आश्रम म कनियन स्ट्राक है।

अरे यही गहा खाया है अभी तो तेरा अन ऐसा गुसा—यह क्या नहीं समझता ? वे ज्यादा आलोचना या सोच विचार की ओर ही न जाते। इसलिए कहा तुमसे बकबक करने से मेरा पेट भरेगा ?

जरा ही देर म देखता क्या हूँ चौथे दर्जे के लड़कों के साथ वे मदान म इटों के विकेट के सामने क्रिकेट खेल रहे हैं। उनके हम-उम्र आश्रम क कार्यकर्ता उन्हें पुकार रहे हैं कन्हाई आ जा ठाकुरदर म काम है।

मगर कन्हाई दा काहे का सुनने लगे। तब तक एक बॉल को बाउंडरी म मारकर लडको से कह रहे हैं अरे इन पसाइयों की ताकत ही और है। सारे दिन बाल करते थक जाओगे आउट नहीं कर सकते।

नीचे दर्जे स ऊपर जाने पर जब जरा चालाक हुआ तो सबके साथ ही जाना कि कन्हाईबाबू सर दरअसल कन्हाईलाल बाग हैं। प्राइमरी सेक्शन म पढ़ाते हैं और ऊपर के क्लास के लड़कों की शुल्क जमा करते हैं। हर महीने शुल्क जमा करने के लिए ही उनसे हमारा साक्षात् सरोकार होता। हमारे स्कूल के कार्यालय म काउंटर नहीं था। कन्हाइ दा एक खिड़की के अन्दर बठा करते और हम बाहर स खिड़की की राह शुल्क-बही उनके आगे डाल देते। रुपये वे ऐसे से दे उस पर एक नजर डालते लाल पेंसिल का निशान लगाते और उसके बाद रबर की मुहर मारकर बिल का थोड़ा सा हिस्सा फाड़कर लौटा देते।

किसी किसी का बिल हाथ म लते ही बिगड़ उठते यह मन्मथ आखिर आदमी नहीं ही बन सका। दर्जा चार म जैसा बन्दर था आज भी ठीक वसा ही रह गया। परीक्षा शुल्क के खाते म पत्रिका शुल्क पत्रिका शुल्क के खाते म परीक्षा शुल्क बठा दिया है। देखता हूँ गार्जियन को लिखना पड़ेगा।

जिस यह बात कही उस बेचारे का तो चेहरा फक। बिल-बही लेकर वह वापस चला तो कन्हाई-दा ने हसते-हसते कहा देखना मन ही-मन गाली मत देना नहीं तो चाय पीते वक्त गले म अटक जाएगी। अरे मैं गार्जियन से शिकायत करने नहीं जाता।

पास म खडे-खडे यह सब सुनकर मैं फिक्र करके हस पड़ा । उनकी निगाह नहीं बचा सका । बोल 'एँ । दाँत निपोडकर हस क्या रहे हो । हुजूर की लिखावट तो वही कौआ-बगुला की टाँग ।

बहुत दिनो के बाद यह सुनकर कन्हाई-दा के बचपन के एक दोस्त ने कहा था कन्हाई का स्वभाव ही ऐसा है । मुह से बिगडता है लेकिन वह गुस्सा कलेजे म नहीं पठता । यही नहीं हर कुछ म कुछ मजा किए बिना उसका दाना नहीं हजम होता । हिसाब न बना सकने पर छोटे बच्चों पर जो लाल-पीला होता है वह भी मजा ही है । तुरत उससे मज की बात करो कुछ न कहेगा बल्कि खुश ही होगा । जिसका भी मोल झापट हो जितनी भी बनाई हुई घटना या किस्सा हो बेखटके कन्हाई के नाम पर चला दो । इस स्कूल के छात्र के नाते उसके नाम पर मज की कितनी ही घटनाए चलाई गई ।

कन्हाई दा के दोस्त ने कहा एक बार का जिक्र है हमारी क्लास मे ट्रासलेशन पूछा गया—महत् लोग साधारणतया महत् परिवार स आते हैं । जानें किसने पल भर भी सोचे बिना पीछे स कह दिया— ग्रेट मेन कम फ्रोम रिलाएबल सोस ।

सभी हा हा हा हस पडे—लेकिन पता नहीं चला कि कहा आखिर किसने । मास्टर साहब ने पूछा चैटर साहब क मनीज मे रिलाएबल साहब हैं कौन ? साहब ढूढ नहीं मिल रहे थ । ऐसे म अगति की गति कन्हाई तो था ही । सबने हसते-हसते उसी का नाम रख लिया रिलाए बल सोस ।

दोस्त जरा रुके फिर कहा मगर कन्हाई बिगडता जरा भी न था । खेल-कूद की बात लो । क्या फुटबाल क्या हॉकी और क्या क्रिकेट टन छोडकर कोई भी टीम नहीं बनती लेकिन गोल खान का सारा कसूर हार जाने की सारी जिम्मेदारी सवसम्मति स उसी पर थोपी जाती । वालीवॉल की एक मूल मार का नाम आज भी आश्रम मे कन्हिन स्ट्रोक है ।

विद्यार्थी-जीवन में कन्हाई-दा किस बेंच पर बैठते थे, नहीं मालूम। लेकिन कम जीवन में वह कभी पहली पंक्ति में नहीं आते थे, गोयाकि स्कूल और आश्रम के कामों में जो सबसे झमेले का होता, जिसमें सबसे ज्यादा मेहनत होती, उसी को अपने लिए चुनकर वे लदा होते थे।

दुनिया में एक इस तरह के लोग होते हैं, जो ठीक नमक जैसे हैं। कुछ भी हो, ये सामने नहीं रहते, गोयाकि उनके न रहने से हर कुछ बेस्वाद हो जाता है। फीस्ट में ये सब आटा गूँधते हैं, पूरियाँ निकालते हैं, लेकिन खाने बैठते हैं सबके पीछे। ये खट-खटकर मरते हैं, मगर धन्यवाद नहीं बटोरते। सभा-समिति, उत्सव में ये बेंचें ढोते हैं, कुर्सियाँ लगाते हैं, न्योते की चिट्ठी बाँटते हैं, किन्तु धुला कुरता पहनकर मेहमानों की अगवानी नहीं करते। नाटक में बत्ती के नीचे ओट में बैठकर प्राम्प्ट करते हैं, ढाल-तलवार लेकर राजा नहीं बनते। न तो कोई इन्हें मेडल देता है, न ही अखबारों में छपता है इनका नाम। लेकिन इनके बिना न तो फीस्ट हो सकती है, न सभा हो सकती है, न नाटक हो सकता है। इनके बिना असल में जीवन ही नहीं चल सकता।

लेकिन दुनिया में इससे कुछ आता-जाता नहीं। जो मनुष्य के मन मन्दिर में प्रवेश पाना चाहते हैं, उन्हें निश्चित सलामी तो देनी ही पड़ेगी। और इसीलिए तो डर है मुझे। भूला संसार निर्जीव पत्थर सा पूछेगा 'अजी, जिनके लिए इतना लम्बा लेक्चर झाड़ रहे हो, वे हैं कौन ?'

वे हैं कौन ? मुझे कहना पड़ेगा, वे एम० ए० नहीं हैं, पी० एच० डी० नहीं हैं—महज मैट्रिक पास। टाइप जानते थे, मास्टर चलाना जानते थे, मगर मास्टरी करते थे प्राइमरी सेक्शन में। दुनिया जानना चाहेगी कि आखिर दुनिया को क्या दिया उन्होंने ? मुझे सिर झुका कर चुपचाप खड़ा रहना होगा। फिर क्या करके हो सकता है, पूछा जाए कि कम-से-कम एकाध सुभाष, रवीन्द्र या शरतचन्द्र को पढ़ाया है उन्होंने बचपन में ? मुझको इस पर सिर झुकाए ही रहना पड़ेगा।

लेकिन यह शर्म कन्हाई-दा की नहीं। यह शर्म उनकी है, जो उनसे

पढ़ते थे। यह काम उनकी है जो उन्हें जानते थे करीब से देखते थे। जो जानते हैं कि आज उन्होंने सवेरे क्या खा दिया। क्योंकि इस खोन का सूत्र तो एक ही दिन में खत्म नहीं होगा। जब भी स्कूल में सरस्वती-पूजा होगी मास्टर लोग दौड़ धूप करेंगे लड़के हलचल मचाएँगे—तभी याद आएगा कि उन्होंने किसी का खोया है।

कन्हाई-दा का एक और रूप देखा है दुर्गा-पूजा में। आश्रम की दुर्गा-पूजा का हमारे जीवन में क्या स्थान है, इस वह नहीं समझेगा जिसने देखा नहीं है। आश्रम की दुर्गा पूजा का रूप ही और है। आनन्द का रोमी एक दल चार दिन तक सारा कुछ भुलाकर यहीं पड़ा रहता है। चीन्हे अनचीन्हों की लम्बी टोली आती-जाती रहती। उन्होंने मूर्ति का दर्शन किया या नहीं दर्शन किया तो प्रसाद उन्हें मिला या नहीं बेंचों पर उनके बैठने की जगह है या नहीं या इन शरीर लड़कों ने सब छेंक रखा है—यह सब देखने के लिए ही तो कन्हाई-दा थे।

हमारे आश्रम की एक और खास बात है। पूजा के लिए कभी चंदा नहीं माँगा जाता। लेकिन बहुतेरे लोग खुद ही कुछ दे जाना चाहते हैं। उनके लिए और खर्च का हिसाब किताब रखने के लिए सामने बक्स रख कर जिन्हें हँसते हुए बैठा देखना था—वे थे कन्हाई-दा। ग्यारह बजे रात तक भी उन्हें उसी तरह बैठे देखा है—क्या पता कोई आ जाए!

इसके अलावा भी बहुत-कुछ। सवेरे बादल बाबू सर ने नाराज होकर कहा कन्हाई डेढ़ घण्टे से बैठा हूँ हम चाय नहीं मिली अभी तक। यही तुम लोगों का इन्तजाम है?

चाय बनाने या बाँटने का भार उनका नहीं इसके लिए दूसरे लोग हैं लेकिन तो भी दोष अपने ऊपर लेकर लेकिन गुस्से से बड़बड़ाते हुए वे चाय की खोज में चल दिए।

क्वार के बीचों-बीच किसी सोना बरसती सुबह में जब ढाक की आग मनी ध्वनि से नतरपाड़ा लेन गूँज उठती प्रसाद के लिए हाथ में फूल लिए कामुदे के लोग जब आश्रम के लाल रास्ते को पार करके टालों की

छौनी यात बरामदे में आकर बठेंगे जब पेटरसन-मा लड्डू और चाय बाँटने आएँगे तभी जी में आएगा किसका तो यहाँ होना उचित था कसी तो कमी सी है कौन जस यहाँ नहो है।

सब गडबड कर बठा। कौन सा जोड है और कौन सा घटाव यही नहो ठीक रह रहा है। छानो-दा डाक्टि बाबू य सब मेरे जीवन क कौन-स अक हैं ? जोड ? या मैं निरा अभागा हूँ इसलिए सबका घटाव ही कर बठा हूँ ! हिसाब की इसी कमजोरी से मैं विद्यार्थी-जीवन म कुछ नहो कर सका। लकिन विवेकानन्द स्कूल छोडकर विभूति दा का हाथ थाम यम्बा स्टीमर से गगा पार करके जिस दिन हाईकोर्ट म साहब से मिलने गया था उस दिन मरे हिसाब की बही म सिफ गुणा ही गुणा किया गया था इसम सन्देह नहीं।

उसी क्षण ज मा पुरुप म सान्निध्य स मैंने जिस विचित्र जीवन का प्रत्यक्ष किया था उसी का थोडा सा मैंने अपनी पहली किताब कितने अन जान रे में लिखा है। उस कहानी का जो हिस्सा अलिखा रह गया है उसक प्रकाश म आने का समय अभी भी नहो आया। जिस दिन वह समय आएगा मैं जिन्दा भी रहूँगा या नहो नहीं जानता। लकिन सव शक्तिमान् ईश्वर से मरी प्राथना है कि तब तक वे मुझे जिन्दा रखल। नहो तो मेरी आत्मा मरकर भी शान्ति नहीं पाएगी।

मैं उस आने वाल दिन की प्रतीक्षा मे हूँ। इस बीच कितन अनजान रे को पढकर कुछ शिकायत की तरह बहुतों न पूछा है क्या जनाब अपनी किताब म अपने बरिस्टर साहब क बारे मे ता इतना लिखा लकिन उनकी स्त्री क बार म कुछ भी नहो लिखा, सो क्यो ?

कोई-कोई यहीं रुक गए। दो एक जने ने इससे भी आगे बढ़कर कहा : आपकी किताब पढ़कर तो यह लगता है कि उन्होंने शादी ही नहीं की।

प्रतिवाद करते हुए मैंने कहा : जरा ध्यान से देखें मेरी किताब में उनकी स्त्री का प्रसंग कई बार आया है।

पूछने वाले ने सिर खुजाते खुजाते कहा : 'जी हाँ जी हाँ, याद तो आ रहा है। लेकिन इसी से आप समझिए, एक लेखक के नाते यह आपकी कितनी बड़ी नाकामयाबी है। उन्हें आपने कुछ इस तरह रखा है कि किसी की भी नजर नहीं पड़ी।

कोई-कोई और भी कुछ आगे बढ़कर बोला, हो सकता है आपने जानकर ही ऐसा किया हो। साहब-सूबा का मामला ठहरा न ? उनकी प्राइवेट लाइफ सदा हमारा जैसी क्या नाम है कि पीसफुल नहीं होती।

सुनकर कानों पर अंगुली रखी। जो लिखा है उसके समर्थन में और एक से कहा भी।

लेकिन सच कहूँ ? वास्तविक रहस्य का अब तक मैंने किसी के सामने जाहिर नहीं किया। दरअसल श्रीमती बारवेल को मैं पहचानता नहीं था। जब तक ओल्ड पोस्ट ऑफिस स्ट्रीट के अदालती बाज़ार में मैंने बाबूगिरी की — वहीं बगल में दबाए सुबह-साँझ साहब के यहाँ जाता आता रहा, तब तक श्रीमती बारवेल से मेरा साक्षात् परिचय नहीं हुआ। सुनकर हो सकता है, बहुतों को आश्चर्य हो कि उनसे मेरी पहली मुलाकात साहब के मरने के बाद हुई। स्वामी की मृत्यु के बाद कुमायूँ के प्रवासवास से श्रीमती बारवेल कलकत्ता आई। खबर मिली कि वे पार्क स्ट्रीट में अपनी एक मित्र के यहाँ ठहरी हैं और वहाँ अगस्त की एक वर्षामुखर सन्ध्या में उनसे मेरी पहली भेंट हुई।

लेकिन इस भेंट के बहुत पहले से ही श्रीमती बारवेल की एक काल्पनिक तसवीर मैंने मन में उतार ली थी। कहने में मुझे शर्म नहीं कि वह तसवीर थी धुँधली और उसके चारों ओर था घुमड़ते मेघों का समारोह।

भोर की धूप जसे साहब क हास्यो वल मुखड़े से किसी भी तरह उसका मेल नहीं मिला पा रही थी।

तो खोलकर ही कहूँ। साहब काम से कलकत्ता और मेम साहब पड़ी रानीखेत म। लिहाजा उनके निवास पर—कलकत्ता क्लब के एक नम्बर सूट मे—हम लोगो का रामराज्य। उनकी कलकत्ता की गृहस्थी का मैं और बरा दीवानसिंह—दोनों राजाधिराज थे। बूढ़े साहब मानो हमारी मुट्ठी म। हमारे काम काज और योग्यता पर भी खबरदारी के लिए कोई रह सकता है इसे नौकरी में घुसने के महीने भर बाद ही बिलकुल भूल गया था।

नौकरी म जब आया था तब मैं निरा बालक सा था। साहब होगा तो मेम भी होगी और फिर उन्ह साथ रहना चाहिए यह सब स्वत सिद्ध मेरे दिमाग म नहीं आता था। सो नौकरी म आकर अपना काम करता जाता था। साहब के मेम है या नहीं या है तो कहाँ है—ऐसा स्वाभाविक कौतूहल भी मेरे मन म नहीं जगता था।

कुछ दिनो से काम कर रहा था। खूब याद है एक दिन शाम को साहब ने मुझे बुलाया। बिस्तर पर लटे-लटे वे कहानी की किताब पढ़ रहे थे। लाजो बन्न। पहनावे म एक अनसिली लगी। बोल जाकर अपनी शॉर्टहैंड की कॉपी ल आओ। अपने बेटे और बीबी को एक चिट्ठी लिखाऊ।

ससार की बहुतेरी गोपनतम और महत्त्व की चिट्ठियाँ स्टेनो द्वारा लिखी जाती हैं। मगर स्त्री का डिक्टेशन से लिखाना। उनकी बात सुन कर लाज से (यह चीज उस समय शायद कुछ ज्यादा ही मात्रा मे थी) मेरे दोनों कान टमाटर-जसे लाल हो उठ। कलकत्ता के एक-से-एक जाँबाज स्टेनो की प्राइवेट और कानफिडेंशियल गप सुनने का सौभाग्य मुझे इसी बीच हो चुका था। विलायत से लौटे हुए किसी चौधरी साहब ने अपने पिता को डिक्टेशन से चिट्ठी लिखवाई थी इसकी स्टेनो-समाज में हलचल मच गई थी। और मुझ क्या तो स्त्री के लिए चिट्ठी का डिक्टेशन

लना होगा। सोचा शायद मेरे समझने म गलती हुई। जरूर उन्होंने मझसे पड माँगा है सन्देश लिखेंगे। चिट्ठी का पड और कलम उनकी ओर बढ़ाते ही वे मिटमिटाकर हसते-हसते सहसा चौंक उठे। बोले माई डियर बॉय अपनी बीबी को मैं बहुत प्यार करता हूँ। इस बुढ़ापे म अगर वह मेरे हाथ स निकल जाए तो मेरी क्या दशा होगी सोचा है ?

जवाब सुनकर मेरे तो नीला पड जान की नौबत। कुछ कसूर बन पड़ा क्या! क्या जाने।

साहब ने अब बहुत धीरे धीरे कहा तुम्हें एक गुप्त बात बता दूँ। खबरदार किसी से कहना मत। अपने खतरनाक दुश्मन के सिवाय मैं किसी को भी अपने हाथ स चिट्ठी नहीं लिखता। मेरे हाथ का लिखा दो पन्ना पढ़ने में दुश्मन या तो अन्धा हो जाएगा या उसके दिमाग की नस फट जाएगी।

अब हसते-हसते लोट-पोट होने की बारी आ गई। खयाल ही नहीं रहा कि उनके सहज व्यक्तित्व से सारा भेद भुला बैठा हूँ। पूछा तो क्या आपने उन्हें कभी अपने हाथ से चिट्ठी नहीं लिखी ?

यह न पूछो। श्रीमतीजी से पहल-पहल जब परिचय हुआ तो लन्दन के एक पब्लिक टाइपिस्ट से चिट्ठी टाइप कराता था। एक पन्ना टाइप कराने म एक शिलिंग लगता था। जो हालत थी अपनी। कालज का विद्यार्थी रोज रोज इतना पैसा कहाँ से आए ? लाचारी दूसरा उपाय निकाला। चिट्ठी लिखना और उसे लेकर मैं खुद ही जाता ताकि पढ़ने म कठिनाई हो तो हल कर दूँ। सिर्फ एक बार स्वय न जा सका और उसी बार तो उन्होंने यह धमकी दी कि हाथ से चिट्ठी लिखोगे तो तुमसे कोई सरोकार ही नहीं रखूगी।

हँसी-मजाक के बाद सचमुच ही उन्होंने उस रोज डिक्टेशन दिया था। उस डिक्टेशन से मैंने जो चिट्ठी टाइप की उसम बहुत-सी गलतियाँ हुई थीं लेकिन उतनी भद्दी टाइप की हुई चिट्ठी देखकर भी साहब जरा न बिगड़े बल्कि पी० एस० निशान लगाकर उसके नीचे अपने स जो लिख

दिया मन्तसर म वह हुआ— टाग्प म पन्द्रह बीस गलतियाँ जरूर की हैं लकिन एसा लड़का भारत मर म मिलना मुश्किल है। साथ ही यह भी कहे देता हूँ कि जल्द ही यह लड़का मुझसे भी अच्छा टाइप करेगा।

साहब के बरा दीवानसिंह ने मझ सावधान कर दिया। वह खास कुमायूँ का था। अग्रजी मिजाज का सारा रहस्य उसे मालूम था। इसके सिवाय मेमसाहब को उसने बहुत बार देखा है उनके पास काम भी किया है। उसने कहा और सब चिट्ठियाँ चाहे जसे भी टाइप करो लकिन मेम साहब की चिट्ठी खराब हुई तो भविष्य अ धकारमय समझो। मेमसाहब किसी तरह की गन्दगी काट छट पसन्द नहीं करती। वे साहब जसा बमगोला नहीं हैं—ठीक इनकी उल्टी। साक्षात काली मया। पूजा में चूक होने से खर नहीं। सुनकर मेरा तो डर बढ़ गया। मन में सोचा आखिर रोज रोज रानीखेत चिट्ठी लिखने की क्या जरूरत है? किसी दिन वह बद मिजाज औरत लिख देगी कि तुम एक वाहियात टाइपिस्ट को पाल रहे हो।

दीवानसिंह न कहा मेमसाहब बड़ा गुस्सा!

खूब डाँटती फटकारती हैं शायद? मैंने पूछा।

सुना बक झक नहीं करती। सिर्फ काम पसन्द नहीं आता तो पास बुलाकर मीठे मीठे कहती हैं कल से मत आना।

एक दिन दीवानसिंह से पता चला मेमसाहब क्या तो कलकत्ता आ रही हैं। उस रात कोई दो घटे आँख बन्द करके एकाग्रचित्त से मैंने भगवान स प्रार्थना की 'हे सर्वशक्तिमान सवा रुपया डेढ़ रुपया जो भी कहोगे चढ़ाऊँगा लकिन इस खास विलायती मेमसाहब का कलकत्ता आना जिसमे बन्द हो जाय। हम जिस प्रकार से यहाँ रामराज्य चला रहे हैं उसे अपनी आँखों देख लगी तो लिपस्टिक लगे उसके होठ स्याह सोख्ता जसे सफेद पड़ जाएँगे। उनके सर्वांग का रक्त वेग से दिमाग पर चढ़ जाएगा। उसी हालत म ड्राइग-रूम म बठी कनखियों से मेरा टाइप करना देखेंगी। और यह भी देखेंगी कि पचास बार वेरा मोर-फाइन कह कर मैं साहब की चिन्ता की कड़ी को किस कदर तोड़ दिया करता हूँ।

फिर साहब से कोई मशविरा किए बिना ही मीठा हँसकर मलमनसाहत से कहेंगी कल से मत आना।

मन-ही मन दुःख किया कि दुनिया में ऐसा ही होता है। भगवान सब-कुछ मन के मुताबिक नहीं देते। बुद्धि देते हैं तो रूप नहीं देते और रूप देते हैं तो सुख सुविधा नहीं। नसीब से मुझे साहब मिला तो मेम-साहब मिली देवी मनसा की अवतार। ईश्वर पर बड़ा गुस्सा भी आया। इस साहब को उन्होंने ऐसा मेम क्यों नहीं दी जो बिगड़ती नहीं और बिगड़ती भी तो मीठा हँसकर कम-से कम यह नहीं कहती कि कल से काम पर मत आना।

ऊपरवाले ने उस बार सचमुच ही मुझ पर बड़ी कृपा की। मेरी प्रार्थना मंजूर हुई। रानीखेत से चिट्ठी आई कि श्रीमती बारवेल नहीं आ रही हैं।

उनके न आने की जो वजह मालूम हुई उसमे मेरी इतने दिनों की धारणा को ठेस लगी। पहाड़ से उतर आने की सारी तैयारियाँ हो चुकी। ऐसे में उनका पुराना नौकर बीमार पड़ा। ये हजरत स्वस्थ रहने पर जैसे बंगले प्रभुओं की सेवा करते रहते हैं वैसे ही बीमार पड़ने पर क्या तो उनके सिवाय दूसरे किसी की सेवा नहीं स्वीकार करते।

नौकर की बीमारी के चलते हजार मील दूर रहने वाले पति से मुलाकात बन्द हो गई यह सोचकर मैं खासे अचरज में पड़ गया। लेकिन जिन्हें आश्चर्य होना चाहिए था उनमें मैंने कोई भी परिवर्तन नहीं देखा। वे सदा की भाँति निश्चिन्त होकर मुझे डिक्टेशन देते रहे। उधर से भी जल्दी-जल्दी जवाब आने लगा। उनके उस अरसे की चिट्ठियों में सकड़े नब्बे तो प्यारे नौकर की बीमारी का लम्बा वर्णन और आलोचना हुआ करती।

स्टेनो लोगों का सिटमन साहब के सिर की कसम है मालिक की चिट्ठियों का एक अक्षर भी अपनी बीवी तक से नहीं कह सकते। अपने और अपनी रेमिंगटन मशीन के सिवाय कॉनफिडेंस में और किसी को नहीं

न सकते। अब तक मिसेज साहब का कानून मानता आ रहा था। लेकिन इस मामले ने मुझे इस कदर सोच में डाल दिया कि साहब के मेरे अपने लोकल गार्जियन और एडवाइजर दीवानसिंह से मैंने सब कुछ अर्ज किया।

दीवानसिंह ने अपने पुराने सिद्धांत में थोड़ा-सा संशोधन करके कहा बीमार आदमी को मेमसाहब कुछ नहीं कहती। यह भी सुना कि एक बार अपने बगीचे के माली को उन्होंने जवाब दे दिया था। माली जाकर साहब के आगे रोने लगा। बाप बैरिस्टर उभय संकट में पड़ गए। एक ओर बीवी के अधिकार में दखल देना और दूसरी ओर एक गरीब का आँसू। आखिर कानूनी अक्ल दौड़ गई दिमाग में। निकट बुलाकर फुसफुसाकर कहा जाकर मेम साहब से कहो कि मैं बीमार हूँ। तीस मुहर फीस लेने वाले बैरिस्टर की इस बुद्धि का मन्तर जैसा असर हुआ। नौकरी तो बरकरार रही ही ऊपर से कुछ मेमसाहब का सेवा जतन।

दीवानसिंह से सुने इस किस्म की सरलता को साहब से जाँच देखने की मुझे कभी हिम्मत नहीं पड़ी। लेकिन उसकी कहानी में इतना भरोसा हुआ कि कभी अगर वैसी मुसीबत आए तो अपने सदा चकचक होने वाले शरीर से बचाव होगा।

रानीखेत से साहब की जो चिट्ठी आई थी वह बहुत ही अच्छी तरह से टाइप की हुई थी। चारों तरफ समान हाशिया वैसा ही साफ-सुथरा टाइप। कहीं भी काट-छाँट या रबर का दाग नहीं। चिट्ठी के शुरू में ही लिखा था मेरी पति-परायण पत्नी ने इतने कामों के होते हुए भी अगर टाइप करने का भार नहीं लिया होता तो मैं तुम्हें यह चिट्ठी ही नहीं लिख पाता।

चिट्ठी के अंत में साहब का खुद का लिखा हुआ नोट देखकर तो मेरी आँखों की पुतली टंग गई। साहब ने लिखा था तुम्हारा अभाव बेतरह महसूस कर रहा हूँ। दूसरे किसी को डिक्टेशन देकर वह सन्तोष नहीं आता।

मालिक की प्रशंसा से खुश होना तो दूर रहा मेरा डर ही बढ़ गया। उतना सुन्दर टाइप करने के बाद भी साहब की यह राय। अगर मेम साहब ने किसी तरह देख लिया हो तो मेरे नसीब में आखिरी दुख लिखा है।

लेकिन आसमान के ग्रह-नक्षत्रों की मुझ पर ऐसी कृपा रही कि वे मुझे साफ बचाते गए—उनका नेपथ्य सावधानता से ऐसा हुआ कि मुझे श्रीमती बारवेल के आमने सामने खड़ा नहीं होना पड़ा कभी। किसी-न किसी कारण से उनका कलकत्ता आना हर बार रुक गया।

भगवान के बारे में साहब को किसी भी प्रकार का आग्रह नहीं था। आदमी और धरती में ही इस कदर मशगूल रहा करते कि इसके बाहर की किसी भी अभिज्ञता का उन्हें जरा भी आग्रह नहीं था। और मेम साहब इसके ठीक विपरीत थी। उन्हें भारतवर्ष में धर्म और दर्शन में आनन्द मिला था। इसी को लेकर साहब प्रायः मजाक किया करते। कहते, जब मझको वश में न कर सके तो तुम्हारे देवी-देवता मेरी मेम साहब पर सवार हो गए हैं। अपनी सोचकर मुझे दुख होता है। लगता है अंतिम दिनों मुझे भी संसार छोड़कर कपड़े का एक टुकड़ा कमर में लपेटे आँखें बन्द किए रिवर गंजेस के किनारे रहना होगा।

मेम साहब के कलकत्ता आने के बारे में साहब कहते उनका रानी खेत छोड़कर एकाएक यहाँ आना बड़ा कठिन है।' क्योंकि रानीखेत कुछ ऐसी-वैसी जगह थोड़े ही है गाड्स और गाडेस लोग अपने डेरे जाने की राह में वहाँ ब्रेक जर्नी करते हैं।

इसके सिवाय एक किसी बहुत बड़े साधु को सौ साल के बाद वहीं अंतिम बार देखा गया था। वे कभी भी फिर प्रकट हो सकते हैं। ऐसे में उस वक्त अगर मेमसाहब वहाँ मौजूद न रहें तो क्या हाल होगा समझ सकते हो।

मैंने इन बातों पर जरा भी दिमाग नहीं खपाया। हाँ इतना ही सोचकर खुश हुआ कि अभी उनके कलकत्ता आने की कोई सम्भावना

नहीं। लेकिन यह भी नहीं कि धर्म के सम्बन्ध में साहब की अवज्ञा मुझे खूब अच्छी लगती थी। आदमी को जैसा प्यार करते थे धर्म की वैसी ही उपेक्षा करते थे। एक एक समय ऐसा ख्याल आता कि पूर्व जन्म में कभी कलकत्ता में हेनरी विवियन डिरोजियो होकर जन्म लेकर इन्होंने ही बंगाल के प्रतिभावान युवकों की एक जमात का मोड़ बदल दिया था।

अन्तिम जिस बार वे रानीखेत घूमने गए थे उस बार उन्हें वहाँ बहुत दिनों तक रहना पड़ा था। कलकत्ता में उतना कुछ जरूरी काम नहीं था फिर तिहत्तर साल के पुराने शरीर ने इस उम्र बहाने गोलमाल करना शुरू कर दिया था। लेकिन इस वजह से हाथ-पाँव समेटे चुप बैठ रहना उनकी जन्मपत्री में लिखा नहीं था। छोटी-मोटी बात पर भी हो हल्ला मचाने में मगन रहते। और उन्हीं पाकेट-साइज एडवेंचरों का कौतुक भरा विवरण विस्तार में मुझे रानीखेत से लिख भेजा करते थे।

कलकत्ता में उस समय लगभग कोई काम ही नहीं था मुझे। एक बार सिर्फ चेम्बर में हाजिरी देना और कोई चिट्ठी-पत्तर हो तो रिडाइरेक्ट करके कुमायूँ पहाड़ भेज देना। उस अखंड अवसर में उनकी चिट्ठियाँ पढ़ने में जो आनन्द आता। दूर-दृष्टि नाम की चीज मेरी अक्ल की झोली में शायद कभी नहीं थी। होती तो उन चिट्ठियों को जरूर हिफाजत से रख देता। आज या और भी बहुत दिनों के बाद जब वे सब दिन सुदूर अतीत के पेट से अस्पष्ट मोमबत्ती जैसी टिमटिमाती तो इन पुरानी चिट्ठियों को पढ़कर बड़ा आनन्द आता। लेकिन यह अपनी ही बेवकूफी थी। वर्तमान में ही इस तरह व्यस्त रहा कि भविष्य के लिए सिर खपाने की जरूरत नहीं समझी।

साहब की आखिरी तरफ की चिट्ठी में कुछ नई खबर मिली। लिखा था कि जल्द ही कलकत्ता लौट रहे हैं। मैंने बड़े अचरज से यह गौर किया कि उस चिट्ठी में चिड़िया का गीत सुनने के लिए पाइन के जंगल में दो घंटे चुपचाप बैठ रहना या तितलियों के पीछे-पीछे फुलवगिया में दौड़ना आदि ऐडवेंचर का कोई जिक्र नहीं था। लिखा था कुछ भी काम विचार

न करके लोभी नाय जसा जितनी किताबें घर म थी इन दो महीनों म ही चाट गया। चूकि और कुछ बचा नहीं, इसलिए पत्नी ने सुयोग समझ कर अरविन्द की 'लाइफ डिवाइन खोल दी है।

इन कुछ पक्तियों का महत्त्व मैंने उस समय नहीं समझा। समझा कई दिन के बाद जब कि साहब कलकत्ता लौटे।

कोर्ट से लौटते ही अपने तकिए के नीचे स उन्होंने जो किताब निकाली उसका नाम है लाइफ डिवाइन'। उस दृश्य को मैं आज भी आंखों के सामने देख रहा हूँ। किसी तरह स एक नीली लुगी लपेटकर पांवों म बाथ रूम चप्पल डाल वे सोफे पर बठ गए। पास जो रोशनी जली थी, मैंने उसे जला दी। इशारे से उन्होंने और सब बत्तियों को गुल कर देने को कहा। एनक लगाकर सोफे के एक ओर ओठंगा गए और जसे समाधि मग्न हो गए। पास खड़ा मैं अवाक् देखता रहा, शरीर म कोई स्पन्दन नहीं। केवल नजर जल्दी-जल्दी लाइनों स आए आ-जा रही थी। झालरदार आदम-कद ऊंचा लाइट-स्टण्ड—घर म जोत और अधरे का एक अलौकिक परिवेश रच रहा था। और वे पढ़ने म लीन। मुझे घर जाने को कहना भी भूल गए।

एकाएक टेलीफोन बजा। जाने निमग्नता के किस प्रशान्त महासागर के नीचे से वे निकल आए। उस अलौकिक परिवेश की मादकता से मैं भी न जाने कब खो-सा गया था। टेलीफोन में बात करके मुझे देखकर व चौंक उठे—'तुम्हें क्या मैंने घर जाने को नहीं कहा? आइ ऐम सॉरी माई डियर बॉय।

किताब को बन्द करते हुए कहा आइ मस्ट राइट टु माई वाइफ। उन्ह आज ही लिख देना उचित है।

मैं पड लेकर सामने गया। ऊपर देखते हुए बड़ी देर तक क्या सो सोचते रहे कहा 'नहीं डिक्टेशन स नहीं होगा। अपने हाथ म लिखूंगा।

उस रात अपने हाथ स बड़ी देर तक उन्होंने जो चिट्ठी लिखी मुझे

नही दिखाई। लेकिन मैंने उसे कुछ ही दिन के बाद देखा था। चिट्ठी लिखने वाले तब इस दुनिया म नही रह गए थे। इसके कुछ ही दिन पहले रेलवे रेटस ट्रिब्युनल के एक मामले म मद्रास गए थे और वही के समुद्र-तट के एक नर्सिंग होम म उन्होंने आखिरी साँस ली।

दक्षिण भारत की एक सदी की पुरानी कब्रगाह म मालिक को सदा के लिए सुलाकर दीवानसिंह जब कलकत्ता लौटा तो उसकी आँखों म आँसू थे। हम भी अपने को नही जब्त रख सके थे।

पीली जिल्द की एक किताब मेरे हाथ म देते हुए दीवानसिंह ने कहा 'बाबूजी जब साहब कोर्ट से बीमार होकर नर्सिंग होम म चले आए तो मुझ से यही किताब बग से निकाल देने को कहा। मैंने मना किया मास्टर नो बुक गुड फॉर यू। टेक रेस्ट। लेकिन उन्होंने एक न सुनी। मेरे की टूटी-फूटी अंग्रेजी पर मजाक म कहा 'माई डियर बाय ऐट लीस्ट दट बुक इज गुड फार मी।

अपनी बीमारी के उन कई दिनो म उन्होंने पल भर के लिए भी इस किताब को नहीं छोडा। वही कीमती स्मृति दीवान बड़े जतन से मेरे लिए कलकत्ते ले आया था। वह थी— लाइफ डिवाइन।

उस किताब को मैंने हडप नही लिया। सुना श्रीमती बारवेल कुमायूँ शैल-शिखर से उतरकर कलकत्ता आई हैं। लेकिन अब हम डर गया था। उस बदमिजाज और रोबीली विलायती मेमसाहब के हाथों नौकरी गँवाने का खतरा नही रह गया था। नौकरी खत्म हो जाने से नौकरी चले जाने के डर से हम छुटकारा पा गए थे।

फिर भी पहली मुलाकात के उद्वेग से अपने को किसी भी प्रकार से मुक्त नही कर पा रहा था। क्या पूछें क्या बोलें कौन जाने। और उनके मन की दशा सोचकर तकलीफ भी हो रही थी। इस सुदूर विदेश म स्वामी से मिलने के लिए एक दिन वे अकेली ही इग्लैंड से कलकत्ता आई थी यह बात साहब से सुनी थी। वह विवाह स्वाभाविक तौर पर सुख का होते हुए भी सन्तान न होने से सफल नहीं हुआ। लिहाजा अब

कहाँ ? हुगली के मुहाने पर या बम्बई या कोचीन की बन्दरगाह मे लगर डाले कौन सा जहाज इस पति शोकातुरा अंग्रेज नन्दिनी को फिर से स्वदेश लौटा ले जाने के लिए इन्तजार कर रहा है कौन जाने।

आखिर भेंट हुई। शायद वह अगस्त महीने का अन्तिम दिन था। मौका पाकर वरुणदेव ने कलकत्ता की राह पर मुझ-जैसे असहाय और बेकार बगाली सन्तान को भी अपने प्रबल प्रताप का थोड़ा-सा नमूना बाँटने म दुविधा न की। नतीजा यह हुआ कि जब मैं पार्क-स्ट्रीट म श्रीमती बारवल के मौजूदा डेरे पर पहुँचा तो कपड़े लत्ते भीग गए थे।

दरवाजे के सामने खड़े होकर कॉलिंग बेल बजाने म ठिठक गया। ऐसी हालत म किसी मेमसाहब से मिलना ऐटीकेट के खिलाफ न होगा ? लेकिन दो दिन पहले से तय किए हुए समय पर न मिलना भी अंग्रेजी सभ्यता के व्याकरण के मुताबिक क्षमा के अयोग्य अपराध है। सच ही मुझे रोने को जी चाह रहा था। इतनी दूर आकर लौट जाऊँगा ?

जब लौट जाने का लगभग स्थिर कर लिया तो अचानक दरवाजा खुल गया। स्वयं श्रीमती बारबेल बाहर निकल आईं। उनका शान्त स्थिर मुखड़ा देखकर कौन कहेगा कि यहां कई दिन पहले उन्होंने अपने पति को खोया है। आँख के ऐनक को ठीक करके कहा अरे शंकर ! तुम्हारी ही बात सोच रही थी तुम्हारे ही लिए तो दरवाजा खोलकर आसमान की हालत देखने के लिए बाहर निकल रही थी।

मेरा एक हाथ पकड़कर श्रीमती बारबेल लगभग खींचकर ही मुझे अन्दर लिवा ले गईं। अपना तौलिया बढ़ाती हुई बोलीं जिसके लिए डर रही थी वही हुआ। सारे कपड़े-लत्ते तो भिगा लिए हैं तुमने।

मैं अवाक् हो गया था। यह कैसे जान गई कि मैं ही शंकर हूँ ? मैंने पूछा।

स्निग्ध हँसी हँसकर बोलीं तुम्हारा वर्णन मैंने इतना सुना है कि हावड़ा स्टेशन की भीड़ म भी तुम्हें पहचान लेती।

श्रीमती बारबेल जरा रुकीं। उसके बाद धीरे धीरे बोलीं ' माई डियर

चाय वे तुमको बहुत ही प्यार करते थे।

मैं निर्वाक होकर उनके मुह को ओर ताकता रहा। यह कहने में मुझ शम नही कि मैं अपने आंसू रोक नही पा रहा था। बड़े मामूली से ही कारण से अनुभूति के बन्द द्वार खोलकर आँसू की बूँदें मेरी आँखों क कोने म आ सिमटती हैं। उस दिन भी यही हुआ। लाख किए भी आँसू को मैं रोक नही सका।

तौलिया दिखाती हुई मेमसाहब ने कहा जल्दी से बदन पोंछ लो तुम्हारी सेहत के लिए उनको फिक्र की हद नही रहती थी। कहते थे सुम्ह जरा ठढ लगी नही कि सर्दी हो जाती है।

मन ही-मन मैंने उस दिन दीवानसिंह को खूब लानत मलामत की। ऐसी मेमसाहब से मैं इतने दिनो तक डरता रहा? मन म भगवान् से प्राथना करता रहा कि जिसमे ये कल्कत्ता न आए। हे भगवान!

बहुत-सी बातें हुई थी उस दिन। भीगी कमीज को हैंगर से लटका कर बनियान पहने मेमसाहब के सामन बठा—यानी इसी तरह लाचार बठना पड़ा। उसके बाद उनके हाथ की चाय पीकर कब जो भेद भूल गया पता नही। लगा जानें कब से इन्हे जानता हूँ जान कितने वर्षो से इनसे ऐसी तरह से बात करता हूँ।

उन्होने पति के प्रतिदिन की छोटी से छोटी बात का भी ब्योरा माँगा। मैंने बताया कब जगते थे चाय पीकर कब काम करने बैठते थे दो एनका म से किसे हर समय पहनते थे। फिलहाल चाय ज्यादा पीने लगे थे। जितना मुझ से बना मैंने सब दिन का एक खाका उनके सामने खीच दिया। उसी समय मुझे किताब वाली बात याद आ गई। अपने शान्तिनिकेतनी झोले से निकालकर किताब उन्हे दी। बारिश के छोटा से जरा भीगी-सी उस किताब से साहब की जिन्दगी के आखिरी कुछ दिनो के सम्बन्ध की कहानी सुनकर उनका मुखड़ा उद्भासित हो उठा। धीरे धीरे बोली मैं कभी यह विश्वास नही कर सकी कि नोएल बिल टेक दट ब्लुक सीरियसली'।

पब तक काठ का मारा-सा बठा था पता नही। श्रीमती बारवल ने वनिटी बग से साहब की लिखी हुई एक चिटठी निकाली। उस चिटठी का पहचानन म मुझ जरा भी दर न लगी। उस दिन लाइफ डिवाइन' पढते समय अपने ही हाथो लिखी थी स्टेनो की शरण नही ली थी। लिखा था शायद अपनी उम्र के तिहत्तर साल के बहुतेरे दिन बहुतेरी रातें मैंने निकम्मी किताबें पढकर बर्बाद की। लकिन तुम तो मुझ बहुत दिनो से जानती थी। तुम्हें यह किताब मुझ बहुत पहल देनी चाहिए थी।

चिटठी के अन्त मे पुनश्च— पढत पढते कब जो सबेरा हो गया पता ही न चला। सारी रात में तीस पन्न पढे। और जहाँ तक मैं समझता हूँ इन तीस पन्नो का अथ मैंने समझा है।

मैंने कहा इसे पढकर खत्म करने क लिए साथ मद्रास ल गए थे। खत्म कर सके या नही नही जानता।

पुस्तक के पन्ने पलटते ही श्रीमती बारबेल को अन्त की तरफ एक बुक माक मिला। वह निशान दिखाकर बोली अन्तिम अध्याय के करीब पहुँच गए थे व।

मैंने कोई उत्तर नही दिया। मरी आँखो की ओर देखकर उन्होने क्या समझा वही जानें। गहरा निश्वास छोडकर उन्होने कहा डाट बी डिसेपोइन्टेड माई बाय—हताश मत हो ओ मेरे बच्चे! यही तो हमारा अन्त नही। हम सभी फिर इस पृथ्वी पर आएँगे। वे भी आएँगे। उनके लिए दूसरा कोई चारा नही उन्हें इसी भारतवष म ही जन्म लेना होगा।

जरा थमकर फिर बोली हम सभी उस दिन का इन्तजार करेंगे जिस दिन हम फिर स यहाँ आएँगे।

मैं पुनजन्म म विश्वास नहीं करता। मरने क बाद आत्मा नए रूप म फिर से पृथ्वी पर आती है या नही, इस बात पर नाहक दिमाग खच करके मैंने समय नष्ट नही किया कभी।

मगर फिर भी उस दिन मैं इसका प्रतिवाद नही कर सका। मरे मन की गहराई से किसी न मानो धीम स कहा हुज भी क्या है? मिले

न मिल उम्मीद रखन म क्या नुकसान है ?

प्रसग बन्लकर मैंने पूछा आप क्या अपन देश लौट जाएगी ? बोली नहीं-नहीं हर्गिज नहीं। उस कविता का कडा याद आ रहो है जिसका मतलब है यहीं पदा हुआ हूँ जिसम यहीं मर पाऊ। मेरा जन्म बेशक इस देश म नहीं हुआ है किन्तु जीवन क ये अन्तिम कुछ दिन यहीं बिता कर यहीं मरन म क्या हज है ?

उसके बाद बहुत दिन बीत। शोक की तीव्र अनुभूति स अपना जो सकल्प उन्होंने मेरे सामन प्रकट किया था उस बन्लकर जीवन क सन्ध्या काल म अगर अपन मक लौट जाती तो इस निरीह निःसग नारी को कोई दोष नहीं देता। जबकि सत्तर की उमर हो आई यह अग्रेज महिला आज भी भारत की मिट्टी को पकड हुए है। उस दिन का इन्तजार कर रही है जिस दिन उस पार की पुकार पर सोने का नाव का पाल खोल देना होगा।

और कोई न हो चाहे मैं इससे उपकृत हुआ हूँ। उनके सान्निध्य से मैंने एक अनाघ ऐश्वयमय भुवन का आविष्कार किया। अवाक अचरज क साथ अपने इस सौभाग्य पर आप ही ईर्ष्या की। मगर यह तो और बात है।

शरत् की एक साँझ को हम दोनों कुमायूँ की पहाडी पर आमने सामन बठ थ। मैंने कहा आपको किसी ने नहीं पहचाना किसी ने नहीं जाना। मेरी किताब पढ़कर बहुतों को यह ख्याल हुआ कि कलकत्ता हाई कोर्ट के अन्तिम अग्रेज बरिस्टर ने शादी नहीं की।

मेरे कधे पर अपना सत्तर साल का पुराना हाथ रखकर वे बोली इसम तुम्हारा क्या दोष ? व जब तक जिन्दा थ तब तक तो तुम मुझे जानते भी नहीं थे।

पश्चिम म डूबते हुए सूरज की ओर ताकते हुए उन्होंने धीमे धीमे कहा 'देम माई बॉय तुम अब मुझे जानते हो और कौन कह सकता है कि जब मैं भी तुम्हें छोड़कर जीवन-सागर क उस पार चली जाऊँगी

तो तुम फिर कुमायू की पहाडी पर घूमने नही आओगे और इस चोटी पर खड़े होकर सूर्यास्त देखते-देखते मेरी याद नही करोगे ? हो सकता है रानीखेत के डाक बगले म लौटकर रात को तुम हम लोगा की बात ही फिर लिखने बठ जाओ। *

एक और भी विदेशी महिला की बात बार बार याद आती है।

दुनिया म कुछ ऐसे लोग होते है जो जीवन भर देते ही रहने हैं प्रतिदिन की प्रत्याशा नही करते। क्या जरूरत पर और क्या बिना जरूरत के अपने को नि स्व करके लुटा देने म ही उन्ह आनन्द मिलता है। दूसरों की चिन्ता से उनकी नींद म खलल पड़ती है दूसरों के दुख से उनकी आंखो मे आंसू भर आता है। ससार म ये विरल हैं लकिन भाग्य हो तो इस छीजने वाली गोष्ठी का दुलभ नमूना कभी-कभी देखन को मिल जाता है।

श्रीमती बोनर से हम लोगों ने लिया ही लिया है, लकिन इस विन्दशी भद्र महिला के हम मामूली-से काम भी नही आए।

अपने हृदय का श्रद्धा भरा प्रणाम निवेदन करते हुए कुछ साल पहल मैंने इन पर एक लख लिखा था। (ससार-त्यागी कृष्णप्राण की नेपथ्य कहानी उस समय तक मुझ मालूम नही थी।†) मैंने लिखा था भारत के धमजीवन को विदेशी महिलाओ की दन क बारे म कोई प्रामाणिक

---

* पाठक India Without Sentiment —*Marion Barwell* पढ सकते है।

† इस कृष्णप्राण से उत्तर भारत के प्राय इसी नाम से सुपरिचित सर्वजन श्रद्धेय विदेशी साधक का कोई सम्बन्ध नहीं है।

पुस्तक नहीं लिखी गई है। वह अगर कभी लिखी जाएगी तो मिसेज बानर का नाम उसमें निश्चय ही सोने के अक्षरों से लिखा जाएगा। बहन निवेदिता और मिस मैक्लाउड के नाम के साथ एक ही निश्वास में मिसेज बानर का नाम लिया जाएगा। भारत की प्राचीन धर्म-साधना के प्रति ऐसा ज्वलन्त विश्वास, ऐसी एकनिष्ठ श्रद्धा मैंने किसी में नहीं देखी, नहीं सुनी, ऐसा कि पढ़ी भी नहीं।

इसके बाद ही रॉबर्ट साहब की अविश्वसनीय घटना को अपने प्रत्यक्ष अनुभव से लिखा था और मिसेज बानर को अपना प्रणाम जताकर ग्रन्थ समाप्त किया था।

आज यह स्वीकार करने में शर्म नहीं कि मिसेज बानर से अपने प्रथम परिचय में जरा स्वार्थ की बू थी।

बात बहुत पहले की है। मेरे मित्र शरत् घोष और मेरे दिमाग में विलायत जाने की सनक सवार हुई थी। विलायत में कहाँ जाना है, क्या जाना है, कैसे जाया जाएगा, कुछ भी मालूम नहीं। जाना है बस इतना ही जानता था। क्या दिन, क्या रात, हम दोनों को बस एक ही फिक्र। किसी भी तरह हावड़ा की माया काटकर लवणसागर के उस पार अंग्रेजों की मातृभूमि में कदम रखने से ही हमारी इस-उस लोक की समस्या का समाधान हो जाएगा—यह विश्वास मेरे माथे पर शरत् ने ही भर दिया था।

शरत् मुझसे कहीं चतुर चालाक था। उसने कहा, चलो न हम खलासी होकर चल चलें। लिपटन साहब तो खलासी होकर ही अमरीका गए थे।

मैंने कहा, अरे भया, अब क्या वे दिन रह गए हैं। अब उन कामों में घुस सकना बड़ा कठिन है।

शरत् लेकिन घबराया नहीं। बोला, कुछ-न-कुछ उपाय जरूर सूझेगा। ट्राइ ट्राइ ट्राइ अगेन।

इसके बाद एक दिन वह आकर बोला 'चल, तुझे मिसेज़ बोनर के पास ले चलूँ।

किसके पास ? मैंने पूछा।

मिसेज़ बोनर। बहुत धनी मेमसाहब हैं और उनके कोई नहीं है।

पता नहीं शरत् ने उनसे कैसे जान पहचान की थी। यह भी नहीं मालूम कि यह जान-पहचान थी कितने दिनों की। लेकिन मिसेज़ बोनर के लायडन स्ट्रीट वाले मकान में दाखिल होते समय दरबान ने जैसा लम्बा सलाम किया मैंने उसी से उसकी धाक का अन्दाज़ा कर लिया।

घण्टी बजाते ही चपरासी ने आकर दरवाज़ा खोल दिया। वहाँ मेमसाहब पूजा पर बैठी हैं। आप लोगों को बैठने के लिए कहा है।'

सोफे पर बैठते हुए मैंने कहा किसकी पूजा रे शरत् ? मेरी माता की ?

शरत् ने कहा धत्तेरे की! अरे ठाकुर पूजा! जैसी पूजा तेरी दादी करती हैं।

मैं बैठा बैठा तसवीरें देखने लगा—दीवार पर टँगी एक-से-एक सुन्दर तसवीरें। रंगों की बहार तो पूछिए मत। ज़्यादातर विलायत के प्राकृतिक दृश्य। कमरे के ठीक बीच में फ्रेम में बँधा एक किशोरी का तैल चित्र। काल के व्यवधान से थोड़ा अस्पष्ट हो उठा था। बड़ा ही सरल और निष्पाप मुखड़ा। अनाघ्रात लावण्य से भरा। लेकिन बिल्कुल पुराने ढंग का—हाथ तक कुरते से ढका छाती के पास फूल।

मेरी माता की तसवीर है ? मैंने पूछा।

मेरी बेवकूफी पर शरत् बिगड़ उठा। बोला 'हावड़ा में रहते रहते बिलकुल जंगली बन गया है। मेरी माता की तसवीर होने लगी ? यह मेम साहब की तसवीर है। कम उम्र की। उस समय मेमसाहब पर भारत की धुन नहीं सवार हुई थी।

यानी ?

यानी भारत का भूत सिर पर सवार नहीं हुआ था। अब तो म गात

दिन यही कहती हैं कि जो भी है भारत है। भारत ही दुनिया को राह दिखाएगा। थकी और बबस दुनिया एक दिन सिर झुकाकर इसी प्राचीन सभ्यता से दया की भीख मांगेगी।

लेकिन तू तो इन बातों पर विश्वास नहीं करता? मैंने पूछा।

शरत् ने कहा अरे भई मुझ इन बातों म दिमाग लगाने का वक्त कहाँ है? मुझे विलायत जाकर नट-बोल्ट बनाना सीखना है। फिर तो काफी तनख्वाह वाली नौकरी मिलगी। तब यह सब सोचूंगा।

इतने म मेमसाहब अन्दर आइ हलो शरत्!

बिना किसी भूमिका के मुझे दिखाते हुए शरत् ने कहा इसी के बारे में कहा था। आपकी बात सुनने क बाद से ही आने के लिए छटपटा रहा था। रोज तग करता कब उनके पास ले चलोगे।

मान्साम जरा हँसी। नहाकर चन्दन का टीका लगाया था कपाल पर। कितना फब रहा था! बोली अपना भी कसा नसीब है न्यूकसल का ही कोयला भेजना पड़ता है। अमृत की सन्तानों को ही इस बात की याद दिलानी पड्ती है कि तुम अमृत की सन्तान हो।

इसी बीच बरा चाय ले आया। साथ ही खाने की बहुत सी चीजें—सडविच पटिस केक। उस सामान को हमारी तरफ़ बढ़ाती हुई मिसज योनर बोलीं कितने खुशनसीब हो तुम लोग—यू आर बान इन दी लैंड ऑफ़ रीबथ।

एक ही साथ दो सडविच मुँह म डालते हुए शरत् ने कहा मैं पहले यह सब नहीं मानता था लेकिन अब

मेमसाहब ने उच्छ्वास भाव से कहा 'नहीं-नहीं मेरे बच्चे तुम विश्वास करते थे। यह तुम्हारे रक्त म है—हो सकता है विश्वास अवचेतन मन म सोया पड़ा हो।

उनकी बातचीत म मैं मौन श्रोता बना था। प्यार से मेमसाहब की तरफ ताक रहा था। कितना अच्छा सफर का गाउन! दीवार पर टँगे उस सुन्दर मुखड़े पर ही नियति ने मानो अनुभव के रंग की दो-एक कची

पेन्ट की थी। इसमें पाप का छाया न हुए कपोर की थी तो शायद पुछ गई थी लेकिन प्रज्ञा की प्रभा से मुखड़ा दमक उठा था। चेहरे की प्रत्येक रेखा पर आत्मविश्वास की अटल छाप। उमर भी कितनी! उन-जैसी मेमसाहब तो सिल्क का महीन हाफपैंट पहने मैदान में टेनिस खेला करती हैं। गदरा कुली स्कर्ट पहने मोटर चलाती हुई रेस में आती हैं।

मेमसाहब ने कहा गीता सारी मनुष्य जाति की अमूल्य सम्पत्ति है। मैं रोज पढ़ती हूं और मुझे रोज ही नई लगती है।

श्रद्धा से मेमसाहब की तरफ ताकने का साहस नहीं हुआ। पाँवों पर नजर पड़ी। घी रंग के खूब महीन मोजे—इतने महीन कि लगता, कुछ पहना ही नहीं है। कितने भारी भारी पाँव!

उन्होंने ब्लैक एण्ड व्हाइट के डिब्बे से सिगरेट निकाली। कहा कुछ खयाल मत करना यह बुरी लत विलायत से ले आई हूँ। किसी भी प्रकार से छोड़ नहीं पा रही हूँ।

चाँदी के लाइटर से मेमसाहब ने आग जलाई। उसके बाद कितनी ही बातें हुईं। भारतीय दर्शन के बारे में मैंने शरत् में ऐसा आग्रह कभी नहीं देखा। बातें करते करते साँस हो आई थी। मादाम ने घड़ी की ओर देखा। बोलीं अरे रे, बड़ी देर कर दी तुम्हें।

हम लोग चलने लगे कि उन्होंने फिर रोका। कहा, 'जरा सा रुक जाना मैं ड्राइवर को बुलवाती हूँ। कुछ दूर तक छोड़ आएगा गाड़ी से।

गाड़ी पर बैठकर मैंने शरत् की ओर ताका। ड्राइवर था, बोल नहीं पा रहा था। लेकिन हावड़ा में गाड़ी से उतरते ही उसे पकड़ा। वह बोला, भई माफ करो। मुझे विलायत जाना है। जल्दी भी हो।

मैंने कहा 'यों जो कहो। महिला महीयसी हैं। ऐसा के चरणों की धूल लेने से भी अक्षय पुण्य होता है।'

मिसेज योनर मुझे बेहद भली लगीं। लोभ नहीं सम्हाल सका। शरत् के साथ उनके लाउडन स्ट्रीट वाले मकान में फिर गया। उन्होंने आनन्द से

मिठाया। कितनी बातें की। बोलते-बोलते रुक गइ और कहा आखिर यह सब मैं सुना किस रही हूँ! ये सब तो तुम्हारी ही बातें हैं। और मैं जानती भी कितना हूँ? लेकिन जानने की कोशिश कर रही हूँ। माइ डियर बॉय! यह जो विराट देश है भारत इसके हर तीरथ मे कितने कितने युगो की साधना सचित है।

मैं अचरज से एकटक देखता रह गया हूँ। विदेशी होते हुए भी इतना जानती हैं! ब्लैक एण्ड व्हाइट के टिन से सिगरेट निकालकर सुलगाते हुए मिसेज बोनर ने कहा जीवन को जानना होगा अपने को पहचानना होगा। दुःखों के दारुण अनुभवों म ही जीवन के ईश्वर का आलिंगन करना होगा।

वे कहती गइ। तीनेक सडविच मुह म भरकर शरत् ने कहा ताज्जुब है नवीन भारतवष इसी सत्य को भुला रहा है।

मिसेज बोनर ने हसकर कहा किसने कहा कि भुलाया है? भारत क्या आज भी बुद्ध के चरणों म श्रद्धाजलि नही चढाता? कपिलवस्तु के राजकुमार एक दिन अपने सुख-स्वग को लात मारकर दुःख भरी दुनिया की राह म उतर आए थे इसीलिए न आज भी उनकी पूजा होती है।

एकाएक मेमसाहब पूछ बठी बोधगया देखा है?

हम लोग बोधगया नही गये हैं यह जानकर मेमसाहब ने शीतातप नियन्त्रित दर्जे का टिकट मँगवाया। मैंने कहा पहले दर्जे का टिकट मगवाना ही बहुत था।

मेमसाहब चौंक उठी गाड फारबिड! ऐसे मौसम मे पहला दर्जा! और कही तबीयत खराब हो जाए तुम्हारी!

मिसेज बोनर न भारतवष के लिए दोनों हाथो रुपया लुटाया। पैसे की जरा भी परवाह नही। शरत् ने कहा परवाह हो क्यो? रुपए बहुत हैं मगर खाने वाला कोई नही। न पति है न बाल-बच्चे। किसी तरह मेरा ढोल बठ जाए, तो ठीक है। इशारा दे रखा है।

थोडा रुककर शरत् बोला ऐसा मुहचोर होने से तू जीवन म कुछ

हो न कर सकेगा। सच पूछो तो मेमसाहब तुम्हें मुझसे भी ज्यादा पसन्द करती हैं। जाकर वह अपना अभाव बता, रुपए मिल जाएँगे।

लाज और घृणा से मैंने सिर झुका लिया।

एक दिन आकर शरत् ने कहा, अंग्रेजी भले ही अच्छी न जानता होऊँ मगर दस ठौर बिठा लिया। मेरी बात सुनकर मेमसाहब ने पहले तो कहा, विलायत? वहाँ क्या सीखोगे? एक दिन वही लोग तुम्हारे चरणों में बैठकर सीखेंगे और वह दिन ज्यादा दूर नहीं है।

मगर मैं भी कुछ कम होशियार नहीं। स्वामी विवेकानन्द की वाणी रटकर गया था। कहा, नवीन भारत यूरोप को अपनी वाणी सुनाएगा।

फिर मिसेज बानर ने दुविधा न की। बोलीं, 'अपने जाने की तैयारी करो। रुपए मैं दूँगी। इट इज माइ ड्यूटी एण्ड आइ विल।

शरत् दरिस्ट क्लास में जाएगा, यह सुनकर मेमसाहब दुखी हो गई थीं। कोई चालीस-एक पौण्ड मेरे बचाकर तुम्हें क्या लाभ होगा? और फोन पर टामस कुक से कहकर उन्होंने ही पी० एण्ड ओ० कम्पनी के जहाज में केबिन रिजर्व करा लिया।

शरत् के चले जाने के बाद उससे मिलना जुलना मैंने बन्द कर दिया था। जी कच्चा तो हो गया। चाहता, तो मैं भी विलायत जा सकता था। अपनी बुद्धि के कारण यह अवसर हाथ से गया। लेकिन धीरे धीरे अपने को सम्हाल लिया और एक दिन तीसरे पहर उनके यहाँ हाजिर हुआ। क्या पता था कि उसी दिन रॉबर्ट साहब से परिचय होगा।

मेमसाहब सोफे पर बैठी गीता पढ़ रही थीं। मुझे देखते ही उलाहना देना शुरू किया। बात क्या है? इतने दिनों से तुम्हारी कोई खोज-खबर नहीं। मैं तो चिन्ता से मरी जा रही थी कि आखिर तुम्हें हुआ क्या?

मैंने उनके स्वास्थ्य के बारे में पूछा-ताछा।

मेमसाहब ने कहा, आज आ गए सो अच्छा ही किया। इतने दिनों तक रॉबर्ट से असली मक्खी सकते पकड़ते हाँफ उठी हूँ।

राबर्ट कौन है मुझे मालूम न था। मेमसाहब से ही पता चला एक महीना हुआ कलकत्ता आये हैं। बंगाल चेम्बर के नौजवान अफ़सर। एडिनबरा से पास करके सीधे भारत चले आए हैं। अच्छी नौकरी है भविष्य में और भी तरक्की होगी। बड़े साहब होकर रिटायर करेंगे।

मेमसाहब ने कहा बहुत अच्छा लड़का है। मनसुँधे फूल-सा निष्पाप। लेकिन उमर बहुत खराब है। घर से आने के बाद एक बरस तो बड़ा ही खतरनाक। अगर होशियार न रहा तो उन टाइप करने वाली लड़कियों के पल्ले पड़ जाएगा। रोज शाम को वेलस्ली स्ट्रीट में गाड़ी लेकर खड़ा रहा करेगा उसके बाद किसी लड़की को साथ लेकर होटल की बार में जाकर बैठेगा।

लड़का भला है। अक्ल भी है लेकिन है लड़ाई की देन। इस लड़ाई में इंग्लैंड का ऐसा पतन हुआ है कि सोचते ही रोंगटे खड़े हो जाते हैं। इनके बिगड़ने में कितनी देर लगती है? इसीलिए इसमें भारत के प्रति श्रद्धा जगाने की कोशिश कर रही हूँ। भारत की सभ्यता और संस्कृति को इसे जानना चाहिए। *लेकिन भारत के बारे में कैसा तो एक पूर्वाग्रह लेकर आया है।* ये बातें हरगिज नहीं सुनना चाहता।

बेरा को बुलाकर मेमसाहब ने चाय लाने को कहा। बेरे ने पूछा तीन आदमियों के लिए?

मेमसाहब ने कहा नहीं दो के लिए। मुझसे कहा आज लगता है रॉबर्ट नहीं आयेगा कल जो झगड़ी हूँ उससे!

किन्तु इधर केक का डिब्बा उन्होंने मेरी तरफ बढ़ाया और उधर बाहर मोटर की आवाज हुई। कुछ ही देर में राबर्ट साहब अन्दर आये।

मुँह भर हँसकर मेमसाहब ने कहा बहुत दिन जियोगे अभी अभी तुम्हारी चर्चा हो रही थी।

चर्चा होने से ज्यादा दिन जीने का कौन-सा सम्बन्ध है? सोफे पर बैठते हुए राबर्ट ने पूछा। भारत के ऋषि मुनि जरूर ही इस

सम्बन्ध में कोई वाणी दे गए हैं।'

मेमसाहब बिगड़कर गरज उठीं इसमें ऋषि-मुनि को क्यों खींच रहे हो? भारत के आम लोग अनादि काल से जो विश्वास करते आए हैं मैं तो वही कह रही हूँ।

रॉबर्ट साहब कुछ कहने जा रहे थे लेकिन मुझे देखकर जब्त कर गए। मैंने कोट पैंट में लिपटे उनके छः फुट तीन इंच के शरीर को देख लिया। पीछे की ओर फेरे हुए सुनहले बाल। कटार-सी नाक। खिंची सी आँखें। क्रिकेट के खिलाड़ी-सा दुहरा लेकिन सख्त चेहरा। थोड़ी कलाई से ही अनुमान किया जा सकता था कि कलाईवाला विलायत मक्खन का पुतला नहीं है। सर्ज का दामी कोट। बटन की काज में एक गुलाब का फूल। क्लाइव स्ट्रीट में बहुत-से साहबों को तो देखा। लेकिन ऐसा बदन विरला ही देखा नजर पड़ने पर देखते रहने को जी चाहता है।

मेमसाहब ने कहा अरे, तुम लोगों में परिचय नहीं कराया!

चाय का प्याला बढ़ाती हुई मेम साहब बोलीं 'यह लड़का लेकिन तुम्हारे-जैसा गवार नहीं है। मेरी बात मानना कितना पसन्द करता है!'

पीछे की ओर फेरे हुए अपने बालों में उंगली चलाते हुए राबर्ट साहब ने कहा इस लड़के का भविष्य क्यों बिगाड़ रही हैं इण्डिया को अभी इंजीनियर डाक्टर कारीगर की जरूरत है। नागा संन्यासी अब न भी बढ़ें तो देश का कोई नुकसान न होगा।

मेमसाहब खासी दुखी हो गईं। कहा 'राबर्ट ये आलोचनाएं तो कब की खतम हो गई थीं। सच पूछो तो आज मैं तुम्हारी यहाँ उम्मीद ही नहीं कर रही थी।

रॉबर्ट साहब हँस पड़े। लाड़ में बोले मुझे लेकिन कुछ उम्मीद है। जेब से उन्होंने सिनेमा के दो टिकट निकाले लेकिन समय ज्यादा नहीं है। सिनेमा हॉल पहुँचने में ही पन्द्रह मिनट लग जाएँगे।'

मेमसाहब से इजाजत लेकर मैं उठा। मुझे गेट तक पहुँचाने आई। कहा तुम तो जानते हो, मैं सिनेमा नहीं जाती। फिर भी आज

जाऊंगी क्योंकि उसे अपने दल में खींचना है। भारत का दर्शन भारत का धर्म आदर्श जो सभी धर्मों की अंतिम बात है यह बात उसे समझानी ही पड़ेगी।

मिसेज बोनर के ही यहाँ राबर्ट साहब से फिर भेंट हुई। उन दोनों में खूब आलोचना चल रही थी ऐसे वक्त मैं पहुँचा।

मिसेज बोनर कह रही थी 'यूरोप की सबसे बड़ी भूल तो यही है। प्रचलित चिन्तन के विरुद्ध कोई बात सुनी नहीं कि बिगड़ उठे। कोई समझाने जाए तो समझता है हमला करने आया। हिन्दू धर्म लेकिन आक्रामक नहीं। ढोल पीटकर भीड़ बटोरकर अपनी श्रेष्ठता का प्रचार नहीं करना। गोकि सबके लिए हिन्दुत्व का द्वार खुला है। हिन्दू धर्म की शरण लेने से सारी समस्याएं हल हो सकती हैं। युद्ध से थके हुए यूरोप को बचाने का यही एक रास्ता है।

मेरी मौजूदगी से रॉबर्ट कुछ शर्मिन्दा हुए—एक भारतीय के सामने भारत की निन्दा। यह अनुमान करके मैंने कहा मिस्टर राबर्ट आलोचना करते समय खुलकर बोलना ही ठीक है। भारत के बारे में अपनी राय जताने में आप कोई हिचक न रखें।

हिम्मत पाकर राबर्ट बोले इण्डिया के लिए ऐसी अकारण श्रद्धा मुझे नहीं सुहाती। हजारों-हजार साल से उस सत्य की अंधी पूजा करके इसकी जो दशा हुई है वह तो प्रत्यक्ष ही है।

मेमसाहब दुखी हो उठीं तुम्हारी यह दकियानूसी है रॉबर्ट!

राबर्ट हँसे यूरोप दकियानूस है? विलियम जोन्स विल्सन उडरफ निवेदिता—ये लोग क्या कलकत्ता में पैदा हुए थे?

मेरे ट्यूशन पर जाने का समय हो रहा था। इजाजत लेकर मैं जब चला तब भी आलोचना पूरे जोर पर चल रही थी।

कई दिन के बाद फिर मेमसाहब के यहाँ गया। गेट से अन्दर जाने लगा कि दरबान ने कहा अन्दर न जाइए रॉबर्ट साहब को चेचक

हुआ है। अजीब छूत की बीमारी है।

हमने भर बार फिर गया। मेमसाहब अन्दर लिवा गईं। रॉबर्ट लेटे-लेटे किताब पढ़ रहे थे। हमारे पैरों की आहट पाते ही किताब बन्द कर दी। तमाम चेहरे पर काले-काले दाग। लेकिन चेहरे का वह निष्कलुष सौम्य नष्ट नहीं हुआ था।

मेमसाहब ने रॉबर्ट के बालों में उँगली चलाते हुए कहा पूछो मत ऐसा जिद्दी है। उस रोज तुम्हारे जाने के बाद झगड़कर यह चल दिया। गया सो गया—पता ही नहीं। हार मानकर मैं ही गई पार्क स्ट्रीट—मादाम मरिल के गेस्ट हाउस में। जाकर देखती हूँ इसकी यह हालत है। गनीमत रही कि मैं जा पहुँची। उन लोगों ने तो एम्बुलेंस के लिए फोन कर दिया था। उफ उस हालत में कम्यूनल अस्पताल भेजने से क्या होता भगवान् जानें। ऋषि मुनियों का आशीर्वाद कहो।

रॉबर्ट अब की जरा हँसे। अपनी चादर को बदन पर जरा खींचकर बोले 'फिर ऋषि मुनि ?

मेमसाहब ने कहा 'तुम्हारी बीमारी में जान-बूझकर ही ये बातें नहीं उठाईं। मगर सदा के लिए तो मुँह नहीं सी लिया है।

बेरा फल का रस दे गया। रॉबर्ट का सिर सँभालकर मेमसाहब ने धीरे धीरे पिला दिया। बड़े जतन से तौलिया से मुँह पोंछ दिया।

रॉबर्ट ने पाँव हिलाते हुए कहा टूरिस्टों के लिए इंडिया में देखने को बहुत चीजें हैं। मंदिर वास्तुकला, मूर्तिकला, वाराणसी अजंता, इलोरा सारा दक्षिण भारत।'

सिर्फ मन्दिर ? मेमसाहब ने पूछा। कहा वह तो नारियल का छिलका है। भीतर के सत्य का स्वाद नहीं लिया तो कुछ भी नहीं।

बीमारी में कहीं उत्तेजना न बढ़ जाए इस डर से मैं और मिसेज मानर उनके कमरे से निकल आए। मेमसाहब ने कहा हिन्दू धर्म से इसे मानो खासी-चिढ़ है। मगर मैं भी छोड़ने वाली नहीं। वह मेरे लिए मानो एक चुनौती है। मैं भारत के चरणों में इसका सिर झुका करके ही

रहूँगी। इस बीमारी में ही घर पकड़ कर मैंने उसे थोड़ी संस्कृत थोड़ी बंगला सिखाई है।

इसके बाद सेहत सुधारने के लिए रॉबर्ट को लेकर मिसेज बोनर पहाड़ पर चली गई। मैं उन लोगों को हावड़ा स्टेशन पर पंजाब मेल में एयर कंडीशन कोच में सवार करके लौटा।

डिब्बे से बाहर निकलकर मेमसाहब मुझसे बोली जाने की कोई इच्छा नहीं थी मेरी। लेकिन रॉबर्ट का स्वास्थ्य ठीक न रहेगा तो धर्म में उसकी मति नहीं होगी।

पहाड़ से लौटने पर मेमसाहब ने चिट्ठी लिखकर मुझे मिलने को बुलाया। गया देखा रॉबर्ट साहब भी बैठे हैं। मेमसाहब ने मुझे कुछ किताबें दी। किसी आश्रम से गई थी घूमने। वहीं से मेरे लिए खरीदी थी। हम दोनों आलोचना करने लगे। राबर्ट ने उसमें कोई दिलचस्पी नहीं दिखाई। सिगरेट का धुआँ उड़ाते हुए हवाई मेल से आया हुआ लंदन टाइम्स पढ़ने लगे।

कुछ देर में रॉबर्ट ने घड़ी की तरफ ताका। पूछा तो तुम स्वीमिंग क्लब नहीं जाओगी?

मेमसाहब हँसी। बोली *तुम्हें तो मालूम है राबर्ट अपनी वह तबीयत नहीं।* क्लब जाकर तैरने में मुझे कोई आनन्द नहीं आता। फिर मुझे पूजा भी करनी है।

रॉबर्ट ने उस दिन मुझे लिफ्ट देना चाहा। कहा स्वीमिंग क्लब जाते हुए मैं आपको एस्प्लनेड में उतार दूँगा।

मेमसाहब ने कहा हाँ यह बड़ा अच्छा रहेगा।

रॉबर्ट आप ही गाड़ी चलाते। मैं उनकी बगल में बैठा। मेमसाहब ने मुझसे कहा *'फिर आना।* और राबर्ट से बोलीं *'लेकिन नाराज न* होना।

गेट से गाड़ी बाहर रास्ते पर पहुँची कि रॉबर्ट ने मेरी ओर जरा तीखी निगाह से ताका। लेकिन भद्रता के साथ कहा अगर कुछ खयाल

न करें तो एक बात पूछूं ?'

'बेशक !' मैंने कहा।

स्टीयरिंग पर हाथ रख हुए रॉबट ने गम्भीर होकर पूछा, 'कितने दिनों से आ रहे हैं यहां ?'

करीब एक साल से।

किस लिए आते हैं ?'

मेमसाहब से धर्म की आलोचना करने के लिए।

रॉबट ने मेरी हथेली दबा ली 'प्लीज डोंट टेक इट अदरवाइज। बुरा न मानें, मैंने सुना है आप महत्वाकांक्षी हैं। नौकरी चाकरी की कोशिश कर रहे हैं। लेकिन आप ही कहें, अपना स्वार्थ साधने के लिए किसी भद्र महिला में धर्म का कुसंस्कार भरना क्या उचित है ?

'अच्छा तो यह इरादा था !' कोई जवाब नहीं दिया। क्रोध और अपमान से मैं चौरंगी रोड पर उतर पड़ा और वहीं अंतिम हुआ। फिर किसी दिन लायडन स्ट्रीट नहीं गया। जहां मेरी चाह नहीं वहां जाना मेरे स्वभाव के बाहर है।

मेमसाहब से भेंट मुलाकात नहीं हुई। दुनियादारी के झमेले में उलझ गया। हाईकोर्ट के बैरिस्टर के यहां नौकरी मिल गई और एक अजाने विशाल जगत् में खो गया।

बहुत दिनों बाद हाइकोर्ट के ही काम से एक दिन 'बंगाल चेम्बर' गया था। एकाएक रॉबट साहब की याद आ गई। उनके आरबिट्रेशन विभाग के बड़े बाबू से पूछा रॉबट साहब यहां किस ओहदे पर हैं ?'

बड़े बाबू ने मेरी ओर ताका आप क्या उन्हें जानते थे ?

जी कभी था थोड़ा बहुत परिचय।

उन्होंने तो संसार त्याग दिया।

चौंक उठा। रॉबट साहब ने संसार त्याग दिया ! वह जबदस्त खबर मुलम अविश्वासी रॉबट साहब नौकरी छोड़कर संसार की माया

छोड़ ईश्वर की खोज में चल दिए !

बड़े बाबू ने कहा साहब क्या नहीं आ सकता किसका मन कहाँ जाकर रमेगा ! वरना रॉबट साहब जैसा साहब ! क्या बताऊं हमारे बाबू दा ने कमरे में राधाकृष्ण की तसवीर टांग रखी थी। ऐसे कड़े थे कि उन्हें पाँच रुपये जुर्माना कर दिया। और वही चौबीस पचीस साल का काला पहाड़ नौजवान आखिर हिन्दू हो गया। यह कैसे सम्भव होता है वही जानते हैं !

मेरी आँखों में एक ही साथ मिसेज बोनर और रॉबट साहब की तसवीर झूल गई। रॉबट हिन्दू धर्म में विश्वास करने वाले नहीं और मेमसाहब बिना विश्वास कराए मानने वाली नहीं। रॉबट ने कहा था *और कोई होता तो मैं बातें कान में सुनता तक नहीं—चूंकि तुम कह रही हो इसीलिए।*

श्रद्धा से मेरा हृदय भर गया। घर लौटते ही मिसेज बोनर को एक लम्बी चिट्ठी लिखी—आप ही थीं कि यह असम्भव सम्भव हुआ। आपने रॉबट साहब-जैसे आदमी को हिन्दू धर्म का पुजारी बना छोड़ा। आप *मेरा प्रणाम स्वीकार करें। भारतवर्ष और चाहे जो भी हो अकृतज्ञ नहीं* है। आधुनिक भारत के नवजागरण पुनरुत्थान के इतिहास में सिस्टर निवेदिता मदर और मिस मक्लौड के साथ आपका भी नाम सोने के अक्षरों में लिखा जाएगा।

मेमसाहब से इसका कोई जवाब नहीं मिला। जवाब की उम्मीद भी नहीं की थी। मैंने स्वयं प्रेरित होकर भारतीय संस्कृति समिति के वार्षिक *अंक में उन पर एक लम्बा लेख* लिखा। उनके चरणों में प्रणाम निवेदन किया। उनसे अपने लम्बे परिचय का इतिहास देते हुए मैंने लिखा मेरे *अन्तिम पत्र का उन्होंने जवाब नहीं दिया लेकिन उसका मुझे कोई खेद* नहीं।

खेद की बात असल में उस दिन उतना सोच विचारकर नहीं लिखी थी। उस समय क्या पता था कि उनसे भेंट नहीं ही हुई होती तो मेरे

लिए अच्छा था। नाहक ही दुख नहीं उठाना पड़ता।

जानता हूँ मनुष्य के इस संसार में सब कुछ सम्भव है। जीवन मरण, चढ़ाव-उतार, जीत-हार, हँसी-रुदन के बीच ही संसार के रथ का पहिया घूमता है। फिर भी जिस दिन दिल्ली मेल में मिसेज बोनर से भेंट हो गई मैं उस दिन अपने आँसू रोक न सका।

यह बात बहुत दिनों के बाद की है। तीसरे दर्जे का टिकट लेकर मैं दिल्ली मेल में बैठ गया। गाड़ी जब बर्दवान में रुकी तो मैं उतरकर प्लेटफार्म पर खड़ा हो गया। मिठाई वाले पर नजर पड़ी। वह चार पहिये की ठेलागाड़ी में गरम पूरियाँ तल रहा था। और एक मेमसाहब सामने पत्ते के दोने में पूरियाँ खा रही थी। दूकानदार ने पूछा मिठाई मेमसाहब?

पत्ते से पोंछकर तरकारी खाते हुए मेमसाहब ने कहा नहीं।

मैं चौंक उठा। आवाज पहचानी-सी। मिसेज बोनर?

इधर गाड़ी ने सीटी दे दी। दौड़कर अपने कमरे में घुस जाना पड़ा। आसनसोल पहुँचते पहुँचते बहुत रात हो गई। गाड़ी में भीड़ भी बढ़ गई। मेमसाहब की खोज नहीं ले सका लेकिन उनकी पूरियाँ खाने वाली तसवीर मन में उथल-पुथल मचाती रही। दूसरे दिन सवेरे मुगलसराय उतरा। मेमसाहब को ढूँढ निकाला। तीसरे दर्जे में एक बेंच के कोने में उदास बैठी थी। पता नहीं कब से बालों का कोई जतन नहीं हुआ। आँख के कोनों में कालापन। इन्हीं कुछ वर्षों में उम्र मानो पन्द्रह साल बढ़ गई थी। कपड़े-लत्ते पर भी नजर पड़ी। ऊपर का गाउन शायद बरसों की साथी वह भी फट चला था।

भीड़ के मारे अन्दर पहुँचना कठिन था। इसलिए खिड़की से ही कहा गुड मार्निंग मादाम!

मेमसाहब मेरी ओर टुकुर-टुकुर ताकती रहीं। मैंने कहा पहचाना नहीं? मैं शंकर हूँ। रॉबर्ट साहब के संसार छोड़ जाने का समाचार सुनकर मैंने आपको आखिरी चिट्ठी दी थी।'

मेमसाहब ने अब पहचाना। लेकिन ज़रा भी लज्जित न हुई। चेहरे पर रोष-सा लाकर बोलीं— "शर्म आनी चाहिए थी! कम-से-कम तुमको! मैंने कभी तुम्हारे मित्र के लिए और तुम्हारे लिए बहुत-कुछ किया था। चिट्ठी लिखकर अपमान करने का क्या अधिकार था तुम्हें?"

गाड़ी के लोगों ने मुझ पर गौर किया। मैं कुछ समझ न सका, इसलिए उनकी ओर ताकता रह गया। क्रोध भी हो आया था। मैंने कहा, "आपसे ऐसे व्यवहार की उम्मीद न थी। बहुत कुछ तो कह रही हैं, लेकिन शर्मिन्दगी का कौन-सा काम किया मैंने?"

मेमसाहब गुस्से से तुनककर उठीं, "ओफ! शर्म है भी तुम लोगों को कि नहीं? आदमी की कमज़ोरी का लाभ उठाकर तुम लोग उसका सस्ता माल कर सकते हो।"

बड़ी मुश्किल से अपने को शान्त किया था उस दिन। मारन ने उनसे अनेक उपकार पाए हैं। एहसान की दुहाई देकर मैंने मन को शान्त किया। फिर भी जाते-जाते कहा, "मैंने आदमी बहुत देखे हैं, बहुत देश घूमा हूँ, मगर आपकी मिसाल नहीं।"

मैं अपने डिब्बे में जाकर चढ़ने लगा कि नज़र पड़ी, मेमसाहब बुला रही हैं। लोग-बाग मेरी ओर देखकर मुस्करा रहे हैं। पता नहीं किस बुरी साइत में उनसे मुलाकात हुई!

लौटा। जाकर पूछा, "क्या कहना है?"

मेमसाहब के क्रोध पर इस बीच किसी ने मानो पानी डाल दिया। बोलीं, "नाराज़ हो गए? आइ एम सॉरी। आजकल दिमाग ठीक नहीं रहता। फिर तीसरे दर्जे की यह तकलीफ।"

चुपचाप रह जाना ही ठीक समझा। वे बोलीं, "तुम तो बहुत जगह घूमे हो। कहो, कर्णप्रयाग को देखा है?"

"कर्णप्रयाग?" और कुछ पूछूँ, इसके पहले ही गाड़ी ने सीटी दे दी।

इलाहाबाद में सूटकेस लेकर उतर पड़ी। वहीं तक जाना था। देखा, मिसेज़ बानर्जी भी अपना छोटा-सा बैग लिये उतर पड़ीं। कहा, 'सोचा था,

पहले कानपुर में देख लूँगी खोजकर। मगर जब तुम हो तो चलो पहले इलाहाबाद ही हो लूँ। क्या पता कहीं त्रिवेणी संगम में नहा रहा हो।

कुछ देर वेटिंग रूम में सुस्ता लिया। रिक्शे से जब संगम पर पहुँचा तीसरा पहर हो गया था। गनीमत कि मेरा कोई निश्चित कार्यक्रम नहीं था। घूमने की नीयत से ही निकल पड़ा था।

मेमसाहब ने मेरा हाथ दबा लिया 'समझ रही हूँ मुझसे बहुत नाराज़ हो गए हो। लेकिन मेरा दिमाग ठीक नहीं रहता है।' नदी किनारे एक पेड़ के नीचे हम बैठ गए। कहा 'अक्षयवट में पूजा नहीं करेंगी।'

मेमसाहब हँसी— 'पूजा झूठ है सब। मैं क्या पूजा करूँ? मेरा तो सब जाता रहा।'

मैं चौंक उठा। रॉबर्ट साहब संसारत्यागी रॉबर्ट साहब यह सुनते तो क्या सोचते! एकदम अवाक् हो जाते।

मैंने कहा 'आपको अब अवश्य पूजा की जरूरत नहीं रही। मल्डिव स्ट्रीट का एक मामूली अंग्रेज जिसके स्पर्श से सोना हो सकता है उस पूजा उपचार की क्या आवश्यकता ?'

सामने से कुछ संन्यासी आ रहे थे। मेमसाहब एकाएक दौड़ पड़ीं। जाकर उन लोगों की शक्ल देखने लगीं। संन्यासी तो अवाक्। मेमसाहब बोलीं 'मेरा अपराध क्षमा करें! आप लोगों में से किसी ने कृष्णप्राण को देखा है क्या? पहले उसका नाम था रॉबर्ट। छः फुट तीन इंच लम्बा। सिर पर सुनहले घुँघराले बाल। बदन पर गरुआ झूला हाथ में इकतारा कंधे पर भीख की झोली।'

संन्यासियों में से एक ने कहा 'नहीं माईजी किन्हीं साहब महाराज को तो यहाँ नहीं देखा है।'

थकी-सी मेमसाहब फिर मेरे पास आकर बैठ गई। 'रॉबर्ट को क्यों ढूँढ रही हैं मैं?' पूछा 'वे जिस मिशन में संन्यासी बने हैं? जिनके लिए आप इतनी परेशान हैं वहाँ तो वे मज़े में आपको चिट्ठी लिख सकते हैं। संन्यासियों को तो चिट्ठी लिखने की मुमानियत नहीं।'

मेमसाहब मेरे चेहरे की ओर ताकने लगीं। ऐसी तीखी थी वह नजर कि लगा मुझे सम्मोहित कर लेंगी। उसके बाद रुलाई से फूट पड़ीं। मेरे ही कंधे पर सिर रखकर रोने लगीं। उन्हें मैंने रोते कभी नहीं देखा था। अपने लाउडन स्ट्रीट वाले मकान में ही उन्होंने मुझसे और रॉबर्ट साहब से कहा था जो दिव्यज्ञानी होते हैं वे कभी आँसू नहीं बहाते। सुख हो दुख हो कुछ हो वे अभिभूत नहीं होते।

आँसू बहाकर अपने को शीतल करके जब वे उठीं तो साँझ का थका माँदा सूरज पश्चिमी आकाश में लम्बा पड़ा था। त्रिवेणी के तीर्थ जल में किसी ने जैसे सिन्दूर घोल दिया। उसी धुंधलके में उस दिन इलाहाबाद के किले के पास बैठकर मैंने मिसेज बोनर से रॉबर्ट साहब की पूरी कहानी सुनी।

रॉबर्ट साहब के बारे में मुझे कोई आग्रह नहीं था। कलकत्ता के साहब लोग अजीब होते हैं। अपनी जमात के सिवाय और किसी से मिलने की बात ये सपने में भी नहीं सोच सकते। दस से पाँच बजे तक आँखें मूँदकर किसी प्रकार इस देश के लोगों के साथ काम कर लेते हैं। बस उसके बाद गाड़ी लेकर चल देते हैं लिटल लंदन। इसे पार्क स्ट्रीट के दक्षिण का अभिजात्य कहते हैं। इसी छोटी सी दुनिया में चाँधे की तरह अपने साथियों में जीते हैं ये। दिन गिनते रहते हैं कब घर जाने की छुट्टी का दिन आएगा। दिन आया कि बोरिया-बसना समेटे देश चल दिए। छः एक महीने वहाँ बिताकर फिर वापस आना पड़ता। दिल लेकिन वहीं रह जाता सागर पार।

बस होम की ही चर्चा होम की ही समस्याओं की आलोचना। और तो और धूप धुले कलकत्ता में बैठकर कुहासा भरे लंदन के लिए रोना। भारतीयों से ये जो मिलने-जुलने भी हैं वह निहायत कर्तव्य-बोध के नाते।

रॉबर्ट साहब से कोई सरोकार ही नहीं था मुझे। लेकिन मेरे बिन जानते ही मिसेज बोनर के नाते रॉबर्ट भी मेरे जीवन से जुड़ गए थे।

मेरा मिजाज बिगड़ गया था। कलकत्ता में कितने तो लोग हैं। अविश्वासी अंग्रेजों की संख्या भी कम नहीं है। फिर सबके होते मेम साहब ने तत्त्वज्ञान सिखाने के लिए राबट को ही क्यों चुना ? मैं उनसे सीधे यह प्रश्न पूछ सकता था। लेकिन एक निःसंग विदेशी महिला का दिल दुखाने से क्या फायदा ?

मेमसाहब ने कहा 'तुम्हें तो मालूम है, राबट भगवान् में विश्वास नहीं करता था।

खूब मालूम है। उन्होंने मुझे भी एक दिन खरी-खोटी सुनाई थी। अभी तो मैंने आपके यहाँ जाना-आना बन्द कर दिया था। मैंने कहा।

मेमसाहब हँसीं। बोलीं मुझे पता है। खुद राबट ने ही बताया था। राबट ने कहा था कुसंस्कारों के फेर में अपना समय क्यों बर्बाद कर रही हो। उसी समय में दुनिया को देखो तो बहुत लाभ हो।

मेमसाहब डर-सा गई थी। कहा हिन्दुओं के भगवान् में न सही ईसाइयों के ही भगवान् में विश्वास करो नहीं तो अच्छी राह पर रहोगे कैसे ? डल्हौजी की उन बुरी औरतों के साथ जानें कहाँ बह जाओगे ?

राबर्ट साहब हँसे थे— उठती उमर के जवानों को औरतों के चंगुल से बचाने के लिए ही क्या ऋषि मुनियों ने शास्त्रों की रचना की थी ?

मेमसाहब ने कहा था हरगिज नहीं। लेकिन जीवन के काल को छन्दों में बाँधने के लिए किसी भाव का तो सहारा चाहिए न ?

राबट साहब बोले 'इन फिजूल की बातों में मैं कतई समय नष्ट नहीं करता लेकिन चूंकि तुम कह रही हो इसीलिए।

राबट की एक महीने की छुट्टी जमा हो गई थी। मेमसाहब ने उसके साथ भारत दर्शन का प्रस्ताव किया। पहले तो राबट राजी न हुआ। इस पर मेमसाहब ने कमरे से तसवीरें खींचने का लोभ दिखाया।

राबट ने कहा ओ दैट इज इंटरेस्टिंग। विश्वास करूं चाहे न करूं मन्दिर नदी पहाड़ साधु-संन्यासियों की तसवीर इंटरेस्टिंग है। इलस्ट्रेटेड लंदन न्यूज खुशी-खुशी छापेगा।

सिर्फ तसवीरों का ही आकर्षण नहीं। मेमसाहब वाली और कोई भी होता तो उसे नहीं ले जा सकता। सिर्फ मेरे ही लिए राजी हुआ।

दोनों दक्षिण भारत में घूमे। अरुणाचल में रमण महर्षि और भी दक्षिण में साई बाबा के दर्शन मिले। मेमसाहब ने प्रणाम किया। राबर्ट ने उनकी तसवीर खींची।

उसके बाद सेतुबन्ध रामेश्वर। कन्याकुमारी की जिस चट्टान पर बैठकर कभी विवेकानन्द ने भारत के सम्बन्ध में चिंतन किया था उसे भी देखा। भारतवर्ष के इस अंतिम शिलाखण्ड पर दोनों बड़ी देर तक खड़े रहे। सवेरे के सूरज ने भारत माता की पोशाक को जगमगा दिया था। चंचल लहरें उन दोनों के पैरों-तले पछाड़ खा रही थीं मानो उन्हें कितनी शिकायतें हों। सम्मिलित स्वर से चीख कर कह रही हों मानो—सुनो-सुनो हमारी बात सुनो।

समुद्र की लहरों का क्या विश्वास! धक्का से मेमसाहब राबर्ट के करीब आ गईं खिसककर। राबर्ट ने कहा अनोखा है यह प्राकृतिक दृश्य।

मेमसाहब ने पूछा सिर्फ प्राकृतिक दृश्य? और कुछ?

राबर्ट ने कहा नहीं? और कुछ तो नहीं पा रहा हूँ।

उसके बाद उत्तर भारत। काशी गया वृन्दावन हरिद्वार। राबर्ट नाक दबाए तीर्थ-दर्शन करते रहे और कैमरे का बटन दबाते रहे। मुँह बनाकर कहा हूँ यही भारतवर्ष दुनिया को राह दिखाएगा? हाउ सिली!

लौटते समय इलाहाबाद। राबर्ट मेमसाहब का नाम लेकर पुकारा करते। कहा एन्जिवाय बहुत हो गया। अब कलकत्ता लौट चलें। छुट्टी बिल्कुल मिट्टी में मिल गई।

मिसेज बोनर अग्निम हो उठीं। अपना सुन्दर मुखड़ा उठाकर पूछा, बिलकुल मिट्टी हुई?

राबर्ट सकपकाने लगे। बोले 'दुनिया में इतनी सुन्दर चीजें के होते

एक ऑब्सक्योर रिलीजन ने तुम्हें फ़ैसिनेट किया ! हज़ारों-हज़ार साल के पुराने इन ईंट-पत्थरों को देखने में समय बर्बाद न करके अगर कश्मीर गए होते हम तो आँखें भी जुड़ातीं सेहत भी सुधरती !'

मेमसाहब ने राबर्ट की शिकायत का कोई उत्तर नहीं दिया। जब से हिन्दुत्व को उन्होंने हृदय से स्वीकार किया तभी से यह सब सुनने को तैयार थीं। लेकिन उसे तो एक नशा-सा सवार हो गया था ! राबर्ट को समझाना ही पड़ेगा उसे अपनी तरफ़ लाना ही होगा।

मिसेज़ बानर की ज़बानी राबर्ट की कहानी सुनकर मैंने मन-ही-मन उन्हें फिर नमस्कार किया। जो निष्ठा इस विदेशी महिला में है उसकी आधी भी हम में होती तो हम कहाँ से कहाँ बढ़ गए होते। निष्ठा और आत्मविश्वास की कमी से ही हमारा यह देश निर्वीर्य तथा मृतप्राय हो रहा है। मैं ध्यान से राबर्ट साहब की कहानी सुनता रहा।

मेमसाहब कहने लगीं 'वह एक आश्चर्यमय घटना है। मुझे किसी प्रकार से विश्वास ही नहीं होता।

संगम में जाने के लिए हमने नाव की। गंगा पर तीसरे पहर की धूप पड़ी थी। राबर्ट ने कुछ तसवीरें लीं। जब किनारे की ओर हम लौट रहे थे देखा एक युवती छाती भर पानी में खड़ी प्रार्थना कर रही थी। आँखें बन्द। राबर्ट कमरा सँभालने लगा। मैंने रोक लिया। औरत की तसवीर खींचने से उसमें ख़लल न हो जाए ! युवती ने प्रणाम किया और आँखें खोलीं। हम पर नज़र पड़ते ही उसका चेहरा लाल हो गया।

हम नाव से उतरे। नदी के किनारे एकान्त में जाकर बैठे। पाँव फैलाकर राबर्ट कमरे में नई फ़िल्म भरने लगा। इतने में कानों में आवाज़ आई, 'देखना !'

चौंककर राबर्ट ने कमरा ज़मीन पर रख दिया। गीले कपड़ों में वही युवती सामने खड़ी थी। अभी अभी नहाकर गंगा से निकली थी। बिलकुल कच्ची उमर—इक्कीस-बाईस से ज़्यादा नहीं। नौ हाथ के गाढ़े कपड़े में भला यह लम्बी छरहरी और गठीली देह का ढँके रहना मुमकिन

था। गीला कपड़ा घुटने तक उठ आया था। पाँव दूध-से सफेद। दो चार काले रोएँ गीले होकर देह से चिपट गए थे। जवानी के गर्व से उद्दण्ड, अपने शरीर को किसी तरह से लपेटे वह युवती टुकुर-टुकुर राबर्ट को ताकती रही। बड़ा ही सरल मुखड़ा। खीझकर राबर्ट ने मुझसे कहा एलिजाबेथ सोचा कि जरा अकेले में बैठकर तुमसे बातें करूँगा। लेकिन यहाँ भी अड़चन! अजीब है देश। यहाँ प्राइवेसी नाम की कोई चीज ही नहीं।

'अब तक कहाँ थे मेरे देवता?' युवती ने गीले कपड़ों में दूर से राबर्ट को प्रणाम किया।

मुझे तो भारत की जानकारी थी तो भी उस युवती के इस आचरण से मैं चकित हो गई। पूछा कौन हो तुम क्या चाहती हो?

युवती खीझी। मुँह बनाकर बोली तुम रहने दो। कुछ पूछना हो तो मेरा देवता पूछे। मैं उन्हें सब बता दूँगी।

वह राबर्ट की ओर मुँह किए ताकने लगी। मुझे लगा वह अपनी दो भूखी आँखों से राबर्ट को निगल रही है।

उसे उस एक ही कपड़े का अवलम्ब था अन्दर से कुछ भी नहीं पहने थी। उसी हालत में वह राबर्ट से सटकर बैठ गई— देवता मेरे कृष्ण कन्हैया अब तक कहाँ थे?

राबर्ट अकबका कर मेरे पास सरक आया। टूटी फूटी बंगला में उसने पूछा तुम कौन हो?

अब तो छलना मत करो मेरे देवता! मैं तुम्हारी मीरा हूँ। वीरभूम के टूटे झोपड़े में सपना दिखाकर जो तुम गायब हुए सो गायब ही हुए। मेरी आँखों में तब से नींद नहीं। अन्न नहीं रुचता। रात नहीं बीतती। जाने कितने तीर्थों में तुम्हें ढूँढ़ती फिरी हूँ! कितने मन्दिरों में तुम्हारे लिए माथा नवाया! अब इतने दिनों में तुम्हें अवकाश मिला है वह भी साहब बनकर छल रहे हो?

क्रोध अपमान और लज्जा से राबर्ट का चेहरा लाल हो उठा।

मजाक उसने अंग्रेजी में पूछा 'क्या चाह रही है यह ? भीख ?

मैंने कहा यह वैष्णवी है। घर-बार छोड़कर कृष्ण को ढूँढ़ती फिरती है। उन्हीं का भजन गाती है, उन्हीं की पूजा करती है उन्हीं के लिए जीती है। तुम्हें तो पुनर्जन्म पर विश्वास नहीं है। लेकिन क्या पता है पहले जन्म में तुमने सचमुच ही उसके टूटे झोपड़े में दरस दिखाया था।

राबर्ट ने मनीबेग से एक अठन्नी निकालकर उसकी ओर फेंक दी और मुझसे कहा हूँ यह जन्म रहने दो अगले जन्म में फिर दरस दिखाऊँगा !

ज़मीन पर से अठन्नी उठाकर वैष्णवी ने कहा, यह क्या देवता ! आधे से चाहे ही होगा। यह मैं नहीं लूँगी।

मैंने सोचा वह शायद पूरा रुपया माँग रही है। राबर्ट से मैंने वैसा ही कहा। लेकिन वैष्णवी गुस्से से मुझे घूरती रही। बोली 'मेरे देवता को तुम क्या गलत-सलत समझा रही हो ? उसने राबर्ट के पाँव पकड़ लिए और रोने लगी— मेरे सपने से बिलकुल मिल जाता है। ठीक वही ही आँखें वही ही नाक वैसा ही रूपे सोने-सा रंग।

राबर्ट ने पाँव छुड़ा लेना चाहा। वैष्णवी और लिपट गई। बोली अपने चरणों में आश्रय दो देवता।

खीझकर राबर्ट ने मुझसे कहा 'इसी भारतवर्ष को तमने सिर-आँखों चढ़ाया है ! पागलों की आकृत।

राबर्ट उठ जाने लगा। वैष्णवी ने हाथ जोड़कर कहा, और चाह कुछ न दो मेरे देवता अपने चरणों की धूल दो ज़रा-सी। दासी उसे अपने माथ पर रखेगी। आज्ञा का इन्तज़ार न करके वह राबर्ट के जूते का फीता खोलने लगी।

राबर्ट ने मज़ाक पूछा इस देश की औरतें भी दुनिया छोड़ देती हैं ?

मैंने कहा हाँ। मैंने मीरा की कहानी नहीं सुनाई तुम्हें ? राजा की बहू मीरा का कृष्ण से अभिसार ?

तो क्या हुआ इस कच्ची उमर म या अकेली घूमती फिरती ? दूसरो को तग करती फिरेगी ? इनके अपन मग इन्हे कछ कहते नहा ? राबट ने पूछा।

जिसे कृष्ण ने पुकारा है, उसे बाँधकर घर म कसे रख सकते हा ?

इ ह कोई नही पुकार सकता सिवाय मेन्ट हास्पिटल के।' झल्ला कर राबट ने अपना जूता हटा लिया।

वष्णवी बडे जतन से उसका जूता उतार रही थी। चौंककर अपनी बडी-बडी आँखों स राबट की ओर ताकने लगी आँखो से आँसू बहन लगे।

मुझस और न सहा गया। कहा राबट इस प्राचीन सभ्यता का मम जानते कितना हो ? यहाँ साने स जीवन का मान नहीं तोला जाता। राज्य एश्वय और स्त्री-पुत्र की माया को तुच्छ करके यहाँ के राजकुमार आत्मा की खोज म निकल पडे है। गरीब ब्राह्मण के परों पर अपना ताज रखकर यहाँ के राजाओं ने अपने को कृताथ समझा है। तुम्हारी धारणा स शायद इनका मेल न बठे। लकिन महज इसीलिए ये गलत हैं एसी बात नहा। तुम्हारे नाइट लोग महिलाओं का मामूली-सा उपकार कर सकने से ही गर्वित होते थे। उसी प्रकार अगर किसी को तुम्हारे पैरो की धूल लेने से शांति मिलती हो तो तुम उसे बाधा क्यों दोगे ?

वष्णवी लकिन तुनक गई। बोली मेरे देवता मुझ सजा द रहे हैं इसम तुम्हारा क्या ?

राबट कुछ भी नही समझ पा रहा था। मैं भी नहीं। पगली तो नहीं है यह ? लकिन मुझ बड़ी खुशी हुई जब अपना पाँव बढ़ाकर राबर्ट ने कहा तुम्हारे परल पडकर मुझ अपन मोजे भी उतारने पडे। कुछ तो बदला आखिर। कलकत्ता का वह राबट तो ऐसी हालत में कब का उठकर चला गया होता। या कि पुलिस को खबर देता। इजाजत का बिना इन्तजार किए ही वष्णवी राबट के मोज उतारने लगी। इसी मौके स राबट ने कमरे का बटन दबाया। वष्णवी ने आँखें उठाकर पूछा यह

क्या किया देवता ?'

राबर्ट ने हँसकर कहा 'तुम्हारा फोटू खींचा ।

अपने आँचरे से राबर्ट के पाँव पोंछती हुई वह बोली 'छाया लेकर क्या करोगे देवता ?

जो अठन्नी जमीन पर पड़ी थी उसे उठाकर वैष्णवी ने राबर्ट की ऊपर की जेब में डाल दिया ।

उसके चेहरे की तरफ देखकर राबर्ट ने जाने क्या सोचा । उसके बाद मेरे कान में कहा 'बड़ा अच्छा फीचर हो जाएगा एक । लाइफ अथवा इलस्ट्रेटेड लंदन दौड़कर ले लेगा । नाम रखूँगा—एक कृष्ण प्रेमिका का जीवन ।

राबर्ट के कहे अनुसार मैंने वैष्णवी से कहा साहब तुम्हारी कुछ तसवीरें लेना चाहते हैं ।

मुझे वह बिलकुल देखना नहीं चाहती था । दुखी होकर बोली, मेरे देवता चाहे मेरी तसवीर लें चाहे पीटें, चाहे मुझे पानी में फेंक दें तुम्हारा क्या ?

मैं भी हँस पड़ी । राबर्ट भी । कुछ सोचकर उसने कहा 'तुम रहोगी तो असुविधा होगी । एनिवावेय तुम होटल लौट जाओ । कुछ ही देर में मैं वहाँ आ जाता हूँ ।

राबर्ट वहाँ खड़ा हुआ । मैं होटल लौट आई ।

मेमसाहब रुकीं । मैं अब तक अवाक् देख रहा था उनकी ओर । पूछा "उसके बाद ?

मेमसाहब फूट फूटकर रो पड़ीं । रोते रोते कहा "हाय मैं उसे छोड़कर होटल क्यों लौट आई ! साथ रही होती तो आज मुझे इस तरह रोना नहीं पड़ता ।

मैं कुछ भी समझ नहीं रहा था । मेमसाहब अपने-आप बोलीं असम्भव है असम्भव । ऐसी घटना सुनी है किसी ने कभी ?'

किसी प्रकार से अपने को सम्हालकर ममसाहब ने कहा होटल में मैं रात भर रावट की प्रतीक्षा करती रही। बारह बज गए मगर राबट का पता नही। बत्ती जलाए बिस्तर पर छटपटाती रही।

सुबह भी राबट नही आया। मैं पुलिस म खबर देने जाने लगा। ऐसे समय कमरा जिद एक आदमी मुझसे भेंट करने आया। वह त्रिवेणी घाट का पडा था। बोला एक साहब ने मुझे आठ आने पसे दिये और कहा यह बग होटल के इस ठिकाने पर पहुँचा देना।

कमरा के केस को खोलकर मैं चौंक उठी अन्दर एक पुर्जा पडा था। अपने वनिटी बग से वह पुर्जा निकालकर मेमसाहब न मुझ दिया। उस पुर्जे को मेमसाहब ने शायद हजार बार पढा होगा। बार-बार के व्यवहार से गत हो आई था उसकी। उसम लिखा था—सचमुच अजीब है यह भारतवष। मैं चला। बस !—कृष्ण प्राण (राबट)।

मैंने पुर्जा मेमसाहब का लौटा दिया। उन्होंने जतन से उसे बग में रखा।

आश्चय ही है ! ससार म ऐसा अघटन भी घटता है। भगवान् मे जरा भी विश्वास न रखने वाला एक नाटकीय क्षण म सर्वशक्तिमान् के चरणा में आत्म निछावर करके उन्ही की पताका कन्धे पर उठाकर विश्व विजय को निकल पडा।

राबट के इस नये जनम म अगर किसी की देन है तो वह है मिसेज बोनर की। लकिन वह बेहाल हो उठी।

बोलीं, बस यही तब स ढूढती फिर रही हूँ उसको। कोई तीरथ कोई मेला कोई आश्रम नहीं छोड़ा। कितनों को रुपए दिये कि कृष्णप्राण पर नजर पडत ही मुझे तार कर दे। लकिन कहाँ ?

बहुता ने कहा एक साहब वरागी को देखा तो है। पहनावे म गेरुआ हाथ में इकतारा माथ पर घुघराले-सुनहले बाल। कन्धे पर भीख की झोली। साथ मे एक वष्णवी। अहा कसा सरल और निष्पाप मुखड़ा ! साक्षात् मीरा हो जैसे !

ढूंढ थकी मैं तो रावट को। हिमालय से कन्याकुमारी तक । जहाँ भी पता चला वहीं दौड़ी गई।'

प्रयागतीर्थ म बैठकर मेमसाहब की बातें सुनते सुनते मेरी आँखों मे कृष्णप्राण का तसवीर तैर आई। हैट-कोट पैंट म एक अविश्वासी अंग्रेज तरुण। संसार का सारा मोह छोड़कर कृष्णप्राण बनकर भारत के तीर्थों की खाक छानते फिर रहे हैं। मैं जब बैठकर उनकी कहानी सुन रहा हूँ हो सकता है ठीक उसी क्षण वे किसी सूनी जंगली राह म डूबते सूरज की पृष्ठभूमि मे भागवत का भजन सुन रहे हैं— आँखों से बह रही है आँसू की धारा। और हम धरती के लोग, कामिनी-कंचन के मोह मे पड़े सूअर की भाँति दुनिया के कीचड़ में लोट रहे हैं।

मनुष्य का मन सदा हमारे लिए एक दुर्ज्ञेय रहस्य बना रहेगा। रावट के इस नये जन्म म अगर किसी का कोई दान है तो वह है मिसेज बोनर का। लेकिन वह क्या बेहाल हो उठी ? उन्होंने जो चाहा था वही तो हुआ। रत्नाकर राम का गीत गाने लगा।

लेकिन मिसेज बोनर रो रही हैं। तो क्या वह इतने दिनों तक अभिनय कर रही थीं ?

मेमसाहब ने मेरे दोनों हाथों को दबा लिया— रावट का ढूंढ निकालना ही होगा। उसके लिए अगर मुझे अपना सर्वस्व भी देना पड़े तो मैं तैयार हूं।

मेमसाहब का यह निहोरा मुझे अच्छा न लगा। दिलासा देते हुए कहा "जो रावट सत्य का स्वाद पाकर संसार के बन्धनों को तोड़ फोड़कर कृष्णप्राण बन गए, उन्हें अपने बीच नहीं ही पाया तो क्या ! पिंजरे का पंछी अब पिंजरा खोलकर उड़ भागा तो फिर उसे लौटा लाने से क्या लाभ ?

मेमसाहब तब तक लगभग उन्मत्त हो उठी थी। मेरी बातों पर ध्यान नहीं दिया। बोली 'उसे खोजकर निकालना ही पड़ेगा।

कम से-कम एक बार तो उससे भेंट करनी ही पड़गी।

शायद हो कि मेरा कोई प्रश्न करना शोभन नहा हुआ मगर मुझसे और चुप न रहा गया। पूछा आखिर क्यों ? क्या उसकी खोज म ऐसी पागल बनी घूमती फिर रही हैं ?

मेमसाहब सकपका गइ उसस एक सवाल पूछना है।

कौन-सा सवाल ?

शम स मिसेज बोनर का चेहरा सुख हो गया। आप-ही-आप बोली सवाल मुझ पूछना ही होगा वरना मैं कभी भी उसे क्षमा नहीं कर सकूँगी।

मगर अपनी सेहत की तरफ भी कभी देखा है आपने ?

अबकी उन्होंने सचमच ही मुझ अवाक कर दिया। बोली मैं हार गई। मेरा शरीर बहुत दिन पहल ही एक अच्छी से हार गया। राबट को मैं रोककर दुनिया मे नही रख सकी। इसीलिए उसस सवाल करूगी।

अब ममसाहब आगा-पीछा करने लगी।

मैंने कहा कोई असुविधा हो तो जरूरत नहीं कहने की।

वह अपने-आप बुदबुदान लगी मेरा क्या ? कोई असुविधा होगी तो वह उसकी होगी।

जरा रुकी। उसके बाद बोली हो सकता है मझ पर जो श्रद्धा है तुम्हारी वह जाती रह। लकिन तो भी कहूँगी। तुमसे कहने म शम क्या है मझ ? राबट तो भारतवष को जरा भी नहीं पसन्द करता था। लकिन फिर भी वह रोज राज मेरे पास क्यो आता था ? और लगातार वर्षों कोशिश करके मैं जो नहा कर सकी उसे प्रयाग की उस युवती ने मात्र कछ क्षणो म कर दिया। मेरी गर मौजूदगी में उसके पास ऐसा क्या मिला उस ?

मेमसाहब के होठ काँपन लगे। चारो तरफ ताक कर उन्होंने मेरे कान मे कहा इसे सिफ तुमने ही जाना है और कोई नहीं जानता। मुझ खूब याद है प्रयाग म उस दिन राबट ने मुझे होटल लौट जाने को कहा

उसस क्षण भर पहले वह कृष्णवी की भीगी कपड़ों स उभरती देह की तरफ खास निगाह से ताक रहा था।

चौंककर मैंने मिसेज बानर की ओर ताका। उनके होंठ तब भी काँप रहे थ। हाँफती हुई बोली तुम लोग मुझे माफ करना। हो सकता है यह मेरी भूल हो। मगर तो भी मैं उससे एक बार पूछूँगी राबर्ट तुम्हारी उस निगाह म क्या था ? '

उस बार इलाहाबाद म कृष्णप्राण का कोई पता न चला। हम दोनों ही निराश होकर कलकत्ता लौट आए। लेकिन उम्मीद नहीं छोड़ी।

कृष्णवी म सबके अदेखे रॉबर्ट साहब ने क्या पाया था यह शायद सदा के लिए रहस्य ही बना रहे। मुझे यह जानने का कौतूहल नहीं था कि किस शक्ति के प्रसाद म उन्होंने ससार के सारे बन्धन तोड़ दिए। लेकिन मैंने रॉबर्ट से मिसेज बानर के मिलन के प्रयोजन को खूब समझा। उनकी देह की ओर देखते ही मुझे डर हो आता। रात दिन बस सोचती हूँ और सोचती हूँ।

मुझे भी बहुत काम था। दुनिया की लड़ाई लड़ते ही थक जाता, दूसरों के मसले हल करने की इच्छा भी हो तो सामर्थ्य नहीं रह जाती। लेकिन मिसेज बानर का बड़ा एहसानमन्द था मैं।

विलायत से भरत घोष ने भी लिखा था—मेमसाहब को मेरी कृतज्ञता कहना। उन्हीं की दया से मैं यहाँ आ पाया। कम-से-कम मेरे नाते ही उनकी खोज-खबर लेते रहना।

लौटकर मैंने बहुतों से कृष्णप्राण की खोज पूछ की। और हार मान कर अन्त म एक पत्रिका के धारदीप विभाग में मैंने कृष्णप्राण के बारे म लिखा। पाठकों से अनुरोध किया कि किसी से अगर उनकी कहीं भेंट हो जाए तो कृपा करके मुझे तार कर दें। कृष्णप्राण की कोई तसवीर मेरे पास नहीं है। लेकिन उसकी सूरत शक्ल का एक खाका मामूली तौर से बता दूँ। छ फुट तीन इंच लम्बे हैं। सिर पर घुँघराले घुँघराले बाल।

बदन पर लम्बा गेरुआ झूला। नंगे पाँव। हाथ में इकतारा। कटार-सी नाक और खिंची खिंची-सी आँखें। साक्षात् श्रीकृष्ण से। पर इतना ही कि इनका रंग कच्चे सोने-सा है।

यह भी लिख दिया था कि कृष्णप्राण को आप देखते ही पहचान लेंगे। हजारों की भीड़ में भी वे छिपने के नहीं। देखिए कहीं मिलें तो मुझे अर्जेंट टेलिग्राम कर दीजिए। निहायत भद्रजनोचित न होने पर भी मैंने यहाँ तक लिख दिया था कि मैं पहुँचते ही टेलिग्राम का खर्च दे दूँगा।

मिसेज बानर्जी की कहानी यहीं खत्म हो जाती अगर एक टेलिग्राम आ नहीं जाता। जिस उपकारचेता पाठक ने मुझे तार भेजा था न तो उन्हें तार का खर्च दिया गया न धन्यवाद ही। उन्होंने कृष्णप्राण का पता तो भेजा लेकिन अपना परिचय नहीं दिया। मेरी बड़ी इच्छा थी कि उनसे *मिलकर व्यक्तिगत तौर पर उन्हें धन्यवाद दूँ और कृतज्ञता स्वरूप अपनी* इस किताब की एक प्रति भेंट करूँ। यह किताब अगर किसी तरह उनके हाथ लगे तो कृपा करके अभी भी वे अपना परिचय दें। मुझे विशेष आनन्द होगा।

पूजा की छुट्टी में वे शायद जलवायु परिवर्तन के लिए पहाड़ पर गये थे या किसी सरकारी काम से मदनपुर जाना पड़ा था। वहीं से उन्होंने खबर भेजी थी।

तार पाने के बाद मैंने ज़रा भी देर न की। एक टैक्सी लेकर बोपाल बगान से लाउडन स्ट्रीट चला गया।

मेमसाहब ने कहा, थर्डक्लास में चलूँगी। जब रावट इतना कष्ट उठा रहा है तो मैं भी झेल सकूँगी।

बड़ा मुश्किल से उन्हें ऊँचे दर्जे का टिकट लेने को राजी कर पाया। जिसकी आदी नहीं हैं कहीं धुन में वही करके बीमार न हो जाएँ। पूर्वी रेलवे के एक प्रभावशाली कर्मचारी की मदद से किस मुसीबत से उस दिन टिकट का जुगाड़ किया यहाँ वह कहानी कहने की जरूरत

नहीं। मिसेज़ बोनर के मन की जो दशा थी उस समय ! टिकट न मिलता तो शायद पदल ही मदनपुर के लिए चल पड़ती।

मिसेज़ बोनर के चरित्र म कुछ ऐसी विशेषताए देखी जो आमतौर से हम लोगों म नही पाई जाती। इंग्लैंड मे पदा होकर भाग्य के परिहास से वे कलकत्ता आ पहुँची थी। जिन्दगी म किसी भी अन्याय के आगे उन्होंने सिर नही झुकाया यहाँ तक कि अपने पति का भी माफ नही किया। इंग्लैंड म ही डाइवोर्स कोट से छुटकारा पा लिया था। उनके उस अध्याय की पूरी जानकारी मुझे न थी। इतना ही समझा था कि चोटा से चलनी चलना होने के बावजूद उन्होंने जीवन म कभी हार नही स्वीकार की। मनुष्य के अन्तरतम के अमृत पर उन्हें आज भी गहरी आस्था थी।

चालीस घण्टे के सफर के बाद जब हम गतव्य स्टेशन पर पहुँचे भोर हो चुकी थी।

मदनपुर कहाँ है यह पता नही था। लोगो से पूछताछ करने पर जो पता चला उससे सिर थाम लेने की नौबत आई। बस से तीसेक मील जाना था। वहाँ से फिर दूसरा उपाय करना था। कहाँ जा रहा हूँ यही ठीक-ठीक नही मालूम था। इस अजाने परदेस म कहाँ रात बिता दूगा इसका भी ठिकाना नही। ऐसे ऐडवेंचर के लिए दिल से तयार होकर नही आया था। कहाँ का तो कौन साहब तिस पर उसने एक बार मेरा अपमान तक किया था उसीके लिए इतनी तकलीफ उठाने का मेरे लिए कोई मतलब नही था।

लेकिन पहाडी हवा म कोई जादू होता है शायद। सामने के बड़े बड़े पहाड को देखकर शरीर जसे कुछ गरम हो आया। मेरी नसों की रक्त बिंदुएँ मानो नींद से जागकर कलरव करने लगी मुझसे बार-बार कहने लगी हम प्रफुल्लित हैं। भाग्य सुबह का जगना अगर किसी का सफल हुआ है तो हम लोगो का।'

जी में आया जीवन को जानने का ऐसा मौका कितनों को मिलना

है ? मैं भाग्यवान हूँ।

बस पर मिसेज़ बोनर और मैं पास पास बठ थे। लकिन हम दोनों म कोई बात नहीं हुई। विराट विशाल पवत के सामने होकर कोई भी आलोचना जसे बेमानी लगती है।

बस स उतर कर आवश्यक जानकारी लने म कुछ दर हो गई। उसके बाद हम मदनपुर की ओर रवाना हुए। एक टट्टू पर हमारा सरो-सामान। साथ म घोड़ेवाला और हमारा पथ प्रदशक पानसिंह। नाट कद का छोटा सा आदमी लाल सब-जसा रग। ये पहाड़ी लोग मुझ बहुत अच्छे लगत है। इनक मन में कोई पेंच नहीं होता क्षुद्रता नहीं होती।

पानसिंह ने कहा आप लोगों का मदनपुर जाने म कोई कष्ट न होगा बाबूजी! आप लोगों के लिए मैंने शिव भगवान् को पूजा चढ़ाई है। शिवजी अगर प्रसन्न हो तो कितनी भी चढ़ाई क्या न हो चढ़ाई नहीं मालूम होगी। और शिवजी कहीं नाराज हो तो दुर्दशा का अन्त नहीं यह राह ही कभी आदमी की खत्म नहीं होगी कभी—जितना ही चलता जाएगा रास्ता उतना ही बढ़ता जाएगा। वह मदनपुर कभी नहीं पहुँचेगा।

मिसेज़ बोनर से पूछा चल तो सकेंगी न ?

पहाड़ क सामने वह भी जस उत्फुल्ल हो उठी थी। बोली मैं तुम्हारी तरह माटी की बेटी नहीं हूँ मैं पार्वती हूँ स्कॉटलैंड की जिस जगह मेरी पदाइश हुई वहाँ पहाड़-ही पहाड़ हैं।

पानसिंह क उपदेश क अनुसार शिव भगवान् को प्रणाम करके चल पड़ा। मन ही मन कहा हे कणधार ससार म अभी बहुत कुछ दखने की इच्छा है। लिहाजा आफ्त मुसीबत म आवश्यक प्रोटक्शन देने म कजूसी न कीजिएगा।

पानसिंह ने कहा बाबूजी काम तो मैंने यहाँ बहुत दिन किया लकिन मुसाफिर लकर मदनपुर की ओर कभी नहीं गया हूँ। वहाँ तो दशनीय कुछ भी नहीं है।

मैने कोई जवाब नही दिया क्योंकि शायद हो कि हम जिन्हे देखने जा रहे हैं शायद वे न मिलें। हमारी यह सारी मेहनत ही बेकार हो।

दिन भर चलते चलते शाम का एक डाक-बगले म रुका। मदनपुर अभी बहुत दूर था। लिहाजा वही रात्रि-वास।

पानसिंह हमारे लिए खाना बनाने को रसोई में गया। और हम लोगों ने सामने के बगीचे में दो आरामकुर्सियों पर अपने शरीर को बिछा दिया। ऐसा नहीं प्रतीत हुआ कि आस-पास कहीं मनुष्य का कोई चिह्न है। बस पेड़ और पहाड़। पहाड़ और पेड़। सब विशाल। क्षुद्रता की कहीं कोई निशानी ही नहीं। कहीं एक छोटा पौधा तक तो नजर नहीं आया।

पश्चिमी आकाश का सूरज भी कैसा अजाना-सा लगा। मन ही मन सूरज से कहा तुम्हें तो कितनी ही बार देखा है। चौपाल-मकान की बस्ती से लाउडन स्ट्रीट वाले मकान के छज्जे से त्रिवेणी-तीर के नदी किनारे बैठकर भी देखा है। लेकिन हर बार तुम नये लगते हो।

नगाधिराज की परिचारिकाएँ दिन की अन्तिम किरणों को भी पोंछ ले गई। सिर्फ अस्पष्ट अन्धकार मे दूर की अरण्य-श्रेणी से युकिलिप्टस की भीनी महक बहकर आने लगी।

घोड़े की पीठ पर सामान लादकर दूसरे दिन फिर हमारी यात्रा शुरू हुई। रूपवती युवती की भाँति मदनपुर की राह ने मानो सतरंग नाइलन की साड़ी पहन रखी हो आज। उस रूप से जरा भी विचलित न होकर हमारा घोड़ा दार्शनिक की गम्भीरता लिये धीरे चाल से चला जा रहा था। और हम, हम तो जैसे कितने दिन इस राह पर चलते रहे हों! हमारे साल से हमारे पुरखे इस राह से जाते आते रहे हैं। आज भी मैं मानो खच्चर की पीठ पर माल लादकर व्यापार को जा रहा हूँ।

ममसाहब चुप सी साथ रही थीं। शायद ससार त्यागी कृष्णप्राण से जो प्रश्न पूछेंगी उसके लिए तैयार हो रही हों। मदनपुर की धरती

तो आपकी आँखों से आँसू बहने लगेंगे। छोटा सा आश्रम बनाया है। वहीं रात दिन रहते हैं। किसी से बोलते नहीं। कुछ दीजिए तो लेते नहीं। हफ्ते में एक दिन आश्रम से बाहर निकलते हैं। इकतारे पर गुन गुनाते हुए गाँव वालों के पास आते हैं। हमारा कितना सौभाग्य है बाबूजी से हम लोगों के बीच हैं। उन्हें थोड़ा-सा चावल दाल देकर हम धन्य हो जाते हैं।

और अन्त में हम सच ही मदनपुर पहुँच गए। दूर ही से पानसिंह ने दिखा दिया वह रहा हमारा गाँव। कुछ घरों की छोटी-सी बस्ती। घर भी इतनी इतनी दूर पर कि एक घर से दूसरे में जाने में हाँफ उठने की नौबत।

ऐसे अजाने अचीन्हे स्थान में पानसिंह जैसा बन्धु मिल जाना बड़े भाग्य की बात है। अपने घटनाबहुल जीवन में मैं बहुत देशों में घूमा बहुत-बहुत लोगों से मिला किन्तु इन पहाड़ियों जैसे अतिथिवत्सल और अच्छे तथा परोपकारी लोग मैंने नहीं देखे। पानसिंह ने अपना मकान ही हम लोगों के लिए छोड़ दिया। घर कहने का एक ही तो कमरा था एक टुकड़ा बरामदा। वहीं हम लोगों का सारा सामान सहेजकर पानसिंह अपने एक सम्बन्धी के यहाँ चला गया।

यूरोप में प्राण की जो प्रचुरता है उससे वास्तव में हम लोगों की कोई तुलना नहीं। मिसेज बोनर और कृष्णप्राण के नाटक का मैं महज दर्शक था। उस नाटक का नतीजा कुछ भी हो उससे मेरी किस्मत का कोई रद्दोबदल नहीं होगा। लेकिन तो भी मिसेज बोनर की चिन्ता से मेरे उद्वेग का अन्त नहीं था। इतनी दूरी तय करके आने के बाद कहीं जतन से पाला हुआ उनका सपना सपना ही रह जाए तो क्या होगा?

लेकिन मिसेज बोनर का अनन्त आत्मविश्वास था। गुनगुनाकर गाती हुई वे सामान को ठीक करने लगीं। पूछा सिर्फ दो दिन के लिए इतना क्या सामान ले आई?

एक बक्स को खींचकर लाने में रखती हुई वे बोलीं, "एक बक्स तो सिर्फ राबर्ट की कमीज, कोट, पैंट और जूतों से भरा है। और इसमें मेरे कपड़े-लत्ते हैं। फरवरी का केक है बिस्कुट है टाफी है। राबर्ट को केक बहुत पसन्द है।

राबर्ट की बँधी हुई तसवीर निकालकर मेमसाहब ने बक्स पर रखी। बो-टाई और कीमती सूट में श्याम बदन की तसवीर। कोट की जेब से रुमाल का कोना झाँक रहा था। ब्लैक एंड व्हाइट की बोथी हुई तसवीर पर अपना हस्ताक्षर करके राबर्ट ने मेमसाहब को भेंट दी थी।

कमरे के किवाड़ के पल्ले सटाकर मेमसाहब सिंगार करने बैठीं। बाहर के बरामदे पर खड़ा-खड़ा मैं पहाड़ देखने लगा। अपनी आशा आकांक्षा कामना-वासना की अनिश्चित परितृप्ति के लिए हम सदा ही चंचल और बेचैन बने रहते हैं। लेकिन गिरिराज को तो अनिश्चितता की कोई समस्या नहीं। इसीलिए वे शान्त हैं स्थिर।

कमरे के अन्दर से मेमसाहब जो निकलीं तो उन्हें पहचानना मुश्किल। मैंने उन्हें पश्चिम की ऐसी उग्र पोशाक में कभी नहीं देखा था। उनकी उम्र जैसे दस साल कम हो गई हो। नारंगी रंग का कम लम्बा स्कर्ट मानो उनके शरीर में कस गया हो। हाथ दोनों बिल्कुल खुले। कण्ठ की हड्डियाँ दो अस्पष्ट रेखाओं जैसी दीख रही थीं। साटन के पतले कमरबन्द से कमर बँधी। अनसधरे बालों में भी कैसा तो एक जंगली छन्द! उस पर मेमसाहब ने रेशमी रुमाल लपेट लिया। झोली से आईना निकालकर उन्होंने अपना चेहरा देख लिया और निकल पड़ीं। मैं भी साथ चला। मेरे हाथ में रंगीन कागज में लिपटा राबर्ट साहब का प्यारा केक था।

साँझ हो चुकी थी। हम आश्रम के पास पहुँचे। दूर से ही मंजीरे की आवाज सुनाई दे रही थी। कृष्णप्राण अपने मदनमोहन को भजन सुना रहे थे। भगवान् को रात का भोग लग चुका था। अब वे सोएँगे।

चारों तरफ अँधेरा। एक दीया जल रहा था केवल। उसी सघन

सी रोशनी म कृष्णप्राण को देखा। वरागी का गेरुआ चीर। घुटा हुआ सिर। लम्बा पड़कर प्रणाम म झुके उस शरीर मे रावट साहब को कौन ढूँढ निकाले? मन्दिर के अन्दर जाने का हम साहस न हुआ। बाहर खड़े रहे। मेमसाहब का शरीर उत्तजना से काँप रहा था।

अब कृष्णप्राण नगे बदन हाथ में इकतारा लिये बाहर निकले। दोनो की नजर जब मिली, तो मानो इसके लिए दोनो में स कोई तयार न था। कब तक व निर्वाक खडे रहे मालूम नही। मेमसाहब अस्फुट स्वर में बोल उठी कृष्णप्राण! और पागल-सी उनके हाथ पकडने को लपकी। कृष्णप्राण भय से पीछे हट गए। मेमसाहब रावट कहकर फिर बढ़ने लगी लेकिन ठिठक गइ।

यही था वह चरम आकाक्षा का मिलन जिसके लिए मिसेज बोनर भारत के एक से दूसरे प्रदेश की धूल छानती फिरी। मैंने सोचा था कि मेमसाहब के रुँध आँसुओ का बाँध आज टूट जाएगा। लकिन कहाँ? सो तो नही हुआ। कृष्णप्राण मुह फेरकर आसमान की ओर ताकते रहे।

रावट यह तो मेरी कल्पना से भी परे था मेमसाहब ने कहा।

कृष्णप्राण ने कोई जवाब नही दिया।

अब शायद उस प्रश्न की बारी थी जिस प्रश्न के लिए बगाल से हम दौडे दौडे मदनपुर आये थे। मेमसाहब ने कहा रावट तुमसे एक गोपनीय बात है। चलो हम वहाँ उस युकिलप्टस क नीचे चलें।

रावट ने गरदन हिलाई 'मुझ माफ करना। किसी स्त्री से अकेले मे मिलना मरे लिए सम्भव नही।

तुम यह कह क्या रहे हो रॉबट?

रावट चुपचाप खड़े रह। मेमसाहब हाँफने लगी। बोली देखो रावट तुम्हारे लिए क्या ल आई हूँ! फरपो का कक। तुम्हारे चले आने के बाद से मैंने भी केक नही खाया। आज सब मिलकर खाएँगे।

रावट ने सिर हिलाया कक म अडा रहता है। आइ एम सारी।

ममसाहब विफल मनोरथ ही लौट आईं। प्रश्न पूछा नही जा सका।

रात भर व साइ नही। मुझे भी नहीं सोने दिया। बोली मैं पूछ सकती थी तुम्हारे सामने ही पूछ सकती थी। लेकिन मैं तो उसे फिर से पाना चाहता हूँ। इसीलिए कुछ भी न पूछूंगी।

दूसरे दिन सवेरे मेमसाहब फिर गई थी। मैं जानकर ही नही गया। पडा-पडा सोचता रहा ऐसा क्यो होता है ? राबट साहब ने तो सब-कुछ पाया था—प्रेम, स्वास्थ्य सौंदय दौल्त कीर्ति। स्वच्छ दता तो उनकी मुट्ठी में थी। लकिन कौन-सा विपन्न विस्मय उनके भीतर के लहू में एकाएक खेलने लगा ?

ममसाहब उदास लौट आइ। कुछ भी न कर सकी। ममसाहब ने कहा था राबट तुमने अपनी माँ की सोची है क्या ? उनके कोई नही है।

जो साहब पहल बोलते ही रहते थे, अब वे मानो बोलना ही भूल गए थे। उनकी बात का जवाब दिए बिना ही कृष्णप्राण मन्दिर म चले जा रहे थे। माँ के नाम स रुक गए शायद। बोले, 'अपना जो कुछ भी था सब तो मैंने उनके नाम से लिख दिया है। मैंने तो बहुत पहले ही उन्हें लिख दिया है कि रुपयो की मुझे जरूरत नही।'

थकी-सी मेमसाहब कमरे मे बठ गइ। उत्तजना के मारे इस ठण्डी जगह म भी पसीना आने लगा उन्हें। इतना सुन्दर प्राक भीग गया था। ममसाहब शायद इस व्यथता के लिए तयार न थीं। तडके ही, ठीक से प्रकाश भी नही हुआ था, वे निकल पडी थीं।

आश्रम से गाने की आवाज आ रही थी। मजीरा बजाकर कोई गा रहा था, हे लीलामय सुबह हो गई। उदयाचल का सूरज तुम्हारी आशा की प्रतीक्षा कर रहा है। उठो जगो भक्तों पर कृपा करो।

उस गीत में आशा की कोई चिनगारी नहो थी। आशाविहीन थका वट का एक सुर मानो सारी पृथ्वी को उदास करना चाह रहा था।

ममसाहब की आँखों स आँसू ढुलक रहे थ। राबट के ऐसे अध पतन की बात कोई भी नहीं सोच सका था। भारत की मिट्टी पर खड़े

होकर जिसने पौरुष और कम का विजय-गीत गाया जिसने बिना अपनी बुद्धि और विचार की कसौटी पर कस कुछ को भी नहीं माना वही आज पत्थर के एक टुकड़े को नींद से जगा रहा है। कह रहा है—प्रभो तुम्हीं मरे सहारे हो। पौरुष की ऐसी अपमृत्यु तो व कभी नहीं चाहते थ।

ममसाहब को बड़ी देर तक खड़ा रहना पड़ा था। गनीमत कि यहाँ भीड़ भाड़ नहीं थी नहीं तो लोग ममसाहब का देखकर हँसना शुरू कर देते। कानाफूसी चलती आपस म।

भगवान् को जगाने क बाद कृष्णप्राण को दम मारने की फुरसत नहीं। भोग लगाना था। भोग के बाद प्रभु के नहाने का समय होगा। नहाने क बाद फिर भोग।

वियोगिन मिस बानर तब तक भी बाहर खड़ी थीं। पसीने से नहा गई थी। सूरज माना बीच आसमान से इवेतांगिनी पर कुछ विशेष नजर डाल रहे हों। मन्दिर से फिर गीत की कड़ी सुनाई पड़ी— प्रभो तुम्हारे सिवा मरा कौन है ?

गीत गा-गाकर जब प्रभु का सुलाकर कृष्णप्राण निकल तब तक ममसाहब थककर चूर हा गई थी। उसी समय दा बातें हुइ। व फिर मन्दिर में चले गए।

ममसाहब इस पर भी हार मानने वाली नहीं। बक्स खालकर और भी आँखें चौंधियाने वाले कपड़े निकाल। किवाड़ बन्द करके बड़ी दर तक बनी ठनी। हैंगर म झूलते हुए तीन फ्राक दिखाकर मझस पूछा बताओ तो कौन-सा फबगा मुझ ?

मैं खुद ही शर्मिन्दा हा गया। लकिन मुसीबत की ऐसी कठिन घड़ी म आदमी का वह बोध नहीं रहता। औरा ने क्या साचा इस चिन्ता से हार की आशंका ही बड़ी हो जाती है। इसीलिए ममसाहब की पाशाक की स्वल्पता देखकर दुःख ता हुआ पर शिकायत न कर सका।

लकिन किसी बात का काई नतीजा न हुआ। ममसाहब की सारी

कामिनियाँ बेकार गई। उन्होंने अपने वैसे प्यारे गाका को फर्श पर छितरा दिया और बिस्तर पर पड़कर रोने लगी। राबट को वे हरा न सकी।

ममसाहब ने कहा राबट को वष्णवी से ही जीवन जिज्ञासा का उत्तर मिल गया था। पता चल गया था आधे से काम नहीं चलता। पूरा देना पड़ता है। सारे बन्धन तोड़कर अपने को पूर्णतया समर्पित कर देने पर ही जीवनेश्वर का परिचय मिल सकता है। वष्णवी ने कहा था देवता, नदी किनारे खड़े होकर जल छिड़कने से क्या होगा कूद पड़ो।

सन्ध्या के सूने अधेरे में प्रयाग में कोट-पटधारी राबट साहब से वष्णवी ने कहा था 'मैं तुम्हें आठ आना नहीं दूँगी देवता पूरे सोलह आने दूँगी। मेरी यह देह मेरा यह मन—सब तुम्हारा है।

राबट साहब ने पूछा था 'तुम्हें डर नहीं है? लाज नहीं?

वष्णवी ने इसका जवाब देने में जरा भी देर न लगाई। बोली लाज? तुम्हारे आगे मुझे कैसी लाज? चीर-हरण के समय कौरव-सभा में द्रौपदी जब तक लाज लिये तुम्हें पुकारती रही तुमने कुछ भी नहीं किया। लेकिन जब उसने लाज को तिलांजलि देकर पुकारा प्रभो तुम्हारे सिवा मेरा और कोई नहीं—कि तुमने उसकी लाज बचाई।'

अरे! क्या कह गई! कह क्या गई यह औरत! बिजली की नाई राबट के सारे शरीर में सिहरन दौड़ गई और कृष्णप्राण के रूप में राबट का नया जन्म हुआ।

मदनपुर के उस निस्तब्ध निर्जन में अपनी देह बिछाए ममसाहब ने राबट से कहा था, और मैंने क्या तुम्हें कुछ भी नहीं दिया? क्या तुमने मुझसे बिना पूछे संसार, सम्पत्ति और यौवन का बलि चढ़ाई? चलो कोट चलो।

'उसके बाद?' मैंने पूछा।

आँसू पोछती हुई ममसाहब बोलीं उसके लौटने का कोई उपाय नहीं। जिस पुल से उसने नदी पार की थी उस पुल को उसने खुद ही जला

दिया। ही हैज़ वन ट दी ब्रिज बिहाइंड हिम।

तो फिर कल सवेरे ही लौट चलें ? मैंने पूछा।

मेमसाहब तयार हो गई थी। मुमकिन हो तो रात को ही चलने को तयार थी। किवाड़ की कुण्डी लगाकर वे सो गई और बाहर बरामदे की खाट पर कम्बल ओढ़े मैं निद्रादेवी की आराधना करने लगा। लेकिन नींद क्यों आने लगी ? इतने दिनों के बाद परिपूर्ण जीवन की खोज मिली। किताबों म ऐसे व्यक्ति की जीवन कहानी पढ़ी थी—लेकिन पढ़ना और आँखों से देखना तो एक बात नहीं। सोचा इस जीवन पर मैं कहानी लिखूँगा—परिपूर्ण विश्वास की कहानी।

सोचते सोचते कब सो गया था मालूम नहीं। अचानक नींद टूट गई। रात के अंधेरे में मिसेज़ बोनर के दरवाज़े पर जैसे कोई बड़ी साव धानी से खट-खट कर रहा था। फुसफुसाकर पुकार रहा था— ऐलिज़ाबेथ एलिज़ाबेथ

मैं चौंक उठा। अरे कृष्णप्राण ? नहीं-नहीं असम्भव है। यह कैसे हो सकता है ? आधी रात को सबकी नज़र बचाकर संसारत्यागी कृष्णप्राण भला किसी स्त्री से मिलने के लिए क्या आने लगे ?

गले की आवाज़ से ही मेमसाहब शायद समझ गई थी। वे ड्रेसिंग गाउन पहने ही दरवाज़ा खोलकर बाहर निकल आई। अंधेरे में मैं उनकी शक्ल नहीं देख पाया। लेकिन अचरजभरी दबी आवाज़ कानों में आई थी। राबर्ट ? तुम ?

इसके बाद की घटना के लिए मैं तयार नहीं था। मेमसाहब मेरी खाट के पास आई। गौर किया कि मैं सोया हूँ या जगा। (मेरा दोष माफ करें मैं उस समय नींद का बहाना बनाए पड़ा था।)

दबे पाँवों बड़ी सावधानी से दोनों बाहर निकल गए।

यह क्या गति हुई मेरी ! इतने दिनों की कोशिशों से जिन्हें मैंने श्रद्धा के आसन पर बिठाया, वे भी मुझे निराश करेंगे ? मैंने तय जो कर लिया है कि सारी शक्ति लगाकर परिपूर्ण विश्वास की एक कहानी

लिखूँगा। अपने पाठकों को बुलाकर कहूंगा देखो मैं सिनिक' नहीं हूँ।

आवेग से मैं भी उठ खड़ा हुआ। इस नाटक की परिणति मुझे देखनी ही होगी।

चान्दनी म मदनपुर मानो तर रहा था। पहाड़ की चोटी पर मेघ। मेघ पर मेघ। सफेद मेघ से भरा पहाड़ की ऐसी आधी रात की मिठाई मैंने कभी नहीं देखी।

मुझसे कुछ ही आगे आगे कृष्णप्राण और मेमसाहब चल रहे थ। किसे लक्ष्य करके नहा नहृ सकता लकिन मैंने कातर होकर आवेदन किया मेरे विन्वास की कहानी को चौपट न करो। युग-युग स विंबिसार और अगाक का धुंधली दुनिया से लकर असीरिया, बेबिलोनिया मिस्र ग्रीस रोम दिल्ली और कलकत्ता में पचगर की जीत होती आई है। मनुष्य रूप की रानी उवनी क चरणा म जाने कितने साधकों ने अपनी समस्या का फल चढ़ाया है। आनेवाली दुनिया में भी न जाने कितनी बार इसी की पुनरावृत्ति होगी। मदनपुर की इस चाँदनी धुली रात म उस आदिम रिपु से मेरा परिचय नहीं ही हो तो क्या ?

कृष्णप्राण और मिसज बोनर एक चट्टान की ओट म खड़े हो गए। उस समय भी उनके वदन पर गेरुआ सोह रहा था।

उत्तजित मिसेज बोनर न पूछा, "क्यों ? क्यों आये तुम ?

कृष्णप्राण न उदास होकर कहा, 'तुम्हें एक भेद की बात बताऊं। आए बिना मुझसे रहा नहीं गया।

मिसेज बोनर और भी उत्तजित हो उठा— कौन सी बात ? बताओ मुझे बताओ।

'प्रयाग म जब मैंने मीरा की ओर देखा था मेरी निगाह म पाप था। पाप ही मुझे खींच ले गया था। लेकिन उसके बाद मैंने पवित्र होने की कोशिश की।

जरा रुककर कृष्णप्राण ने मुरझाए स्वर म कहा, मीरा ने चाहा था मैं कूद पड़ूं। लकिन मीरा का तुमको—सबको मैंने झूठ कहा है। मैं,

तूट नहीं सका आज भी मैं अपने को पूर्णतया उत्सर्ग नहीं कर सका हूँ। याद है तुम्हें मेरे जन्म दिन पर तुमने मुझे एक कमीज और एक पट उपहार दिया था ? मैं वही पहनकर संगम पर गया था। मैंने सब-कुछ छोड़ा सन्देह नहीं लेकिन उस कमीज और पट को आज तक झोली में छिपाकर रखा है। मीरा से भी नहीं कहा। कहीं कहीं फिर जरूरत हो किसी दिन। और कुछ न कहकर लज्जा से सिर झुकाकर कृष्णप्राण तेजी से पहाड़ियों में ओझल हो गए।

मेमसाहब और मैं उसी दिन सवेरे मन्नपुर से चल आए। कृष्णप्राण की आखिरी मुलाकात की बात मेमसाहब ने मुझसे लेकिन नहीं कही। पानसिंह के पत्र से मालूम हुआ कि कृष्णप्राण आश्रम छोड़कर कहीं चल दिए।

वे अभी कहाँ हैं नहीं जानता। लेकिन वैरागी की झोली में एक कमीज और पट आज भी जरूर इन्तजार की घड़ियाँ गिन रहे हैं। कौन जाने शायद कभी उनकी जरूरत हो जाए!

मिसेज बोनर और कृष्णप्राण का जीवन रहस्य मेरे सामने हाईकोर्ट की नौकरी करते-करते ही उद्घाटित हुआ था। हाईकोर्ट से रास्ता चुकाकर जहाँ गया उसका नाम है चौरंगी।

नागरिक सभ्यता का जो रूप रोज रात के अँधेरे में कलकत्ता की छाती पर खड़े होकर हम बाहर से देखा करते हैं और देखकर चकित होते हैं लेकिन जिसके अन्तर के अन्तस्तल में प्रवेश करना हमारे लिए कभी सम्भव नहीं होता और इसलिए जो हमारे लिए सदा अजाना ही

रह जाता है घटनाक्रम से कभी मुझे उसके आमने-सामने खड़ा होने का दुर्लभ सौभाग्य मिला था। इस दुनिया में मैं कैसे आ निकला था 'चौरंगी' में पहले ही यह निवेदन कर चुका हूँ।

आज के एक स्वनामधन्य लेखक ने अपनी किसी एक रचना में लिखा है अगर किसी जाति और उसकी सभ्यता को जानना चाहते हो तो जाकर इस बात का पता लगाओ कि 'हाउ दे लिव एंड हाउ दे लव'—कैसे रहते हैं और किस तरह से प्रेम करते हैं। इसी में कथा ता उनकी सभ्यता का एक विश्वसनीय तथा सहज ही समझ में आनेवाली झाँकी मिलती है। यह बात न केवल देश बल्कि विशेष अर्थ में किसी खास शहर पर भी लागू होती है यह विश्वास बहुतों का है।

मैं खुद भी कभी इस पर विश्वास करता था। उसके बाद एक दिन मेरी चकित आँखों के आगे चानक नगरी की पायशाला के ग्रीन रूम का दरवाजा खुल गया। मुग्ध में नियन और नाइट्रन से झलमलाती चौरंगी के शाहजहाँ होटल में एक मामूली कमचारी की भूमिका में पाद प्रदीप के सामने जा खड़ा हुआ। और विश्वविमोहिनी चौरंगी की उस अभिजाततम पायशाला में ही पहले-पहल सुना 'सभ्यता को पहचानना चाहते हो तो शहर में जाओ। और अगर नगर को पहचानना चाहते हो तो यह खोज करो कि वहाँ के लोग कैसे रहते हैं किस तरह से प्रेम करते हैं और किस तरह से उत्सव के अन्त में एक दिन मौन मृत्यु के देश को चुपके चल देते हैं। लेकिन यह सब देखने जानने के लिए नाहक ही समय और धीरज के अपव्यय की जरूरत नहीं। इसका सबसे आसान उपाय यह है कि दिन ढले साँझ के घूँघट की आड़ में अपने प्यारे शहर की पायशाला में हाजिर हो जाओ। नगर और नागरिक का सच्चा रूप खान की इच्छा रखने वाले दर्शक की इन आँखों के आगे टेलीविजन की तसवीर जैसा साफ झलक उठेगा।

यूरोपीय ढंग से चलने वाले शाहजहाँ होटल का मैं एक मामूली रिसेप्शनिस्ट था। सुपरिचित होटल जीवन के भाष्यकार का काम जिन्होंने मुझे—

लिए किया जिन्होंने इस दुरूह जगत् के अंतर की वाणी को हृदयगम कराने में मेरी सहायता की थी उनका नाम था सत्यसुंदर बोस उर्फ सटा बोस। उनको छोड़कर होटल शाहजहाँ में जीवन की कल्पना करना भी मेरे लिए सम्भव नहीं। मेरी चौरंगी दरअसल इन्हीं सत्यसुन्दर-दा की स्मृति चित्र है।

सटा-दा ने एक दिन उस मशहूर कथन— एवरी कंट्री गेटस दी गवर्नमेंट इट डिजर्व ज —की नकल पर कहा था— एवरी सिटी गेटस दी होटेल इट डिजर्व ज। जैसा शहर वैसा ही होटल होता है। मिस्टर हाब्स नाम के हमारे एक विदेशी घुमन्ती ने (इनकी चर्चा चौरंगी में विस्तार से कर चुका हूँ मेरी इस रचना के पीछे उनकी देन बहुत थी।) हंसकर कहा था थोड़ा और बढ़कर यों कह सकते हो एवरी होटेल गेटस दी कस्टमर इट डिजर्व ज। जैसा होटल वैसे ही लोग आते हैं।

यह बात चौरंगी लिखते समय याद नहीं आई थी ऐसी बात नहीं। लेकिन अपने स्वार्थ से ही इसे मन के निरे गहरे प्रदेश में प्रवेश नहीं करने दिया क्योंकि दिमाग में ऐसी बात के रहने से अपना कर्तव्य करने में बाधा पड़ने की विशेष सम्भावना थी। मैं उस वक्त प्रासादोपम पान्थशाला के कमरे-कमरे में नाना रंगों से रंगीन जीवन को खिलाने के नशे में चूर हो रहा था। मेरी अनुभवहीन आँखों के आगे उन जुलूसों ने जिनकी सोच भी नहीं सकता मुझे चकित और डगमग वाक्शक्तिहीन कर दिया था।

उस समय तो शाहजहाँ होटल का यह नया रिसेप्शनिस्ट अनुभवी और जीवनमर्मी सत्यसुंदर बोस की स्नेह-छाया में केवल आदमी ही देख रहा था और देखते देखते सोच रहा था कि दुनिया के विभिन्न प्रान्तों के विभिन्न समस्याओं से घिरे ये लोग शाहजहाँ के परिवेश में फबते हैं या नहीं। उसी प्रकार से उस होटल के जीवन उसमें आने-जाने वाले लोगों और उसके कर्मचारियों के सुख-दुख की बातें मैंने बड़े जतन से माला की तरह गूँथी। दूसरी तरफ से यानी जैसा होटल है वैसे ही लोग आते हैं

इस बहुकथित और बहुविज्ञापित उक्ति की सचाई झुठाई को कसौटी पर कसने की कोशिश नहीं की।

अब आज शाहजहाँ होटल मुझे आश्रय नहीं देता। कुछ दिन पहले रात के अँधेरे में उसने न केवल मुझे बेकार बल्कि बेपनाह भी कर दिया था। उसके विपन्न के त्रिनयन ने मुझे लाल-पीला होकर बता दिया था कि अब मैं उनका कोई नहीं होता हूँ। अब मेरी जगह दूसरे लाखों-लाख लोग की तरह तारों से जगमगाते आसमान के नीचे है। चौरंगी ना कर्जन पार्क जहाँ से मैं शाहजहाँ में पहुँचा था फिर वहीं लौटा।

बेकार मैं अपने मध्यवित्त आक्रोश की आग में शाहजहाँ के जीवन को (कम से कम साहित्य के आँगन में) छार छार कर दूँगा—ऐसी एक सनक शुरू शुरू मुझ पर सवार हो गई थी। लेकिन अपने को मैंने जब्त कर लिया। तय कर लिया कि पांथशाला के अनगिन मेहमानों तथा कर्मचारियों के जीवन चित्र प्रीति और श्रद्धा के रंग से रँगकर अपने पाठकों को भेंट करूँगा।

उसके बाद की घटना उनके लिए अजानी नहीं जिन्होंने 'चौरंगी' पढ़ी है। उसके अंत में होटल ने अपनी अचानक विदाई की जो कहानी लिखी है वह कुछ आज की घटना नहीं। शाहजहाँ होटल से मैनेजर मार्कोपोलो का नये जीवन की खोज में स्वर्ण उपकूल की ओर जाना सुजाता मित्र के वियोग में कातर मेरे दुःख-दुर्दिन के साथी सत्यसुन्दर-दा उर्फ सटा बोस का भी शान्ति की तलाश में गोल्ड कोस्ट चल देना—इसके बाद भी तो कितने दिन गुजर गए।

जो एक बार जाता है वह शायद सदा के लिए ही जाता है। इस संसार में चलते हुए एक बार जो करीब से दूर हट जाता है उसे फिर पास आते तो नहीं देखा। चौरंगी के उस सपने भरे जीवन से मुझे अकेला छोड़कर जो लोग गायब हो गए यह उन्माद स्वप्न में भी न की थी कि कभी उनकी भी खबर मिलेगी।

लेकिन आज अगर मुझसे कोई पूछे कि 'चौरंगी' लिखने का सबसे—

बड़ा पुरस्कार तुमने क्या पाया ना जवाब देन म मुझ जरा भी देर न लगगी । मैं वह चिट्ठी पूछने वाले की ओर तुरत बढा दूगा जो अभी कुछ दिन पहल हवाई डाक से आई है । कहूँगा इसे पढ देखिए । पूछने वाले सज्जन जरा अवाक-से हाकर मरी ओर ताकते हुए अप्रतिभ से कहगे— बेशक किसी प्रवासी पाठिका की भेजी हुई प्रशसा की चिट्ठी है । मैं कोई जवाब न देकर सिफ लिफाफा ही गम्भीर होकर उनकी तरफ बढा दूँगा । लिफाफे पर नाम-पता मरा नही पत्र के सम्पादक का है ।

अग्रेजी म पता लिखा हुआ वह लिफाफा जिस दिन रीडाइरेक्ट होकर डाकिए की माफत मरे हाथ म आया मैं उसे बिना खोल ही चौक उठा । मुझ यह समझने म पल भर भी न लगा कि ये गोल-गोल टाइप से पुष्ट हरूफ सत्यसुन्दर-दा क हैं ।

तुरन्त खोलकर पढ़ने लगा—

प्रिय शकर

पता नहीं यह चिट्ठी तुम्हार पास तक पहुँचगी भी या नही । फिर भी तुम्हें लिख बिना रहा नही गया ।

मैंने यह उम्मीद ही बिलकुल छोड दी थी कि कभी तुम्ह ढूढकर निकाल सकूँगा । जिस होटल म मार्कोपोलो खुद काम कर रहे हैं और मुझ नौकरी दी है वह काफी बडा हा गया है । इस इलाके म इसका बडा नाम है । या समझो काम म डूबा रहता हूँ । भारत छोडकर आन के बाद स नही जानता क्या तुम्हारी याद बराबर आया करती । जी म हाता कि किसी तरह से तुम्हारा हाल चाल मालम हो । लकिन तुरन्त यह सोचने में बडी तकलीफ होती कि दुनिया क इस घने जनारण्य मे शकर नाम का मेरा एक परम स्नेहभाजन सहकर्मी सदा के लिए खो गया, क्योकि शाहजहाँ हाटल क पते पर मैंने तुम्ह तीन-तीन चिट्ठियाँ भेजी । एक का भी जवाब नही आया । हाटल के मालिक के नाम भी चिट्ठी भेजी थी । उन्होंने सिफ इतना ही लिखा कि हमारे यहाँ इस नाम का कोई कमचारी नही है ।

आखिरकार यहाँ के एक सज्जन सरकारी डेलिगेशन के अन्यतम सदस्य होकर भारत जा रहे थे। मैंने उनसे अनुरोध किया कि कलकत्ता जाएँ तो जरा शाहजहाँ होटल के रिसेप्शन-काउण्टर में तुम्हारी खोज लें। लौट कर उन सज्जन ने बताया, तुमने वहाँ की नौकरी छोड़ दी है और होटल में किसी को तुम्हारा पता नहीं मालूम है।

सोचा, यहीं अन्त हो जाएगा। लेकिन जिसका अन्त नहीं होना है जिसका एक अंक अभी अभिनय को बच रहा है वहाँ मेरे सोचने से क्या आता-जाता है!

हम जहाँ नौकरी कर रहे हैं उस शहर में कभी बंगाल के किसी पूत की शक्ल देख पाऊँगा यह आशा ही नहीं की थी। साल में किसी एक भारतीय का मुँह देखकर ही तसल्ली कर लेता हूँ। लेकिन बहरहाल एक बंगाली डाक्टर यहाँ सरकारी नौकरी पर आए हैं। एक भोज में उनसे भेंट हो गई। बंगाली की उपाधि देखते ही मैं बेताब हो उठा भीड़ को चीरता हुआ उनके पास जा पहुँचा।

वे एक्स रे के विशेषज्ञ हैं। विश्वविद्यालय की बहुत-सी डिग्रियाँ और डिप्लोमावाले ये भले आदमी कुछ साल यहाँ के अस्पताल में नौकरी करके फिर स्वदेश लौट जाएँगे। उनके यहाँ मैं आता-जाता हूँ। वहीं एक दिन देश साप्ताहिक के कुछ अंक देखने का सौभाग्य हुआ। जमाने से बंगला छूट गई। अपनी मातृभाषा को भूल तो नहीं बैठा यह जानने के लिए कुछ अंक वहाँ से उठा लाया।

बिस्तर पर लेटे-लेटे उसके पन्ने पलटने लगा कि एकाएक तुम्हारी रचना पर नजर पड़ी। उसके बाद बड़े चाव से कई हफ्ते तक तुम्हारे शाहजहाँ होटल के जीवन की कहानी पढ़ी। दम रोक अगले अंक की राह देखी यह भी कहूँ तो गलत न होगा। क्योंकि जिन लोगों का वर्णन तुमने करना चाहा है और कोई न जाने चाहे मेरे लिए वे लेखक से भी ज्यादा परिचित हैं। नटा हरिबाबू जिन्हें अपनी कहानी में तुमने काफी जगह दी है इसे सुनते तो शायद कहते कि माँ के सामने ननिहाल

की कहानी।

देखा अपनी कहानी में तुमने सुजाता-दी को भी नही छोड़ा है। कम-से-कम कुछ लोगों में तो उसका परिचय जाहिर हुआ है। वह भी परलोक से जरूर तुम्हारे प्रति स्नेह और प्रीति प्रकट कर रही होगी। एयर होस्टेस सुजाता मित्र किस प्रकार एक दिन शाहजहाँ के रिसप्शनिस्ट सत्यसुन्दर से परिचित हुई किस प्रकार से एक अविश्वसनीय परिवेश में हमने एक दूसरे को पहचाना कैसे सुजाता ने शाहजहाँ की पाषाणपुरी से शापभ्रष्ट सत्यसुन्दर का उद्धार किया और हवाई कम्पनी में अच्छी जगह दिलाई और उसके बाद जीवन का प्याला जब गाढ़े सुधारस से लबालब हुआ तो किस प्रकार अपने अनजानते ही सुजाता अभागे सत्यसुन्दर को आँसू बहाने के लिए छोड़कर दुनिया से विदा हो गई यह शायद किसी को मालूम ही नहीं हो पाता। उसकी यादगार को बनाए रखने के लिए जो काम मुझे करना चाहिए था वह तुमने किया। तुमने योग्य सहोदर का-सा कर्तव्य किया है। इसके लिए तुम पर ईश्वर की असीम करुणा बरसे।

तुम्हें सुजाता कितना स्नेह करती थी यह कोई जाने या न जाने मुझसे छिपा नहीं। परलोक में आत्मा नाम की चीज यदि रहती है और वह अभी तक अगर पुनर्जन्म की पुड़िया में फिर से दुनिया में नहीं आ गई है तो वह जरूर ही तृप्त हुई है। कौन जानता था कि इतने इतने लोगों के होते शाहजहाँ होटल का भूतपूर्व एक मामूली रिसप्शनिस्ट सुजाता को इस प्रकार से याद रखेगा।

नहीं कह सकता कि क्या इस समय शाहजहाँ के छोड़ आए जीवन की छवि आँखों में साफ झलक आई है और मेरा संगदिल भी आँखों की आकस्मिक याद को रोक नहीं पा रहा है।

अँधेरे अफ्रीका महादेश के एक छोर पर बैठा मेरा सामीप्यविहीन प्रवासी हृदय फिर मानो हुगली नदी के मुहाने को लौट जाना चाहता है। लेकिन यह होने का नहीं। तुम्हारा सत्यसुन्दर दा अब किसी भी

प्रकार से शाहजहाँ की जिन्दगी को नहा अपना सकता। वहाँ जाने पर जो चिन्ताएं मेरे सिर पर सवार हो जाएगी हो सकता है वे मुझे पागल बना दें। बहुत दिनों के बाद जब मौत मेरे दरवाजे के कड़े खटखटाएगी जब मैं समझ लूगा कि सुजाता से मेरे मिलने का समय अब आ पहुँचा, तो एक बार भारत वापस जाऊंगा—सेंटिमेण्टल जर्नी एराउण्ड इण्डिया।

उस समय मौका लगे तो होटल की परिक्रमा म तुम भी मेरा साथ देना। उस दिन तमसे मिलने की मुझे जरूरत पड़ेगी। चाहे जहाँ भी रहो मौका निकालकर तुम्हें मुझसे मिलना ही होगा। मैं अपना यह हाथ तुम्हारे माथे पर रखूंगा और अपनी तथा सुजाता की ओर से तुम्हे आशीर्वाद दूगा। मेरी अधूरी इच्छाए जिनमें से कई तो कभी पूरी ही न होंगी—कम से-कम यह एक उस समय पूरी होगी।

सुनो दादा मैं बगला मे कितने दिनों के बाद चिट्ठी लिख रहा हूँ जानते हो ? बम्बई छोड़ने के बाद जब से मार्को के इस होटल मे आया हूँ तब से किसी को बगला में चिट्ठी नहीं लिखी और उसके पहले ही कितनी लिखी थी ? तुम्हारी सुजाता दी के डर से कई बार मातभाषा म चिट्ठी लिखने की नाकामयाब कोशिश की थी जिन्हें उसने चमड़े की एक खोल म डाल रखा था। शायद मौका मिलने पर उद्यान म ही उन चिट्ठियों को पढ़ा करती थी क्योंकि उन चिट्ठियों पर बहुत बार पढ़ने की निशानी है।

दुघटना मे सुजाता के मर जाने के बाद उसकी दूसरी अनेक पार्थिव सम्पत्तियों के साथ फिर से उन चिट्ठियों का भी मैं मालिक बना। खुद की लिखी उन चिट्ठियों को मैं आज भी गहरी रात म बिजली की रोशनी मे पढ़ा करता हूँ। अपने-आपका मानो फिर से आविष्कार करता हूँ मैं। सोचते हुए सच ही हैरानी होती है कि जिसने ये चिट्ठियां लिखी वह कभी इसी हृदय मे रहता था। मैंने ऐसा इन्तजाम कर रखा है कि मेरे मरने के बाद ये चिट्ठियां तुम्हारे पास पहुँच जाए। मेरे बिल की सबरगीरी रखने वाले अगर मेरे इस अनुरोध को रखें और अगर उस वक्त

तब भी तुम्हें सत्यसुन्दर-दा तथा सुजाता दी के बारे में आग्रह हो तो हो सकता है इन चिट्ठियों से तुम सर्वथा एक नये सत्यसुन्दर दा का आविष्कार करोगे। जब मैं दुनिया में रह नहीं जाऊंगा तो मुझे लज्जित तंग या विचलित नहीं होना पड़ेगा। बन पड़े तो नये सिरे से चौरंगी का संशोधन कर लेना।

तन्दुरुस्ती अभी भी मेरी बुरी तरह अच्छी है। ऐसा ख़याल था कि इस अन्धकार महादेश की कोई विचित्र बीमारी इस नवागन्तुक की देह में आ जम कर अपनी बस्ती बढ़ाएगी। ऊबे और असन्तुष्ट दर्शक की नाई मैं भी इस जीवन-नाटक के अन्तिम अंक के इन्तज़ार में बेहद बेसब्र हो उठा हूँ। फिर भी जिस ढंग से सब चल रहा है उससे लगता है कि मेरी ये चिट्ठियाँ जब तुम्हारे हाथ लगेंगी तब तुम्हारी भी उम्र कुछ कम नहीं होगी। उस दिन तुम्हारे अन्दर का नौजवान जिन्दा नहीं भी रह सकता है जिसका मैंने शाहजहाँ होटल के काउंटर में स्वागत किया था जिसे मैंने काम-काज सिखाया था। ऐसी हालत में चौरंगी के सत्यसुन्दर अध्याय का पुनर्विन्यास न करना ही ठीक होगा।

ख़ैर छोड़ो इन बातों को। तुम्हारी 'चौरंगी' पढ़ते-पढ़ते कितनों की याद आती है। देख रहा हूँ उनमें से कुछ को तो तुमने ठीक कैमरे की तरह पकड़ लिया है। कुछ को छोड़ भी दिया है देख रहा हूँ। क्या बात है?

तुम्हारी किताब पढ़ते-पढ़ते शाहजहाँ होटल के उन बीते दिनों को मन-ही-मन एक बार फिर देख आया। नटाहारी बाबू को तुमने बहुत सही उतारा है। शाहजहाँ के बनिया-बाबू इस समय कहाँ हैं जानते हो क्या? वे तुम्हारी किताब पढ़ें तो खुश हों शायद। या कि कहा नहीं जा सकता तुमने चूँकि उनके हृदय की पीड़ा को बाहर प्रकाशित किया है इसलिए झुंझला भी सकते हैं।

उद्योगपति मिस्टर अगरवाला के गेस्ट सूट की स्थायी होस्टेस करबी गुहा की छवि ने मेरे मन को फिर उदास कर दिया। उसकी बात

न भी लिख सकते थे। दुनिया म दुख तो सदा ही रहेगा जिधर देखो उधर ही दुख है—तो साहित्य के आँगन म उसके गले म माला डाल कर स्वागत करने की क्या पड़ी है? तुम शायद यह कहो कि काँटे स काँटा निकलता है दुख की कहानी से दुखी को सान्त्वना मिलती है। सत्य का स्वरूप देकर तुम्हारी शिल्पी सत्ता शायद सन्तुष्ट होती है। लेकिन मुझे अब अच्छा नहीं लगता।

मेरी जो मानसिक स्थिति है उसके हिसाब से अब सिर्फ वही कहानियाँ अच्छी लगती हैं जिनमें आखिर म राजकुमार राजकुमारी से विवाह करके बेटे-पोता तक सुख से राज करता है।

इस बात पर तुम्हारी शक्ल कसी बन गई होगी यह मैं बिना देखे ही कह सकता हूँ। कितने दिनों तक देखता रहा हूँ तुम्हें! तुम मुसकराकर आँखों का फाकस मुझ पर डालकर कह रहे हो कैसा मिलनांतक जीवन भला होटल म कहाँ मिलेगा?

लेकिन क्या तुम्हीं बताओ ऐसी छोटी-मोटी घटनाएँ शाहजहाँ म न घटी नहीं थी क्या? मुझे तो वसी एक घटना याद आ रही है जिसम तुम्हारे प्रिय बरा गुड़बड़िया की नौकरी जाते-जाते को थी। यह घटना जब हुई तुम होटल म नहीं आये थ।

अंग्रेजों का उस समय बेहिसाब रौब-दाब। हमारे होटल म आने वालों म स साढ़े चौदह आना किस्म लोग ब्रिटिश पार्लमेंट क वोटदाता होते। किस्म-किस्म क लोगों म बहुतेरे छोटे छोकरे—साहित्य की भाषा म तुम जिन्हें युवक-युवती कहते हो—भी आते थ। सुनकर तुम्हें हैरत होगी कि बहुतेरी अंगरेजिनें अपने हनीमून भ्रमण की स्थान-सूची म कलकत्ता का नाम शामिल करना पसन्द करती थीं। एक बहुतेरे अतिथि शाहजहाँ म रहते थ। रहना ही कहूँगा इस क्योंकि कोई-कोई यहाँ आ जाते तो फिर जाने का नाम नहीं लेते। घूमना-फिरना दर्शनीय स्थानों का देखना खुशी हवा का आनन्द लेना सब ताक पर रह जाता।

किवाड़ खिड़की बन्द किए होटल मे ही पड़े रहते ।

इनम से किसी किसी के रहने से होटल का हुलिया ही बदल जाता। ऐसा छोटी जगह म ही नहीं बडी जगहों म भी कसे होता है नही समझ पाता। पता नही कसे सबको पता चल जाता कि ये नवविवाहित हैं। डबल उबले (हाइ बॉयल्ड का रूपान्तर) साहबों का मिजाज एकाएक जसे बदल जाता। ये कबूतर-कबूतरी को प्राइवेसी देने को उत्सुक हो उठते। प्राय नजर आता ब्रेकफास्ट के समय डाइनिंग टेबल पर जिधर नवविवाहित पति पत्नी बठ हैं उधर लगभग खाली पड़ा है। अपनी धुन म लापरवाह कोई अगर उधर जा बठता तो शुभपीगण उसे इस तरह से ताकते माना वह बेचारा किसी महिला की श्लीलता हरण कर रहा हो। यह समझकर वह भला आदमी सिर झुकाए दूसरी तरफ जाने की राह नहीं पाता।

हनीमून कपल को सब बातों म वी आई० पी० जसा सम्मान देने के लिए सब हम पर अखबार की भाषा मे जिसे कहते हैं नतिक दबाव देते। लिहाजा काउंटर पर भीड भी होती तो उन्ह छोड़कर हम मधु यामिनी दम्पति को पहल अटेंड करते। मतलब यही कि आप लोगों को हम पहल विदा कर देना चाहते हैं—इनकी अपेक्षा आपके समय की कीमत कहीं ज्यादा है।

सब बातो मे उनकी जरा खास खातिरदारी होती। मसलन दक्षिण के एक सौ सत्ताईस नम्बर के कमरे का नाम ही था हनीमून-सूट। मार्कोपोलो से पहले हमारा एक पगला मनेजर था। वे जेनुइन नये दम्पति से उस कमरे का किराया कुछ कम लिया करते थे। लकिन आगे चलकर कम्पनी के एकाउट में घूमते फिरत सल्समन और अफसरो की कृपा से व्यवसाय की तरक्की हुई और ये बातें गायब हो गईं।

हनीमून वाल बहुतेरे जोड़े इस वी आई० पी० आदर को सहज ही स्वीकार करते। मुश्किल पड़ती उनको लकर जो जरा लजील होते। नई शादी गोया कोई अन्याय अपराध हो। लिहाजा हनीमून को वे प्रथा

की फ्लड-लाइट की ओट में मनाना चाहते।

तुम शायद यह सोच रहे हो कि हम इजना जोड़ा म यह कसे समझते थे कि यह जोड़ा नवविवाहितों का है ?

तुम्हारा यह सवाल नहीं नटाहारी बाबू सुनते तो तुरन्त जवाब देते किसने कब शादी की है यह मैं कमरे म कदम रखते ही समझ जाता हूँ। आपके हनीमून सूट का क्या वह गया-बीता एक सौ एक नम्बर का कमरा जिसे आप लोग सबसे पहले गढ़ने की कोशिश करते हैं वहाँ भी अगर नया-नया ब्याह किया हुआ बहू-दूल्हा रहे तो मैं कह दे सकता हूँ।

नटाहारी बाबू होटल के ही कमरे के चद्दर-तकिये की देखभाल करते-करते माहिर बन गए थे। सुमन अपनी किताब ही में तो लिखा है कि उन्होंने लाट साहब तक का बिस्तर बिछाया था। नटाहारी बाबू न कहा था भजी अपने मध्यवित्त गृहस्थ घर की लड़कियों की माँग में सिन्दूर भरने का ढंग देखकर ही समझ में आ जाता है कि इनकी अभी अभी शादी हुई है। इन मेमवाली औरतों म तो यह बला ही नहीं। फिर भी उनकी बातों से मैं समझ जाता हूँ। बेचारे दूल्हे झूमते-से रहते हैं जैसे अफीम के नशे में हों—न छ में न पाँच में। लेकिन नई ब्याहता बीबी! दाँत से जैसे भुने मटर चबा रही हो—बातों की बौछार! य आपको तंग कर मारेंगे। चैन से हरगिज नहीं रहने देंगे। सलाम भेजेगी। कहेगी चादर बदलवा दीजिए। मजे जनाब खुद लाट साहब क यहाँ खुद लाट साहब की बीबी जिस पर सोती है वहाँ भी रोज नाम को ही चादर बदली जाती है यानी हेड बेडमैन सिर्फ चादर को उलट देता है। और आप तो जनाब हरिदासपाल होटल म हैं। यहाँ घड़ी घड़ी कौन चादर बदले कहिए तो!

यही बात है। लेकिन साफ-साफ कह तो कौन ? आपके शास्त्र में कौन लिख गया है न खरीदार की बात हर हालत में ठीक होती है। लिहाजा सिर नवाकर सुनो और बदलो चादर।

देवीजी उस वक्त रंग पर सिर खपा रही हैं और बेचारा छोकरा

होस्टेस की नौकरी नहीं रहेगी। तो हमारी गाड़ी यहा गाहजहाँ म आ जाएगी। बसे म श्रीमान् आकर जिससे हम दूसरे किसी कमरे म न ठल दें।

हनीमून सूट म गुडवेडिया की जो गत हुई उसे लिखते हुए तुम्हारी सुजाता दी की व बातें याद आ रही है। सोचता हूँ इसी सूट में कितनी घटनाए घटते देखी। केवल इसी सूट पर तुम एक बहुत बडी किताब लिख सकते थे। इसी सूट म इण्डोनेशिया के एक बौद्ध सन्यासी का पतन हुआ था। सन्यासी के अध पतन की कहानी से सिनिका को आनन्द आ सकता है मगर मुझे वह जरा भी अच्छी न लगी। मैं तुम्हें जहाँ तक जानता हूँ तुम्ह भी अच्छी नही लगेगी। सो मिग प्रतीपवुद्ध की कहानी का अभी रहने दो।

उसी कमरे म एक दिन जान दिनमणि विश्वास अपना बग और कमरा लकर आकर ठहरे थे। आदमी अकेल लकिन कमरा लिया था डबल बेड का। उस समय हम लोग समझ नही सके। उस कमरे में जाने से पहले भले आदमी ने कहा थोडी ही देर मे मेरी स्त्री आ जाएगी।

वे अपने घर से बार बार काउंटर पर फोन करते रहे मरी स्त्री आ गइ ?

हमने बताया जी नही तो। अभी तक तो श्रीमती विश्वास नहीं आई हैं।

उन्होंने कहा अजीब मुसीबत है। उनके साथ-साथ हम लोग भी मुसीबत में पड गए थे। होटल के रिसेप्शनिस्ट का काम करने म बडे धीरज की जरूरत होती है। लकिन अपने धीरज का तार भी टूटने लगा था समझिए। हर दस मिनट पर टेलीफोन की घंटी बज उठती थी—'हलो, मेरी वाइफ बुला विश्वास आ गइ क्या ? देखने म बडी खूबसूरत हैं। आँखो पर रीमलस ऐनक। दाएँ गाल पर तिल है एक छोटा सा।

की फ्लड-लाइट की ओट में मनाना चाहते ।

तुम शायद यह सोच रहे हो कि हम दजना जोड़ा म यह कैसे समझते थे कि यह जोड़ा नवविवाहितों का है ?

तुम्हारा यह सवाल कहीं नटाहारी बाबू सुनते तो तुरन्त जवाब देते किसने कब शादी की है, यह मैं कमरे मे कदम रखने ही समझ जाता हूँ। आपके हनीमून सूट का क्या वह गया-बीता एक सौ एक नम्बर का कमरा जिसे आप लोग सबसे पहले गहाने की कोशिश करते हैं, वहाँ भी अगर नया-नया ब्याह किया हुआ वह दूल्हा रहे तो मैं कह दे सकता हूँ।

नटाहारी बाबू होटल मे ही कमरे न चद्दर-तकिये की देखभाल करते-करते काइयाँ बन गए थे। तुमने अपनी किताब ही मे तो लिखा है कि उन्होंने लाट साहब तक का बिस्तर बिछाया था। नटाहारी बाबू न कहा था अजी अपन मध्यवित्त गृहस्थ घर की लड़किया की माँग मे सिन्दूर भरने का ढग देखकर ही समझ में आ जाता है कि इनकी अभी अभी शादी हुई है। इन फ्राकवाली औरता म तो वह बला ही नहा। फिर भी उनकी बाता से मैं समझ जाता हूँ। बेचारे दूल्हे झूमते-से रहते हैं जसे अफीम क नशे में हा—न छ में न पाँच में। लकिन नई ब्याहता बीबी! दाँत स जसे भुने मटर चबा रही हो—बातो की बौछार! ये आपको तग कर मारेंगे। चन स हरगिज नहीं रहने देंगे। सलाम भेजेंगी। कहेंगी चादर बदलवा दीजिए। अजी जनाब खुद लाट साहब क यहाँ खुद लाट साहब की बीवी जिस पर सोती है वहाँ भी रोज नाम को ही चादर बदली जाती है यानी हैड बेडमन सिर्फ चादर को उलट देता है। और आप तो जनाब हरिदासपाल होटल म हैं। यहाँ घडी घडी कौन चादर बदले, कहिए तो!

यही बात है। लकिन साफ-साफ कह तो कौन? आपके शास्त्र म कौन लिख गया है न खरीदार की बात हर हालत म ठीक होती है। लिहाजा सिर नवाकर सुनो और बदलो चादर।

देवीजी उस वक्त रग पर सिर खपा रही हैं और बेचारा छोकरा

आँखें घिर किए सोच रहा है ईश्वर की दया से एक शादी तो कर ली। मेरी इस बीवी की रुचि सँधाकर रखने लायक। मगर जनाब मैं खूब जानता हूँ यह महज नयेपन का दिखौआ है। काम दिखाकर पति को ऍचाताना कर देने की चेष्टा। मतलब कि देखो तो सही कैसी रुचि है मेरी तुम्हारे लिए कितनी फिक्र है मुझे कितनी साफ-सुथरी हूँ मैं। और महज मॉडिनरी बीवी ही नहीं हूँ—सेक्रेटरी की सेक्रेटरी बाजन की बाजन और नौकरानी की नौकरानी।

सो जब भी कोई इस किस्म के लिए खुत-खुत करती है तो मैं कमरे में गौर से देखता हूँ और नया होलडोल नये कपड़े-लत्ते देखकर ही समझ जाता हूँ कि नई शादी हुई है। अभी तो चादर के लिए होटल के बाबू को खूब परेशान किया जा रहा है आगे कुछ भी नहीं रहेगा। उस समय तो गो रखाकर बेचारे पति का ही चादर पलटने के लिए कहना होगा। अपनी कमाई कौड़ी की खुद ही भीख माँगकर दफ्तर जाना पड़ेगा।

नटाहारी-दा की बातें मुझे बड़ी अच्छी लगती थीं। हम हँसते देख कर भले आदमी और भी बिगड़ उठते थे। कहते हनीमून नहीं जनाब। यह तो साहब का दाना खाता हूँ लाचारी है नहीं तो सब बात कह देता यानी मून—चाँद-से मुखड़े से फिक्र करके हँसकर मर्दों से यानी ठेलवाती है।

नटाहारी के सिवाय दूसरे जो लोग नये ब्याह का सुराग लिया करते वे थे बेरे। उनके इस कुतूहल के पीछे पैसा कमाने के सिवाय और कोई मतलब नहीं रहता।

अन्दर की खबरें पहले बेरे ही जान पाते। वे दूसरे बेरों से कहते और वे बेरे पोटरों को बता देते और इस तरह पता नहीं कैसे खबर सारे होटल में फैल जाती। बेरों का मतलब और कुछ नहीं होता बे-मौके फसाकर साहब से कुछ अदा करना। नई बीवी के सामने इनाम की माँग करने से साहब की मुट्ठी सख्त करने की गुंजाइश नहीं रहती। और

नहीं कम दिया तो कुछ इस जोर से ना-ना करते कि इज्जत-मान बचाने के लिए साहब को और भी कुछ विदेशी मुद्रा भारतवर्ष में रख जाना पड़ता।

बरा गुडवेड़िया के बारे में तुमने लिखा है। झमेला उसी ने खड़ा किया। उसकी ड्यूटी उस समय हनीमून सूट के सामने थी। एक जोड़ी आकर वहीं टिकी। उनके हाव भाव उनके सूटकेस तथा खाना का और और सरो-सामान देखकर गुडवेड़िया ने ताड़ लिया कि ये नव विवाहित हैं।

गुडवेड़िया की उम्र उस समय कम थी। होटल के सभी मामलों में वसा पक्का वह नहीं हो पाया था। लेकिन अक्ल थी उस्तरे-जसी। उसी से हमें पता चला कि ये लोग शादी के बाद देश भ्रमण को निकले हैं।

पति ने भांप लिया था कि गुडवेड़िया की निगाहों ने उन्हें ताड़ लिया है। सो उन्होंने चाँदी की चपत से गुडवेड़िया का जो गलाने की कोशिश की थी। यह बात भी हमें गुडवेड़िया से ही मालूम हुई थी। उस दिन उसके होंठ पर सुबह से ही हँसी लगी हुई थी। मुझसे उसने कहा था कि कल मेरा एक मनिआर्डर लिख दीजिएगा। मैं उसी वक्त समझ गया कि हजरत को अचानक कुछ पैसे मिल गए हैं।

उस पर जरा दबाव डालते ही मामला समझ में आ गया। उसने कबूल किया कि साहब ने उसे बुलाकर हाथ में पाँच रुपए का एक नोट खोंस दिया। कोई और कारण से नहीं साहब को पता था कि बरा के जरिए ही बात फलती है। वे चाहते थे कि होटल में यह बात किसी प्रकार से जाहिर न हो कि वे नवविवाहित हैं। गुडवेड़िया ने तुरन्त उन्हें दिलासा दी कि होटल के स्टाफ क्या होटल की छत पर जो कौआ बना बठती है उनको भी इसकी भनक तक न मालूम होगी। हाँ इसके बदले साहब से उसे भविष्य में और कुछ इनाम की आशा रहेगी।

मामला ऐसा ही चलता रहता तो आज मुझे उसकी याद नहीं रहती,

न ही लिखने की आवश्यकता होती। लेकिन याद है दूसरे ही दिन उलटा नतीजा निकला। वे साहब और उनकी स्त्री सबके ध्यान के केन्द्र बन गए। उन्हें देखते ही दूसरे लोग कनखियों से ताकने लगते। होटल के कर्मचारियों में भी एक मौन हलचल मच जाती। दो-एक मेहमानों ने तो दाम और प्रचलित शील का सिर खाकर काउंटर में फुस फुसाकर मुझसे पूछा भी—हू यू थॉट माइट हू इज दट जंटिलमन ? कब से यहाँ आये हैं ? कब तक ठहरेंगे बता सकते हैं ?

शाहजहाँ के काउंटर पर खड़े होकर मैं यूरोप और अमरीका के लोगों को घोलकर पी गया हूँ। दूसरों के लिए यहाँ ऐसा दबा कौतूहल जगाने में काफी कुछ ईंधन जलाने की जरूरत होती है। लिहाजा मैं जो थोड़ा अवाक नहीं हुआ सो नहीं।

लगा होटल में आने वाली अधेड़ महिलाएँ भी इस जोड़ी के पीछे पड़ गई हैं। इन्हें देखते ही वे लोग भी आपस में बोलने-बतियाने लगते। कभी-कभी उनकी बातों का थोड़ा-बहुत लाउंज से छिटककर काउंटर तक पहुँचा है। मैंने यहते सुना है अरे बाबा, होटल आखिर होटल ही है। उसकी प्रस्टिज क्या ? किसी बात में उनका अगर नाम रह सकता है तो वह खिलाने में। दूसरी बातों में उनका सतीत्व ढूँढना बेकार है कष्ट ही होगा। यही तो है तुम्हारा शाहजहाँ। सुना यहाँ ऐंकी-पेंकी नहीं चल सकती। लेकिन अब अपनी ही आँखों देख लो।

उस रोज शाम को मामला जरा टेढ़ा-सा हो गया। हनीमून सूट की भद्रमहिला खासी खीजी-सी मेरे पास काउंटर में आई। भवें टेढ़ी करके बोली मेरा खयाल था कि यह भले आदमियों का होटल है।

मैंने कहा, खयाल था क्यों ? अभी भी आपका वही खयाल रहे इसकी कोशिश करूँगा। बात क्या है कहिए ?

उनकी उम्र ज्यादा न थी। सिर के बाल तक में लोभनीय सौन्दर्य था। लिहाजा अब तक जरूर ही पुरुषों की प्रशंसा भरी विभोर दृष्टि को हजम करने की आदी हो गई होंगी। लेकिन उन्होंने कहा 'हम लोग

दुनिया के बहुत-से होटल देख चुके हैं। मगर कहीं भी लोग ऐसे असभ्य की भांति मेरी तरफ ताकते नहीं रहते थे। पहले बर्दाश्त किया। सोचा मामूली ऐप्रीसिएटिव सेन्स है। लेकिन लोग तो लोग तुम्हारे होटल के बैरे तक सिर्फ ताकते ही नहीं रहते मेरे मुड़ते ही एक दूसरे को कुहनी का धक्का देता है फुसफुसाकर चर्चा करता है। ऐसे तो नहीं चल सकता। सर्माफ़िंग मस्ट बी डन।

मैं क्या जवाब दूं सोच नहीं पा रहा था। लेकिन देखा उनकी आँखें वास्तव में गीली हो आई हैं। जाते-जाते बोली 'छि यह कैसी गन्दी बात है ? हमने सोचा था "शाहजहाँ एक रेस्पेक्टेबुल होटल है।

मैं वास्तव में चिन्तित हो उठा। सोच रहा था कि इसे मनेजर तक पहुँचाऊं या नहीं। हमारे जो कर्मचारी उनकी ओर इस तरह से ताकते हैं वे और चाहे जो हों होटल में नौकरी करने योग्य नहीं हैं। जो अपने को संयत नहीं रख सकते, उन्हें नौकरी पर रखने से भविष्य में कोई बात हो जाए तो ताज्जुब नहीं।

मैंने उसी वक्त भद्र महिला को फोन पर बुलाया। कहा हम अगर अभी ही एक आइडेन्टिफिकेशन परेड करें तो आप पहचानकर बता तो देंगी कि हमारे स्टाफ में से किस किसने आपकी ओर वैसी अभद्रता से ताका है ?

सोचा था, वे इस पर खुश होंगी कि उनकी शिकायत का नतीजा निकला। लेकिन फल उलटा हुआ। वे और भी दुखी हो गई। बोलीं माई ऐम एफ्रेड इससे ढंग निकालने में गाँव उजाड़ हो जाएगा। मैं तो यह सोचती हूँ कि यहाँ कौन मेरी ओर वैसे नहीं ताक रहा है।

टेलीफोन रखकर सोचने लगा। फुर्सत के समय सोचते-सोचते इस फैसले पर पहुँचा कि मामला जिस ढंग से बढ़ रहा है बात मनेजर तक पहुँची जानिए। फिर ऐसा न हो कि वे यह समझें मैं काम में ढिलाई करता हूँ। अवश्य मैं कर भी क्या सकता हूँ। अपने स्टाफ पर तो अधिकार है, होटल में आनेवालों को हम कैसे रोक सकते हैं ? सोचा

दो चार को बुलाकर कहूँ कि क्यों इस तरह से तामकर उन बेचारों का जीवन दूभर कर रहे हैं ?

लेकिन मुझे सोचना नहीं पड़ा। एक बेरा दौड़ा-दौड़ा आया। बोला गजब हो गया हुजूर आप फौरन हनीमून सूट में जाइए।

'क्यों, क्या बात है ?' मैंने पूछा।

वह रोता-सा बोला शायद अब तक वहाँ गुडवेडिया की लाश फर्श पर तड़प रही होगी।

मर्डर ! खून ! मैं मारे डर के चीख उठा।

आप जल्दी जाइए, हुजूर देर न करें, आपके पैरों पड़ता हूँ। उसने किसी तरह से कहा।

मैं काउंटर का सब-कुछ वैसे ही छोड़कर दौड़ा। अखबार की भाषा में जिसे वक्त की नजाकत कहते हैं, वहाँ जाकर देखा। मामला सच ही बड़ा कठिन था। साहब गुडवेडिया की तरफ पिस्तौल ताने खड़े थे और बेचारा गुडवेडिया युद्धभूमि में आत्म-समर्पण करनेवाले सैनिक की भाँति दोनों हाथ ऊपर उठाए दीवार से सटा अपनी अन्तिम घड़ी का इन्तजार कर रहा था। देखने में नौजवान साहब मुझे शान्त मिजाज का लगा था। लेकिन अभी उनकी आँखें देखकर लगा उनमें टाटा कम्पनी की भट्ठी जल रही है। साहब के खून में खून का नशा चढ़ उठा था। मीठा हँसने वाली मेमसाहब भी घबराकर साहब का हाथ थामने की कोशिश करती हुई कह रही थी डिकि, नासमझ न बनो। पिस्तौल समेट लो। बल्कि चलो आज हम इस होटल से ही चले जाएँ।

प्रेयसी के विनीत अनुरोध से भी डिकि नाम के साहब का दिल जरा भी मुलायम न हुआ। वे बोले जाना तो है ही मगर उसके पहले मैं इस फेलो को सबक सिखाकर जाना चाहता हूँ।

गुडवेडिया उस समय करुण स्वर में अपनी मातृभाषा में जो विनती कर रहा था उसका अर्थ हुआ— ऐ सफेद चमड़े की मैया मेरी, तुम्हारे चरणों में दण्डवत्। तुम इस खूँखार साहब से मुझे बचा लो। मैं अब

नौकरी करना नहीं चाहता। मुझे मेरे गाँव में अपने माँ-बाप के पास लौट जाने का अन्तिम अवसर दो।

मुझे दूर से ही देखकर गुडबडिया हाँव-हाँव करके रो उठा मुझे बचाइए।

वध्यभूमि में मैं मानो गुडबडिया के लिए देवदूत-सा प्रकट हुआ होऊं। मीठी बातों से साहब फिलहाल पिस्तौल छोड़ने से रुक गए। कमीज के बटन लगाते-लगाते कहा 'इस कम्बख्त के लिए मुझे जरा भी सिम्पथी नहीं। इसने मुझसे मुँहमाँगा टिप्स लिया और तिस पर भी मुझे डुबाया। मेरे और जिनि के बारे में इसने ऐसा स्कैंडल फैलाया कि जबान पर लाते हुए भी घिन होती है। मैंने आज सवेरे समझा कि होटल के तमाम लोग क्यों इस तरह से हमारी ओर ताकते रहते हैं। मेरी वाइफ ने सोते समय कितनी ही बार शिकायत की लेकिन मैंने ध्यान नहीं दिया। कहा तुम आकर्षक हो इसीलिए लोग तुम्हें देखे बिना नहीं रह सकते। अब बात साफ समझ में आ गई।'

साहब ने जरा दम लिया और सुर्ख आँखों से मेरी ओर देखा। कहीं मुझ पर ही न गोली चला दें। 'डु यू नो हम लोगों के बारे में यह क्या कहता फिरा है? इन फैक्ट, जब यह आदमी होटल का कर्मचारी है तो होटल पर क्षतिपूर्ति का दावा किया जा सकता है।

गुडबडिया क्या कहा है तुमने? मैंने पूछा।

गुडबडिया की आँखों के आँसू सूखे नहीं थे। आँसुओं की फिर एक बार झड़ी लग गई। वह बोला हुजूर मेरा क्या दोष! साहब ने मुझे बख्शीश दी और कहा किसी को मालूम न हो कि हमारी अभी-अभी शादी हुई है। मेमसाहब तो हैं। भला वे पति के बदन पर हाथ रखकर कह तो सही कि साहब ने ऐसा नहीं कहा।

साहब ने रंजिश से कहा 'तो कौन कहता है कि यह नहीं कहा! मगर तुम इसके बदले लोगों से क्या कहते फिरे?

जवाब में गुडबडिया ने जो बताया उसी से सारा रहस्य खुल गया।

उसने कहा, 'कहीं लोग जान न जाएँ इसलिए मैंने सबसे यह कहा, अजी अभी हनीमून कहाँ ! अभी छ महीने तक तो उनकी शादी ही नहीं होती।

'जस्ट थिंक ऑफ इट। मेरे पिता गिरजा के पादरी हैं मैं यूनिवर्सिटी में प्राध्यापक हूँ और हम खुलआम इस होटल म डबल बेड के कमरे म रह रहे हैं—ब्याह से छ महीने पहले !' साहब बोले।

उनकी नवविवाहिता पत्नी सिहर उठी। बोली 'डियर मेरा सिर घूम रहा है। मैं मूर्च्छित हो जाऊँगी।

मूर्च्छित होने की बात को मैंने ढाल बना लिया। कहा इस समय आपको परेशान करना ठीक नहीं। मैं गुडबेडिया को लिये जा रहा हूँ। यह कहकर वहाँ से चला आया। साहब अगर अपनी बीवी की हिफाजत म जुट नहीं जाते तो बात जरूर मनेजर के कानों तक पहुँच जाती और गुडबेडिया की नौकरी बचाना मुमकिन नहीं हो सकता।

गुडबेडिया ने बेशक अहसानमन्द होकर मेरे पैरों की धूल ली थी। कहा था मैं आपका बदाम का गुलाम बन गया। मैंने कहा, बनना बनाना कुछ न होगा सिर्फ अपने नाम म थोड़ा सुधार कर देने की इजाजत दो। अब से मैं तुम्हें गड़बड़िया कहा करूंगा—दुनिया भर का गड़बड़ मचाने म तुम बेजोड़ हो !

भई शंकर आज मुझे लिखने का नशा-सा सवार हो गया है। बिल और मेनू के सिवाय और किसी प्रकार के साहित्य से नाता नहीं रखा। लेकिन आज अपने मन की उन बातों को जो जमाने से मन म जमती रही हैं कहने की इच्छा हो रही है। इसकी वजह शायद तुम हो।

अपनी 'चौरंगी' म तुमने मुझे इस ढग से चित्रित किया है कि अपने बारे में आप ही मेरी श्रद्धा बढ़ रही है। दुःख यह सोचकर होता है तुम्हें और भी बहुत-सी बातें बता रखनी चाहिए थीं। रात रात दिन दिन बरसों कलकत्ता के अभिजात शाहजहाँ होटल के काउंटर पर खड़े खड़े मनुष्य के जीवन का जो विचित्र रूप देखा है, उससे मैं खुद ही अवाक

हो जाता हूँ। एक ही जगह खड़े होकर मैंने मनुष्यता की एवरेस्ट-जैसी ऊँचाई देखी है और फिर अथाह नीचता का अंधेरा देखकर दंग रह गया हूँ।

सोचता हूँ कलकत्ता में जब तक साथ बैठकर तुमसे बातें कीं, तो ये सब बातें क्यों न याद आईं? तुम्हारी उम्र कम है जीवन के अभी बहुत से इम्तहान तुम्हें पास करने हैं। तुम जानते होते तो ये बात तुम्हारे काम आती। मैं अब कहाँ हूँ? तुम लोगों से कितनी दूर अकेला मैं अफ्रीका के एक कोने में पड़ा हूँ। क्यों पड़ा हूँ यह मुझको नहीं मालूम। हो सकता है विधाता के दफ्तर में मेरे नाम ऐसी ही पोस्टिंग लिखी थी।

मगर रहने दो अभी ये बातें। मेरी चिट्ठी पढ़कर तुम सोचोगे कि शाहजहाँ होटल के रिसेप्शनिस्ट सैटा बोस का दिमाग खराब हो गया है। कहाँ से तो तेईस वसन्त बिताने वाली एक एयर होस्टेस आँधी सी सत्य सुन्दर बोस के भाग्याकाश में आई और उसके जीवन के एक छोर से दूसरे छोर तक की काली घटाएं भर दीं। आँधी का प्रलय नृत्य शुरू हो गया। और जब बदली फट गई शान्त आसमान को फिर से उसका नीला रंग मिला, तो पता चला कुछ नहीं है। जो पड़ा रह गया है वह सत्य सुन्दर बोस नहीं, एक खण्डहर है। बात बिलकुल झूठ है यह नहीं कहूँगा। क्योंकि मेरे-जैसा आदमी होटल के काउंटर का काम-काज छोड़कर बिस्तर पर बैठे-बैठे इस प्रकार पन्ने-का-पन्ने लिखता चला जा रहा है यह देखकर तुम्हारी सुजाता-दी भी हँस पड़ती। कहा नहीं जा सकता अपने झाने से कमरा निकालकर मेरी इस हालत की तसवीर भी खींच सकती थी।

'शाहजहाँ' में हनीमून सूटवाली कहानी तुम्हारी सुजाता-दी को होटल की छत पर सुनाई थी शायद। उनकी क्या इच्छा था मालूम है? उन्होंने कहा था तुम्हारे भ्रमण निष्पक्ष कर स कह रखूँगी। तुम तो यहाँ की नौकरी छोड़कर दूसरी नौकरी करोगे। शादी के बाद मेरी भी एयर

हास्टेस की नौकरी नहीं रहगी। तो हमारी जोडी यही 'गाइअहाँ' म आ जाएगा। यस म श्रीमान् दास्र जिससे हम दूसर किसी कमरे म न टल दें।

हनीमून सूट म गुदगदिया की जो गत हुई उसे लिखते हुए तम्हारी सुजाता दी की वे बात याद आ रहा है। सोचता हू इसी सूट म कितनी घटनाए घटते दखी। केवल इसी सूट पर तुम एक बहुत बडी किताब लिख सकन थे। इसी सूट म इण्डोनेशिया वे एक बौद्ध स यासी का पतन हुआ था। स यासी के अध पतन की कहानी से सिनिका को आनन्द आ सकता है मगर मुझे वह जरा भी अच्छी न लगी। मैं तम्हें जहाँ तक जानता हूँ तम्ह भी अच्छी नही लगेगी। सो मिग प्रतीपबुद्ध की कहानी को अभी रहने दो।

उसी कमरे म एक दिन जॉन दिनमणि विश्वास अपना बग और कमरा लकर आकर ठहरे थे। आदमी अकेल लकिन कमरा लिया था डबल बेड का। उस समय हम लोग समझ नही सक। उस कमरे मे जान के पहल भल आदमी ने कहा थाडी ही दर म मरी स्त्री आ जाएगी।

वे अपने घर से बार बार काउटर पर फान करते रहे मेरी स्त्री आ गइ ?

हमने बताया 'जी नहीं तो। अभी तक तो श्रीमती विश्वास नही आई हैं।"

उन्होंने कहा अजीब मुसीबत है। उनके साथ-साथ हम लोग भी मुसीबत म पड गए थे। होटल के रिसेप्शनिस्ट का काम करन म बडे धीरज की जरूरत होती है। लकिन अपने धीरज का तार भी टूटने लगा था समझिए। हर दस मिनट पर टेलीफान की घटी बज उठती थी—

हलो मेरी वाइफ़ बूला विश्वास आ गई क्या ? देखने मे बडी खूब सूरत हैं। आँखों पर रीमलस ऐनक। दाएँ गाल पर तिल है एक

हम कहते रहे जी नहीं आई हैं। आते ही खबर दूँगा।

उन्होंने कहा 'नहीं-नहीं, मैं खुद ही फोन कर लूँगा। बेचारी बहुत शर्मीली हैं।

मैंने कहा इसमें शर्म की कौन सी बात है ! होटल में अपने पति के पास आ रही हैं।

वह आप लोग नहीं समझ सकेंगे। वही समझ लें तो आपमें जान दिनमणि विश्वास का फर्क ही क्या ? इतने लोगों के होते बुला ने मुझ से ही आखिर शादी क्या की ?

हमारे पास उस समय हमारा सहयोगी विलियम खड़ा था। उसने कहा 'बुढ़ापे की नजाकत देखकर तो मर गया मैं !

मैंने कहा परदेस में बीवी आ न पहुँचे तो फिक्र तो होती है।

लेकिन तो भी माजरा समझ नहीं सका था। अब दस-दस मिनट पर टेलीफोन की घंटी बज उठने लगी— 'हलो रिसेप्शनिस्ट, बुला आ गई ?

मैंने कहा 'आप खातिर जमा रखें उनके आते ही मैं आपको खबर दूँगा।

जान दिनमणि विश्वास ने यह नहीं सुना। फोन पर फोन करते चले गए। हम सबका और-और काम बन्द होने की नौबत आ गई। फोन उतारकर रखते न रखते फिर फोन। आजिज आकर कहा आप अगर इतने बेचैन हैं तो नीचे लाउंज में आकर बैठिए।

'जी हाँ। और आप लोग आकर मेरे किराये के कमरे में सो जाइए। आखिर आप लोग यहाँ हैं किसलिए ? आपको तनख्वाह किस लिए मिलती है ? वे दुखी होकर बोले।

जवाब में मैं भी दो बात सुना सकता था। लेकिन कसी तो माया हो आई ! स्त्री की चिन्ता से भले आदमी का दिमाग ठिकाने नहीं है। मेरी माँ एक बार साहबगंज से कलकत्ता आ रही थीं। देर हो गई। पिताजी उस समय सिलुआ रम्य कॉलोनी में रहते थे। वे भी दो मिनट के लिए स्थिर नहीं बैठ पा रहे थे।

जॉन न्निमणि विश्वास ने फिर फोन किया, 'बात क्या है कहिए तो? पूरे पन्द्रह साल का विवाहित जीवन है अपना। उसके पहले पाँच साल कोर्टशिप—बूला हाजरा के पीछे-पीछे छाया-सा डोलता फिरा। वह भी मेरे लिए होटल में रेस्तराँ में मैदान में चिड़ियाखाने में इन्तजार करती थी। देरी तो उसने कभी नहीं की।

मैंने पूछा 'वे आएगी कहाँ से ?

मिस्टर विश्वास टेलीफोन पर झुंझला उठे। मेरी इतनी खोज पूछ उन्हें पसन्द नहीं आई। बोले उससे आपको क्या मतलब ? ऐसा इनक्विज़िटिवनेस मुझे अच्छा नहीं लगता। होटल में काम करते हैं, मेहमान जो पूछें उसी का जवाब दीजिए। ज्यादा बातों से मतलब क्या आपका ?

लाचार मुझे कहना पड़ा मिस्टर विश्वास होटल में नये मेहमान कहाँ से आ रहे हैं यह हम नियमतः जानना चाह सकते हैं। हमें अपने रजिस्टर में दर्ज करना पड़ता है।

पहले उसे आने दें फिर सारा इतिहास रजिस्टर में लिख लीजिएगा। जॉन दिनमणि विश्वास कुछ नरम पड़कर बोले।

मैंने कहा आप तो नाहक ही क्रुद्ध हो गए। मैंने तो आपकी मदद के लिए यह पूछा था। किस गाड़ी या हवाई जहाज से आ रही हैं अगर यह मालूम होता तो हम स्टेशन या हवाई अड्डे से पूछताछ करते।

उन्होंने जवाब दिया मैं अभी भी कहता हूँ कि टेलीफोन करने की जरूरत होगी तो मैं खुद ही कर लूँगा। आप सिर्फ जरा नजर रखिए।'

मैंने फोन रख दिया। बड़ा काम पड़ा था। लेकिन कुछ मिनट बीतते न बीतते फिर फोन बज उठा। मैं तो जैसे पागल हो जाऊँगा। हलो शाहजहाँ रिसेप्शन। मेरी स्त्री बूला क्या आ गई ?'

मैंने ठंडे मिजाज से ही कहा जी नहीं तो।'

सुनिए। उनका हुलिया तो मालूम है न ? पाँच फुट पाँच इंच। एक सौ बीस पाउंड। देखते ही पहचान लेंगे उन्हें—दाएँ गाल पर एक तिल

है एकाएक आपको लगेगा नेचुरल विल नहीं है खुबसूरती बढ़ाने के लिए मेक अप के समय बना दिया गया है। पहल पहल मुझे भी ऐसा ही लगा था।

विलियम धाप बोला, 'आज किसका मुह देखकर उठे थे भैया! अजीब मुसीबत आई।

बैरों से कह दिया 'तुम लोग मरा खयाल तो रखना। कोई महिला आए तो उन्हें मेरे या विलियम के पास लिवा लाना।'

विलियम से बोला भया तुम तब तक काउटर सम्हालो। मैं मनेजर के पास स कुछ काम करके लौट आऊँ।

मनेजर से स्पेशल कटरिंग का सारा इन्तजाम करके काउटर पर लौट आया। देखा विलियम फोन पर बात कर रहा है। समझने में दिक्कत न हुई कि हनीमून सूट म वही बाबू बात कर रहे हैं।

फोन रखकर विलियम बोला, ऐसी बहुमुखी प्रतिभा बहुत कम देखने को मिलती है।

'मतलब ?' मैंने पूछा।

''मतलब कि बीवी की शक्ल के सिवाय भले आदमी को कुछ भी याद नहीं आ रहा है।

मैंने भल आदमा के समथन म कहा हाँ। बड़े होटल म कुछ दिनो क लिए आने पर बीवी की शक्ल भूलकर दूसरे मुखड़े की बात सोचना हो या और है।

विलियम बोला 'जी लगता है भैया को उनके प्रति बड़ी कमजोरी आ गई है।'

मैंने कहा जानते हो सो हो आँख की बला सब की खबर। सारी दुनिया प्रमिक को प्यार करती है वह चाहे ब्याह क पहले हो या ब्याह क बाद।

बलिहारी प्रमिक !' विलियम ने उत्तर दिया — 'वह क्या कह रहा है सुना आपन ? कहता है, उसकी तरफ क्या तो मेहन रग की सिल्क

की कोइ निशानी नहीं थी कही। भले आदमी शौकीन खूब हैं इसका प्रमाण उनके पाँव के जूते से सिर का बाल तक था।

उन्होंने पूछा था, मेरी स्त्री को आने में अगर देर हो? आप होटल कब तक खुला रखते हैं?

विलियम ने कहा आप इसकी कतई चिन्ता न करें। इस होटल का दरवाजा कभी बन्द नहीं होता। रात भर लोग आते जाते ही रहते हैं।

'भले आदमी? उन्होंने पूछा।

जी हाँ। रात में हवाई जहाज के मुसाफिर आते हैं। कुछ जाते भी हैं।

मिस्टर विश्वास ने पूछा ओ तो डरने की कोई बात नहीं! क्या खयाल है आपका?

उत्तर में विलियम ने कहा 'जी बिल्कुल नहीं। जरूर मिसेज विश्वास को कहीं देर हो गई है। उनके आते ही हम आपको खबर करेंगे सो रात चाहे जितनी भी क्यों न हो।

रात कुछ कम नहीं हुई थी। मिस्टर विश्वास ने फिर फोन किया था। विलियम ने कहा आप नाहक क्यों परेशान हो रहे हैं? इससे तो कैबरे में जाकर बैठ जाए कुछ देर। नाच-गान में जी बहला रहेगा।

वहाँ जाने से आपको कमीशन मिलता है क्या?

जी यह क्या कह रहे हैं आप?

"तो फिर मुझे मुमताज रेस्तराँ में नाच देखने जाने को क्यों कह रहे हैं? दिन भर की थकी-हारी आकर सुना मगर यह सुने कि मैं लगभग नंगी देशी डान्सरों का नाच देख रहा हूँ तो वह क्या सोचेगी कहिए तो? जे० डी० विश्वास ने फिर यह भी कहा 'बात क्या है? आप क्या हम पति-पत्नी के बीच में दरार डालना चाहते हैं?

विलियम शर्मिंदा हो गया था। किसी प्रकार से उसने कहा अफसोस है मुझे। बहुत सी बीवियाँ कबरे का बुरा नहीं मानतीं। पति के साथ वे

भी आती हैं नाच देखती हैं खाती पीती हैं और उसके बाद घर लौट जाती हैं।

फिर तो आप लोगों ने बुला को खूब पहचाना है। अपने माडन समाज में उसे एक अपवाद समझ सकते हैं। बेहद शर्मीली है। मेरी ओर ताक करके बात करने में भी उसे शर्म आती है। अगर वह कहीं सुन ले कि मैंने आप लोगों को इस कदर परेशान किया है, तो वह मारे शर्म के गड जाएगी। कमरे में फूल देख लें तो अन्दर ही नहीं जाना चाहेगी। वैसे में आप लोगों से एक सिंगल रूम के लिए कहना पड़ेगा।

उस दिन रात में भी मेरी ड्यूटी थी। डिनर के बाद एक ख़पची लेकर जब विलियम से चाज लेने के लिए काउंटर पर आया तो कबरा टूटने का समय हो गया था। मिसेज विश्वास अभी तक भी रंगमंच पर नहीं आई हैं यह सुनकर मेरा मिजाज खराब हो गया। समझ गया कि आज रात मेरी दुर्गति का अन्त नहीं रहेगा। इनोभूत सूट में ये सज्जन नाक में दम कर देंगे।

कबरे टूटने के बाद ही विश्वास साहब ने फोन किया 'हलो मेरी स्त्री को देखा क्या ?

मैंने कहा, जी नहीं। किसी को अन्दर आते तो नहीं देखा। अभी अभी कैबरे टूटा। लोग बाहर निकल रहे हैं।

अब मानो उन्होंने जरा आगा-पीछा किया। कहा आपको याद है न मैरून रंग की साड़ी। गाल पर तिल।

मैंने कहा जी इन बातों में हमसे भूल नहीं हुआ करती।

पन्द्रह मिनट भी नहीं बीते होंगे कि विश्वास साहब ने फिर फोन उठाया। अब की खासी झुंझलाहट थी आवाज में— मिसेज विश्वास आई ?

आती तो आपको खबर मिल जाती। मैंने कहा।

इस बार फट पड़े आदमी गुस्से से। 'अजी मजाक छोड़िए। वह जरूर आ गई है और आपको आकर रुपये दिए हैं। कहा है कि मुझ

न बताए कुछ।

क्या जवाब दूं मैं कुछ सोच नहीं पा रहा था।

जे० डी० विश्वास ने गिड़गिड़ाकर कहा "कृपा करके और कष्ट न दें मुझे। जाते ही हैं ब्याह की वही रात के एक बजकर पचीस मिनट पर थी। हो सकता है वह ठीक उसी वक्त टप से कमरे के अन्दर आकर मुझ चकित कर गी। उसे ब्याह की रात म बेहद शरारत सूझती है। और-और दिन तो शर्माई-सी रहती है, ब्याह वाले दिन बिलकुल बदल जाती है।

मैंने पूछा आप लोगों का ब्याह शायद हिन्दू धम के अनुसार हुआ था?

और नहीं तो किस धम के अनुसार होगा?

'जी नहीं इस जॉन नाम से मैं

आपका ख्याल है कि मैं ईसाई हूँ? हमारी शादी चच में हुई थी? आपकी बुद्धि की बलिहारी! ऐसा न होता तो होटल के रिसेप्शनिस्ट होकर खटत क्यों रहते? मेरी तरह इंडिया से बाहर जाकर लक ट्राई करके अब के कुछ कमाकर लाए होते। भजी जनाब जॉन नाम तो प्यार से मेरे नानाजी ने रख लिया था। वे जॉन पटरसन म नौकरी करते थे। उनके दामाद यानी मेरे पिताजी भी वही काम करते थे। मैं जब पदा हुआ उस समय वहाँ के जो बड़े बाबू थे वह बड़े रसिक थे। उन्होंने यह खबर मिलते ही नानाजी को बुलवाया। बोले उनेन बेरी हैप्पी न्यूज। यह तो ऑल जॉन पटरसन एफ़यर है। साहब ने उसी समय नानाजी और पिताजी को तीन दिन की छुट्टी द दी। एक महीने की तनख्वाह भी।

सो मेरे एहसानमन्द नानाजी ने नाम रखते समय यह जान शब्द जोड़ दिया। मेरी दादी ने एतराज किया था। नानाजी ने कहा इससे आगे चलकर नौकरी मिलने में सुविधा होगी। यह जब बड़ा होगा तो जान पटरसन बात-की-बात में इसे अपने यहाँ रख लेगा।

ज्यों ज्यों रात बढ़ने लगी, जॉन डा० विश्वास मानो बदलने लगे। तीसरे पहर एकाध बात पूछने पर जिन्होंने एक न बाकी रखा था वही टेलीफोन पर रिसेप्शनिस्ट को अपनी जन्म-कहानी कहने लगे।

'हलो रिसेप्शनिस्ट ! आपका नाम क्या है ?

जी सत्यसुन्दर दास। लोग मुझे सैंटा दोस के नाम से ही जानते हैं।

'तो सुनिए, मिस्टर दास ! बूला भी अवाक् रह गई थी। आपकी तरह वह भी मेरा नाम सुनकर डर गई थी। उसके बाद कोहबर में दिन मेरे गले से लिपटकर बोली, हो न हो तुम्हें मेम ब्याहने की इच्छा थी। तभी तो नाम के साथ जान जोड़कर रखा था।

विश्वास साहब फोन पर ही हँस पड़े— ज़रा मज़ा देखिए आप ! मेम गाउनवाली मेम से शादी करने के लिए लोग नाम बदलते हैं ! बिलकुल भोली ! बुद्धि बिलकुल फ्राक पहनने वाली बारह बरस की लड़की जैसी।

विश्वास साहब फोन रख दें तो जान में जान आए। काम-काज ज़रूर नहीं था, लेकिन मौका मिले तो कुर्सी पर बैठे-बैठे ही एक झपकी ले लूँ। लेकिन विश्वास साहब नाछोड़ बन्दा। बीबी के बारे में मुझे सुनाए बिना नहीं रहते। बोले, गनीमत कहिए कि बाल-बच्चा नहीं हुआ, नहीं तो वह पागली कैसे क्या करती नहीं समझ पाता। अच्छा ही हुआ साहब बच्चे का मुँह देखना ज़रूर नसीब नहीं हुआ, लेकिन उन्हें पालने के झमेले से साफ बच गया। आज रात में एक ही फ़िक्र पड़ी है बच्चे में दो की चिन्ता होती।

कहता भी क्या मैं ? कहा, बजा फरमाया आपने। फिर जो देखा है देश की आबादी जितनी कम बढ़े वही अच्छा।'

उनसे मैंने यह भी कहा आप अब सो रहिए।

उन्होंने ज़रा मीठे-मीठे मेरी खिंचाई की, ब्याह-शादी आपने नहीं की है शायद।

आपने कसे समझा ?

"विवाह की वपर्गांठ की रात भला कोई विवाहित पुरुष अपनी स्त्री का इन्तजार करते-करते सो सकता है ? आपको लोग पागल कहेंगे।

मैंने कहा सवेरे से ही ता बेचैन बठे हैं आप। आपकी तन्दुरुस्ती की भी आखिर कोई कीमत है न ?

बतरे की ! जाम डॉ० विश्वास बोले आज ही तो मजा है। जरा शोर-गुल गप शप खाना पीना

खाना-पीना ? इतनी रात को तो होटल म आपको कुछ भी नही मिलेगा। मैंन कहा।

भला यह मैं नही जानता हूं ? ऐसे होटला में इतनी रात का एक चीज के सिवाय कुछ भी नही मिलता। और फिर उसका आडर भी नही दना पडता। व रे खुद आकर पूछ जाते हैं। मैंने इसीलिए पहले ही दो डिनर मगवाकर रख लिये हैं। रात एक बजकर पचीस मिनट पर ब्याह का लग्न था। आप देख लीजिएगा वह ठीक उसके पहल आ पहुँचेगी। अब आपको बताने में क्या मुजायका ब्याह की रात मैं जरा सो गया था। इसके लिए जब भी मौका मिला है बूरा ने मरा मजाक उडाया है। सो तब से ब्याह की वपर्गांठ की रात मैं कभी नहीं सोया।

मैंने कहा ओ ! खर। मैं यहीं हूं। वे आएगी तो भेज दूगा।

ठहरिए। आप बडे होशियार आदमी हैं जनाब ! यही कहकर टेलीफोन काट देना चाहते हैं।

उन्हें गप करने का मानो नशा चढ गया था। बोल मैंने आपके स्टुआड को लकिन जनरल मनू का आडर नहा दिया। वह सब गरम न रहने स खाया नहीं जाता। उससे अच्छा कोल्ड सूप कोल्ड चिकेन कोल्ड ड्रिंक। ब्याह की वपर्गांठ म सब कुछ ठडा गरम सिफ दिल।

उन्होंने फ़ोन रखकर मुझ जरा चन लेने दिया। आज दिन को भी ड्यूटी थी। ऊपर स रात को काम। थका शरीर मन पर रंज छाया हुआ था। और रात में शाहजहां होटल म। तो सुमने देखा है। किसी नटखट

लड़के को शान्त होकर सो जाते देख मेरा मन खराब हो जाता है। रात के खुले मौज-मजे के बाद शाहजहाँ का या ऊँघ जाना मुझे अच्छा नहीं लगता। अकेले जग रहने से मन का हाल कैसा तो हो जाता है। मुझमें साहित्यिक प्रतिभा होती, तो मन के इस भाव को ठीक ठीक व्यक्त कर पाता। मैं मगर होटल का किरानी ठहरा मुझसे साहित्य की आशा कौन करे?

फिर भी यह कहना गलत नहीं कि काउंटर में अकेले खड़े-खड़े बहुत रातों को मैं अपने-आपसे बात करता रहा हूँ, देर तक अपनी समीक्षा करता रहा हूँ। उस रात भी की थी। सोचा था आज इस समय मेरे सिवाय और एक आदमी शाहजहाँ के हनीमून सूट में अपनी प्रेयसी के आने की राह देखते हुए जागकर रात बिता रहा है। उस आदमी को रोमांटिक कहना होगा। आपस का यह आकर्षण ही तो संसार के पहिया में लुब्रिकेटिंग का काम करता है—घिसाई कम हो जाती है, संसार चक्र का चरर मरर थम जाता है। इस प्रिया प्रीति की समालोचना का क्या अधिकार है मुझे?

एक ओर हनीमून सूट में जाल दिनमणि विश्वास और दूसरी ओर ब्याह की साइत बाज चली। घड़ी का बड़ा काँटा पचीस पर पहुँच चला। मिस्टर विश्वास के धीरज का बाँध टूटा जा रहा है, यह टेलीफोन पर उनकी आवाज से ही समझ गया।

हलो!'

'हलो मिस्टर विश्वास मैं सटा बोस बोल रहा हूँ।

आप सटा बोस हों या नाटा बोस, डूराटस स्टटु भी? मेरा क्या! मैं महज यह जानना चाहता हूँ कि आप इस होटल के रिसेप्शनिस्ट हैं या नहीं?'

मैं अवाक् हो गया। अभी-अभी थोड़ी ही देर पहले ये सज्जन मन की कितनी बातें बता रहे थे। वे एकदम बदल गए हैं क्या?

मिस्टर विश्वास बोले आप अगर झूठ बोलें तो अपनी जिम्मेदारी पर बोलेंगे। कहिए मूला आई या नहीं ?

मैंने कहा आते ही खबर मिलगी आपको।

दिनमणि विश्वास दुःखी हो उठे। बोले 'आप जानते नहीं आप आग स खेल रहे हैं। कचहरी की हवा खानी पडेगी हाजत म भी बन्द होना पड सकता है। मूला को या छिपाकर सोचते हैं आप सब बच जाएंगे? वह नहीं होगा मैं सबको फसा दूगा।

मुझसे और चुप न रहा गया। खौफ भी हुआ। न जाने इस रात म औरत-सम्बन्धी किस मामले म फसा गया। कहा क्या बेकार की बातें कर रहे हैं आप ?

'दया ने काम किया लगता है। अब सीधे-सीधे बता दीजिए कि मूला को किसी ने कुछ किया है क्या ? बेचारी अकेली आ रही थी।

मैंने कहा, ईश्वर न करे कोई एक्सिडेंट हो सकता है। आप अस्पताल म खोज लीजिए।

आखिर जे० डी० विश्वास कमरे म फोन को गोद म लिये खिलवाड़ थोड़े ही कर रहा है। किसी अस्पताल को नहीं छोड़ा। तमाम खोज की कही नहीं है।

आ कहाँ से रही थी ? कलकत्ता से बाहर किसी अस्पताल म हो कही ?

बेकार बकवास न करें मिस्टर बोस! आप लाख कोशिश करें मैं हरगिज नही बताने का कि मूला कहाँ स आ रही थी। हाँ इतना जान लीजिए अगर दुघटना हुई होती तो मैंने जिन अस्पतालों म पूछताछ की मूला उनम से किसी म जरूर होती।

मैंने अब जरा आगा-पीछा किया और अन्त म कह ही दिया आप कुछ खयाल न करें लेकिन आपको अब लाल बाजार म खबर देनी चाहिए। इतनी रात हो गई व अकेली आ रही थीं।

इस पर विश्वास साहब ने जो जवाब दिया उससे मैं वास्तव में

चिंतित हो गया। बोले, बूला देखने में इतनी सुन्दर है कि पुलिस कुछ नहीं कर सकती। लाल बाजार के बूते की बात नहीं फोर्ट विलियम की मिलिटरी कर सके तो कर सके। मगर यहाँ का डिफेन्स डिपार्टमेंट भी क्या है साहब? उनकी मदद माँगी तो पुलिस को फोन करिए कहकर फोन रख दिया। आप ही कहिए, दो दुबले-दुबले सिपाही लाठी से क्या करेंगे?

मैंने कहा 'लाठी क्या राइफल रिवाल्वर—यह सब भी है?

विश्वास साहब का कुछ भरोसा हुआ 'आम्र्ड पुलिस कहाँ रहती है साहब?

बैरकपुर में।

'तो उन्हीं को फोन कर देख। क्या ख्याल है आपका?

मैंने कहा, उन्हें फोन करने से कोई लाभ नहीं। आप लाल बाजार ही फोन करें। जरूरत होगी तो वही वहाँ फोन करेंगे।'

आज जी० डी० विश्वास ने जरूर पी रखी है नहीं तो या लड़कों जैसी बात करते। बोले 'मिलिटरी नहीं बुलाई जा सकती? पुलिस के सिपाहियों में ताकत है तो?

मैं कह बैठा चाहें तो पुलिस लाट साहब से मिलिटरी मंगवा सकती है यदि वैसी जरूरत हो तो।'

'खैर आप जब कह रहे हैं तो लाल बाजार ही फोन करूं। आखिरी कोशिश कर देखूं। बूला के लिए मुझे सब करना होगा।

उन्होंने लाल बाजार फोन किया था इसका प्रमाण मिल गया। कोई पन्द्रह मिनट के अन्दर ही पुलिस की गाड़ी आ धमकी।

इन्सपेक्टर ने पूछा आप दिनमणि विश्वास यहीं ठहरे हैं?'

मैंने कहा जी हाँ। उनकी स्त्री बूला विश्वास लापता नहीं मिल रही है।

इन्सपेक्टर साहब हँस पड़े—'आइ सी। मिल जाती है। अब जब बूला विश्वास का नाम मालूम हो गया तो चिन्ता नहीं। वह भाग्य से फोन मिला, नहीं तो आज रात भर परेशान कर मारती।

मैं उनकी ओर ताकने लगा— आप लोगों ने बूला विश्वास को खोज लिया क्या ?

हम लोग बूला विश्वास की खोज म नहीं आये हैं । हम आये हैं जॉन डी० बिश्वास की खोज म । हमे उनके कमरे मे ले चलिए । कमरे की दूसरी कुजी भी है न ? हो सकता है हमारे आने की खबर पाकर वे कमरा ही न खोलें ।

मुझ खौफ हुआ । आप लोग मिस्टर विश्वास को खोज रहे है ?

'जी हाँ । हमारी नौकरी में कितने झमेले हैं आप नही जानते । जॉन डी० बिश्वास के लिए दिन भर कलकत्ता की गली-गली छान मारी । उस समय 'शाहजहाँ' होटल म आ गया होता तो शायद एक रिवार्ड मिल जाता ।

दूसरी कुजी की जरूरत नही पडी । दरवाजा मिस्टर विश्वास ने खुद ही खोल दिया । बोले आप लोग आ गए । बूला को ले आए हैं ?

हम आपको ले जाने के लिए आये हैं बूला को नही ।' इन्स्पेक्टर ने कहा ।

यह कैसा शासन है ! बूला का खोज देने का दम नहीं और मुझ लेने आ गए ?

उन लोगो के साथ ही जे० डी० विश्वास उतर आए । काउन्टर के पास खडे होकर बोले आप लोग आम् ड पुलिस से आ रहे हैं ? बन्दूक कहाँ है आपकी ?

इन्स्पेक्टर ने सार्जेंट से कहा गाडी से मिस्टर विश्वास की माँ का बुला लाओ—पहचानें ।' उसके बाद बिश्वास से कहा हम आम् ड पुलिस नही हैं—हम हैं मिसिंग पर्सन्स स्क्वाड । खो जाने वालों का खोजना हमारा काम है ।

एक बूढ़ी विधवा पगली-सी काउंटर की ओर दौडी आई— अरे र दीनू तू दिन भर कहाँ रहा ?

बेटे को छाती से लगाकर माँ रोने लगी। इन्स्पेक्टर ने कहा, 'चलिए, अब चलें। सामान होटल से कल ले जाया जाएगा।

आधी रात के इस नाटक में मैं बेवकूफ बन गया हूँ, यह बात पुलिस के उस भले आदमी ने समझ ली। विश्वास और उसकी माँ गाड़ी की तरफ बढ़े तो बोले—पूछिए मत साहब! मेंटल केस। लोग इस मन्द रखते हैं। मुझे तो मान आया! लड़ाई के समय दबार की स्त्री पति से मिलने के लिए चौरंगी रोड से आ रही थी। विश्वास अपनी स्त्री के लिए ऑफ़िस से निकलकर कर्ज़न पार्क में खड़े थे। वहाँ से होटल जाने की बात थी। शायद हो कि आप ही वे यहाँ आते। रास्ते से नीग्रो सोल्जर मिसेज़ विश्वास को उठा ले गए। उसके बाद कोई पता ही न चला।

उन लोगों को ले जाने के बाद मैं काफी देर तक पत्थर बना खड़ा रहा। मकान मानो उस रात मैंने पलक नहीं झपकाया। पंसिल लेकर काउंटर के एक पैड पर अल्लम गल्लम लकीरें खींचता रहा।

बेचारे दिनमणि विश्वास की विवाह रजनी और हनीमून सूट का मैं हरगिज़ अलग करके नहीं देख सकता। मूला विश्वास इस समय कहाँ हैं, कौन जाने! शायद उनका नाम-निशान ही नहीं होता तो मिस्टर विश्वास चाहे पुलिस से, चाहे फौज से, उसका ज़रूर खोज निकलवाते।

होटल ने अपने लम्बे जीवन में कितने लोगों के कितने अजीबोगरीब खयाल से, कितने अन्याय उपराध से तंग आया है लेकिन आज दिनमणि विश्वास जैसे आदमी का अत्याचार आज भी बार-बार सहने को तैयार है।

जो मनुष्य की शारीरिक विकलता की आलोचना करके आनन्द पाते हैं वे मेरे लिए क्षमा के योग्य नहीं। मानसिक विकृति या व्यग्रता को लेकर जो साहित्य रचते हैं मैं उन्हें भी नहीं पसन्द करता। लेकिन मॉन दिनमणि विश्वास के व्यवहार में दिमाग खराब होने का कोई लक्षण नहीं था। मैंने खोज-पूछ से जाना था कि जिस दिन हमसे उनकी भेंट हुई थी सच ही वह उनके ब्याह की वर्षगाँठ का दिन था।

चाकर खोने की इस पीड़ा से तुम्हारे अफ्रीका प्रवासी भया एवं परिचित

है। आज दिनमणि विश्वास के जीवन में फिर भी बूढ़ा विश्वास को स्मरण करने योग्य एवं सुनहला दिन है। लेकिन तुम्हारे सत्यसुन्दर-दा के लिए तुम्हारी सुजाता दी यह भी नहीं रख गई—ब्याह की वर्षगाँठ की यादगार भी होती तो जिन्दगी कुछ सहने योग्य होती। मेरे जीवन में सिर्फ एक सूना निरावरण दिन है। हर साल सावन का वृष्टि-मुखर वह दिन धीरे धीरे मेरे पास सुजाता की आकस्मिक दुर्घटना से मृत्यु का समाचार लेकर आता है। मेरे खूनी के तपोवन में जो टेलिग्राम व्याध की तरह पहुँचाया था उसी को मैंने बड़े जतन से रखा है। उस रोज उसे निकालकर देखता हूँ। सोचता हूँ शायद यह और किसी का तार है डाकघर वालों ने गलती से मुझे भेज दिया है। अपने मन के आवेग से ही मैं जे० डी० विश्वास की बात लिख गया। चाहो तो उसकी पीड़ा का *भस्म बनाकर तमाम धरती पर बिखेर देना—उसकी बात लिखना।*
स्नेह लो।

शुभैषी
तुम्हारा सत्यसुन्दर-दा

माई डियर

तुम्हारी भेजी हुई किताब और चिट्ठी मिली। बड़ी खुशी हुई। चौरंगी के शाहजहाँ होटल के रिसेप्शनिस्ट सटा बोस को तुम इस रूप में याद रखोगे इसकी कभी कल्पना भी नहीं की थी मैंने। जीविका कमाने के लिए जिस आदमी ने अपने जीवन का मूल्य वश एवं विलास पुरी सीढ़ी छत पर लगभग कमी सा बिताया था उस आदमी की जीवन कहानी लिखने की धुन तुम्हें सवार होगी यह किसे पता था ?

आज तुम्हारी सुजाता-दी होतीं, तो बड़ी मुश्किल होती मुझे। हर दम परेशान कर मारती। कहती चोर का गवाह बटमार। इस अकरुण दुनिया में चौरंगी के शाहजहाँ होटल में एक नये रामकृष्ण परमहंस का आविर्भाव हुआ था और उन्हीं का कथामृत श्रीराम के नये संस्करण में श्री मकर ने लिखा।

इसके सिवाय भी बहुत-सी बातें कहती जिन्हें सुन-सुनकर तुम भीतर से तो खुश होते ऊपर से नाराज। मुझे दुखी हो जाना पड़ता। उनकी आकस्मिक मृत्यु से अच्छा ही हुआ वह प्राणमय छलकती तरंग अब हमारे तट को आघात नहीं करेगी—हम उस तरंग की ताल-ताल पर आनन्द-नृत्य नहीं करना पड़ेगा।

माई डियर हम दोनों खूब बच गए। हम गुरु-शिष्य का मजाक करने के लिए वे हमारे बीच जीवित न रहीं।

रात काफी हो चुकी है। अमरीका के एकबारगी पश्चिमी छोर में एक कमरे में बैठा-बैठा तुम्हें चिट्ठी लिख रहा हूँ। घर में अन्दर से ताला बन्द है। सामने एक टेबुलघड़ी चल रही है—वही टेबुलघड़ी जिसे तुम्हारी सुजाता दी मेरी मेज की दराज में चुपचाप रखकर अपनी उड़ान में चली गई थी। मैं कुछ भी नहीं जानता था सुजाता सिर्फ तुम्हें ही बता गई थी। मेज की दराज में घड़ी देखकर मैं तो अवाक् हो गया। यह कहाँ से आई? ऐसी घड़ी कौन रख गया?

तुमने कहा था जो इसे रख गई हैं मैं उन्हें पहचानता हूँ मगर नाम बताने की मुमानियत है। उन्होंने कहा है कि तुम्हारे भैया को एक एलार्म घड़ी की सख्त जरूरत है। समय पर जगने में उन्हें दिक्कत होती है। कभी-कभी तो हड़बड़ी से बहुत पहले ही जग जाते हैं।

तुम्हें मालूम है कि वह घड़ी कितने दिनों तक मुझे जगने में मदद देती रही। विदेश में भी वह अभी तक मेरे कमरे में बजती चली जा रही है। लेकिन अब मुझे जगाने की जरूरत नहीं होती। कुछ दिन से ना-

की देवी मुझसे रूठ गई हैं। मेरी उनींदी रातों की गवाह बने रहने के लिए ही मानो यह घड़ी तमाम रात मेरे साथ जागा करती है। फर्क इतना ही है कि यह अपने-आप में ही मशगूल रहती है आप अपने लिए ही बोलती रहती है।

मेरी हालत यही नहीं। मैं अपने कमरे में अकेले ही घबराता रहता हूँ छटपटाता रहता हूँ। लगता है किसी कठिन अपराध के कारण मुझे जेल के सूने सेल में बन्द कर दिया गया है। रात ही नहीं दिन को भी मन सेल में ही पड़ा रहता है। आह, जाने कब से बंगला में बात नहीं की है!

कई रोज से एक बात सोच रहा हूँ मैं। कलकत्ता में तुम्हारी क्या हालत है? तुम्हारे दिन कैसे कट रहे हैं? तुम पर कोई जबरदस्ती नहीं करता? कोई नई सूझ भी नहीं दे रहा हूँ। इतना ही याद रखो कि भारत वर्ष से बहुत दूर सात समुद्र पार एक अजाने महासागर के किनारे तुम्हारे एक भैया हैं। व तुम्हारे हितू हैं। अपनों से खाली इस संसार में एकमात्र तुम्हीं उसके अपने हो। तुम्हारा कभी भी मन हो जाए कभी भी तुम्हें जरूरत आ पड़े तुम तुरन्त मेरे पास चले आ सकते हो। मैं अपने एक छोटे भाई को पाऊंगा और होटल अफ्रीका एक ऐसा कर्मचारी पाएगा जो बहुतेरी शिकायतों के बावजूद होटल के जीवन को प्यार करता है।

भाई यहाँ आकर यहाँ काम करने में तुम्हें कोई असुविधा नहीं होगी। होटल अफ्रीका में एक नये मैनेजर की बहाली हो रही है। उनका नाम है सटा सी॰ बोस। मार्कोपोलो को एक अन्तर्राष्ट्रीय चेन होटल में नौकरी मिल गई है। तनख्वाह बहुत ज्यादा है। मुझे मालूम नहीं था कि इसके मैनेजर के लिए उन्होंने मेरे नाम की सिफारिश की है। कल पक्की खबर आ गई होटल के अधिकारी राजी हैं। मार्को ने खुद ही मुझे यह खबर दी। होटल अफ्रीका के भावी मैनेजर का आमंत्रण रहा—सोच देखना।

नौकरी-चौकरी को छोड़ो। अपने भैया को निगाहों के सामने रखना

चाहते हो तो चले आओ।

अब तुम्हारी बात पर आऊं। तुम्हारी चिट्ठी का एक हिस्सा पढ़कर बड़ा मज़ा आया। तुमने लिखा है बहुत-से पाठक पाठिकाएं जानना चाहते हैं कि दुनिया में वास्तव में क्या सत्यसुन्दर दास नाम के कोई सज्जन थे? या तुमने कहानी के लिए कल्पना से उन्हें खड़ा कर लिया?

ऐसी चिट्ठी से तुम्हें परेशानी हुई हो शायद। शायद मन ही-मन दुःखी भी हुए हो कि लहू-मांस के बने तुम्हारे सत्यसुन्दर-दा के अस्तित्व पर लोग अविश्वास कर रहे हैं। लेकिन मुझे तो भाई अच्छा ही लगा। तुमने पूछा है जो मेरा अफ्रीका का पता मांगते हैं उन्हें पता दोगे या नहीं। तुम्हें तो यह भली भांति मालूम है कि तुम्हारे सिवा और किसी को मैं अपना पता नहीं बताना चाहता। जब मैं जी-जान से देश की माटी की माया काटने की कोशिश कर रहा हूँ, तो चिट्ठी-पत्तर का नाता भी मुझे कमज़ोर बना सकता है।

सो जो कह रहा था तुम्हारे नाराज़ होने या दुःख करने की कोई वजह नहीं। मुझे खुद ही यह सन्देह होता है कि मैं कभी कलकत्ता में था भी या नहीं। वहीं के विलास बहुल शाहजहाँ होटल के रिसेप्शन काउंटर में काम करते करते एक भूखे होटल-जीवन से अनजान छोकरे शंकर को मैंने देखा था। उसके बाद और उससे पहले भी शहरी सभ्यता के एक घृणित नंगे रूप को रात और दिन तरह-तरह से देखता रहा। घृणित ही क्या कहूँ? अच्छा भी तो देखा है बहुत। कबर की नतकी कोनी के साथ-साथ लमब्रेटा की दुखी छोटी बहन कोनी को भी तो देखा, होस्टेस करबी गुहा के साथ एक उदास पुजारिन करबी को भी तो देखा। मुझे याद है तुमने एक बार अपने हाईकोर्ट के साहब, जिनकी कहानी तुमने कितने अनजान में लिखी है के बारे में एक बात बताई थी। उन्होंने तुमसे कहा था माई डियर बॉय इट टेक्स ऑल सॉर्ट ऑफ़ पिपुल टु मेक ए वर्ल्ड। 'बहुत प्रकार के लोगों से एक दुनिया बनती है। बात बहुत ठीक है। अपने शाहजहाँ होटल की ही बात लो न! भला

और बुरा सु और कु कैसे साथ-साथ रहता है ! नहीं तो एक ही शाहजहाँ होटल की छत के नीचे फोरला चटर्जी जिमि प्रभातचन्द्र गोमज और नटाहारी बाबू जैसे भिन्न प्रकृति के लोग कैसे पास-पास रहते हैं ?

आज रात लगता है मुझे नींद नहीं आएगी । तुम्हें खत लिखना छोड़कर जरा पायचारी की । इस अन्धकारमय देश के गहनतम अंधेरे में भी अपने लिए इत्ती-सी नींद की खोज मुझे न मिली । सोचता हूँ अब से पूरी-पूरी नाइट ड्यूटी ही रखूँगा । और जो भी हो इससे रात के खौफ से बच जाऊंगा । यह नींद भी कैसी आश्चर्यजनक चीज है ! जिन्होंने इन्सान को नींद का आशीर्वाद दिया था उन्हें प्रणाम है । मनुष्य की सारी सत्ता को कोई मानो नींद की पतली चादर से ढक देता है । अनोखा आशीर्वाद है यह—नींद भूख का भोजन है प्यासे का पानी है गरमी के लिए बर्फ और सर्दी का गरम पानी है । स्लिप द ग्रेट लेवेलर' कह सकते हो—इसके कृपा-कटाक्ष से बेवकूफ और चालाक एक हो जाते हैं, और तो और होटल का नौकर परबसिया और मैनेजर मार्को में भी कुछ देर के लिए कोई फर्क नहीं रह जाता ।

नींद के लिए अभी क्या कोशिश नहीं की और नाक बजाते हुए बेखबर सोने के नाते तुम्हारी सुजाता-दी ने कितना मजाक किया है । मैंने कहा था कहाँ की तो बात है पति की नाक बजती थी इसलिए पति को पत्नी ने तलाक दे दिया था । तुम्हारी सुजाता-दी ने कहा था पेड पर फल और मूँछ में तेल ! पहले शादी तो हो ले तब तो तलाक की बात । तुम्हें तो जाने कितनी बातें मालूम हैं । किस देश में तो बुरी रसोई के बहाने पति पत्नी को तलाक देते थे फ्रांस में कहाँ-कहाँ तो पति को उबली भुनी मछली सॉस के बिना परोसने से पत्नी पर तलाक का मामला चलाया जा सकता है, यह सारा तो तुम्हें कण्ठस्थ है । जी चाहे, ठीक मौकों पर इन नजीरों का उपयोग करना ।

मैं हँस पड़ा था । शादी का दिन तय करने का लोभ हो रहा था । मैंने सुजाता से कहा था मैंने कुछ कहा नहीं कि जज डाँटकर मामला

खारिज कर दगे। कहेंगे तुम्हें भी बनने की जगह नही मिली ढूंढे ? जो हवाई होस्टेस एक-से एक जबदस्त साहब को खिलाकर सेवा जतन करक खुश करती आई है, वह तुम्हारे जसे हरिदास पाल को सन्तुष्ट नही कर सकती। मामला तो खारिज ही होगा उलटे डिक्री का खच सिर पर। मरे पास तो पस नही हैं सो हाजत से बचाने के लिए फिर तुम्ह ही रुपए देने हागे।

यह सब ता कितने पहल की बात है। लकिन आज की रात सब याद आ रही है। और नही जानता क्या तम्हे सब लिखता चला जा रहा हूँ। तुम पास होते तो जबानी ही सुनाता—कुछ देर के लिए उन खोए हुए दिनो म लौट आया जाता। जसे महाभारत म कुरुक्षत्र की लडाई के बाद जीवितो और मरे हुओ म एक बार पुनर्मिलन हुआ था।

आज रात नींद नही ही आएगी। लकिन तुम्हे चिटठी लिखना अच्छा लग रहा है। लगता है तम मानो मरे सामने ही बठ हो। मैं अपनी धुन मे बोलता चला आ रहा हूँ और तम जसा कि तुम्हारा स्वभाव है, कुछ पूछे बिना चुपचाप अपने सत्यसुदर-दा की बात सुनत जा रहे हो।

तुम्हारी किताब पढते-पढते कितनी ही बातें याद आ रही थी। सोच रहा था और क्या लिखा जा सकता था पाठको को और क्या-क्या बताया जा सकता था। एक बार कलकत्ता के किसी अखबार के सवाददाता ने मुझसे एक मज का प्रश्न पूछा था। उन्होंने पूछा था बता सकते हैं लोग किस किस कारण से होटल म आते हैं ?

मैंने कहा था ज्यादातर लोग तो होटल में ठहरनेवाल वही हाते हैं जो दफ्तर या व्यापार के काम स परदेश आते हैं इसके बाद सख्या हाती है पयटको की। चूकि फ़ौरेन एक्सचेंज मिलता है इसलिए भारत वष म जिन्हें हम दामाद की खातिरदारी स रखते हैं जिनके सवन परसेंट महर पाइड जिनके आगत-स्वागत की खबरगीरी में इस इस बड़े अफसर हलका हैरान होते हैं। सरकारी भाषा म इनका हर खच

हमारा अदेखा निर्यात है—इनविजिबुल एक्सपोर्ट। यह कहानी तो जरूर जानते होगे जो हम लोग शाहजहां में अक्सर कहा करते थे। लालू नाम का एक पॉकेटमार हमारे होटल के सामने एक अमरीकी साहब का पॉकेट मारते हुआ पकड़ा गया। पुलिस ने उसे चालान कर दिया। किन्तु लालू का वकील धुरन्धर था। उसने कहा 'धर्मावतार सब सही है। लेकिन आप यह न भूलें कि मेरा क्लाइंट देश के लिए विदेशी मुद्रा कमाने की कोशिश कर रहा था। पब्लिक प्रासीक्यूटर की तो अक्ल गुम हो गई। लालू मियाँ को सम्मान के साथ रिहा कर दिया गया।

पर्यटकों के बाद नम्बर आता है डेलिगेटों का। ये सब आते हैं कांफ्रेंस सांस्कृतिक आदान प्रदान शुभकामना की अदला बदली के लिए। इनके मनोयोग की तन्दुरुस्ती बड़ी डेलिकेट होती है। लेकिन आते हैं ये जमात में इसलिए होटल का पड़ता पड़ जाता है। यहाँ तक कि एक बिस्तर वाले कमरे में दो-दो तीन-तीन को भी ठूंस देने से ये खास नाराज नहीं होते।

बहुत-से लोग सेहत के लिए भी होटल में आते हैं। हमारे साधारण परिवार के लोग होटल माने पुरी या वाराणसी के होटल की कल्पना कर लेते हैं। बड़े शहरों के बड़े-बड़े होटलों में स्वास्थ्य सुधारने वाले बिल्कुल नहीं आते। और ऐसे भी आते हैं उनमें से फिल्मी दुनिया की मशहूर सितारा कमलादेवी के अचानक होटल में आ पहुँचने का हाल तो तुमने 'चौरंगी' में लिखा है। या छिपकर प्रेम-मिलन के लिए घर छोड़कर जो स्त्री या पुरुष रात को आते हैं उनका भी जिक्र तुमने किया है।

लेकिन तुम्हें साधुचरण पाल के बारे में लिखना चाहिए था। लेकिन नहीं मैं गलती कर रहा हूँ शायद ये सज्जन जब स्त्रीसहित हमारे होटल में पधारे थे तुम वहाँ की नौकरी में आए नहीं थे।

साधुचरण के होटल में आने की बात सोचकर मुझे आज भी हँसी आती है। साधुचरण का हुलिया बता दूँ। गुपचुप गोलगप्पा-जैसी एक बात हमारे यहाँ कही जाती है। इसके उच्चारण मात्र से जो एक तसवीर